ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

उड़ान

प्रिलिम्स वाला (स्टैटिक)

प्रिलिम्स 2025

मध्यकालीन भारत

क्विक एवं कॉम्प्रिहेन्सिव रिवीजन सीरीज

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC FOUNDATION COURSES

- Live/Recorded G.S. Classes
- CSAT Classes
- Daily MCQs + Mains Question
- Regular Doubt Sessions

SANKALP 2026	PRAHAR 2025	TITAN 2026 / 2025
Hinglish / हिन्दी	Hinglish / हिन्दी	English

Starts From
₹ 9,499/-

COUPON CODE
PWOIAS500
FOR EXTRA DISCOUNT

UPSC OPTIONAL COURSE 2025

Hinglish / हिन्दी

- Anthropology
- PSIR
- History
- Sociology
- Geography
- Public Administration
- Mathematics
- हिन्दी साहित्य

At Just
₹ 8,999/-

COUPON CODE
PWOIAS500
FOR EXTRA DISCOUNT

9920613613 | pw.live

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

उड़ान

प्रिलिम्स वाला (स्टैटिक)

प्रिलिम्स-2025

मध्यकालीन इतिहास

Search On TG: @apna_pdf

These ebooks are free of cost, Join our telegram channel: @apna_pdf

क्विक एवं कॉम्प्रिहेन्सिव रिवीजन सीरीज

भूमिका

प्रिय अभ्यर्थियों,

यह सर्वज्ञात है कि UPSC सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी में प्रिलिम्स परीक्षा एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। यद्यपि अंतिम चयन में प्रिलिम्स के अंक नहीं जुड़ते परंतु प्रिलिम्स का दरवाजा पार किए बगैर आप मुख्य परीक्षा तक पहुँच भी नहीं सकते। ऐसा कहा जा सकता है कि सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में अर्ह होने के लिए स्नातक की शैक्षिक योग्यता के साथ-साथ प्रिलिम्स परीक्षा का पास करना भी आवश्यक है।

कहने के लिए तो यह परीक्षा आपकी आधारभूत समझ की परख करती है परंतु यह आधारभूत समझ बहुस्तरीय होती है। इसमें पूछे जाने वाले प्रश्नों का स्वरूप, उसकी गहनता तथा नियत समय सीमा में उसे हल करने की बाध्यता इसे और जटिल बनाती है। इस परीक्षा का कोई एक प्रतिरूप तय नहीं किया जा सकता है। अमूमन हर वर्ष आयोग अपने नवाचारी प्रयोगों से इसके स्वरूप को अद्यतित करता रहता है। फिर भी पिछले वर्षों के प्रश्न-पत्रों का आकलन करने से विषय संबंधी एक सामान्य निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है। यह पुस्तक उन्हीं सामान्य निष्कर्षों का निचोड़ है।

पिछले 10-15 वर्षों के प्रिलिम्स परीक्षा के प्रश्नों का आकलन करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सिविल सेवा के पाठ्यक्रम के कुछ टॉपिक्स ऐसे हैं जहाँ से प्रश्नों के पूछे जाने की बारंबारता अधिक है जबकि कुछ टॉपिक्स से बहुत कम या नहीं के बराबर प्रश्न पूछे जाते रहे हैं। इसके अलावा आयोग कई बार सीधे पाठ्यक्रम के टॉपिक से प्रश्न न पूछकर उसके पीछे की गहरी अवधारणाओं से संबंधित प्रश्न भी पूछता है। ऐसे टॉपिक्स, जो अक्सर न्यूज में रहे हैं उनसे जुड़े स्टैटिक हिस्सों को आधार बनाकर भी प्रश्न पूछता है। ऐसे में आवश्यक होता है कि प्रिलिम्स से पहले हर विषय से संबंधित ऐसे टॉपिक्स की बुनियादी समझ तैयार की जा सके जिनसे प्रिलिम्स के प्रश्नों को हल करना आसान हो सके। इसके अतिरिक्त प्रिलिम्स परीक्षा से पहले सभी विषयों के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स का एक साथ रिवीजन भी आसान नहीं होता। 2 घंटे की परीक्षा में सामान्य अध्ययन तथा करेंट अफेयर्स से संबंधित सभी टॉपिक्स को एक साथ स्मृति में रखना जटिल तो है ही।

इन सभी जटिलताओं को देखते हुए हमने 'उड़ान-प्रिलिम्स वाला स्टैटिक' के नाम से एक सीरीज तैयार की है। इस सीरीज में प्रिलिम्स से संबंधित स्टैटिक विषयों पर अलग-अलग बुकलेट्स प्रकाशित की जा रही है। यह सीरीज प्रिलिम्स के पाठ्यक्रम तथा पिछले वर्षों में पूछे गए प्रश्नों के गहन विश्लेषण के आधार पर तैयार की गई है। यह पूरी सीरीज योग्य तथा अनुभवी विशेषज्ञों की टीम द्वारा किए गए गहन शोध का निचोड़ है। इससे जुड़े सभी सदस्यों को कई प्रिलिम्स तथा मुख्य परीक्षा पास करने का अनुभव है तथा उन्होंने इस परीक्षा को निजी तौर पर गहराई से समझा है। यह पुस्तक बहुत बोझिल न हो और इसमें सभी महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स का समावेश भी हो सके, यह भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। इसमें शामिल एक एक टॉपिक का चयन उसकी महत्ता पर गहन चर्चाओं के बाद किया गया है। अब आपको पुस्तक सौंपते हुए हम आशा कर रहे हैं कि यह पुस्तक आपकी तैयारी को आसान करेगी।

उम्मीद है हमारी यह पहल आपकी प्रिलिम्स परीक्षा की तैयारी में सहयोगी साबित होगी। आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

शुभकामनाएँ

पुस्तक की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ

- प्रिलिम्स परीक्षा के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स का समावेश
- टॉपिक्स का बिंदुवार प्रस्तुतीकरण
- उपयोगी चित्र, ग्राफ, टेबल तथा माइंड मैप द्वारा विषयों की सरल स्वरूप में प्रस्तुति
- पिछले वर्षों में पूछे गए प्रश्नों पर आधारित टॉपिक्स का समावेश
- अत्यंत जरूरी की-वर्ड्स को विशेष रूप से दर्शाना

Search On TG: @apna_pdf

विषय सूची

1. प्रारंभिक मध्यकाल 1

- पाल साम्राज्य (750-1161 ई.)......1
- गुर्जर प्रतिहार (अिगनकुल राजपूत) (8वीं-11वीं शताब्दी ई.)......2
- राष्ट्रकूट (753-975 ई.)......3
- जेजाकभुक्ति के चंदेल (बुंदेलखंड) (9वीं-13वीं शताब्दी)......4
- मालवा के परमार (9वीं-14वीं शताब्दी ई.)......4
- दिल्लिका (दिल्ली) के तोमर (8वीं-12वीं शताब्दी)......4
- शाकंभरी के चाहमान या चौहान (छठी-बारहवीं शताब्दी ई.)......5
- गहड़वाल (11वीं-12वीं शताब्दी ई.)......5
- त्रिपुरी के कलचुरी (10वीं-12वीं शताब्दी)......5
- गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) (950-1300 ई.)......6
- कश्मीर......6
- असम के राजवंश......6
- वर्मन और सेन (पूर्वी बंगाल)......6
- कलिंग, उड़ीसा......6
- कल्याणी के चालुक्य (10वीं-12वीं शताब्दी ई.)......7
- देवगिरि के यादव......7
- काकतीय राजवंश (950-1323 ई.)......7
- चोल साम्राज्य (9वीं-13वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध)......7
- होयसल (10वीं-14वीं शताब्दी)......10
- उत्तरकालीन पांड्य......10
- भारत में घुरीद (Ghurids in India)......13

2. दिल्ली सल्तनत 14

- गुलाम या मामलुक वंश (1206-1290ई.)......14
- खिलजी वंश (1290 ई. से 1320 ई.)......16
- तुगलक वंश (1320 ई. से 1413 ई.)......17
- सैय्यद वंश (1414 ई.-1451 ई.)......19
- लोदी वंश (1451-1526 ई.)......19
- दिल्ली सल्तनत का जन-जीवन......19

3. बहमनी और विजयनगर साम्राज्य 22

- विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन......26
- नायक प्रणाली......26
- समाज......27
- अर्थव्यवस्था......27
- हम्पी/विजयनगर की स्थापत्यकला......28
- घटनाक्रम......28

4. मुगल साम्राज्य 29

- बाबर (1526-1530 ई.)......29
- हुमायूँ (1530-1540 ई. और 1555-1556 ई.)......30
- शेरशाह सूरी (सूर साम्राज्य) (1540-1555 ई.)......30
- अकबर (1556-1605 ई.)......31
- जहाँगीर (1605-1627 ई.)......34
- शाहजहाँ (1628-1658 ई.)......35
- औरंगजेब (1658 - 1707 ई.)......36
- बहादुर शाह प्रथम (1707-1712 ई.)......37
- जहाँदार शाह (1712-1713 ई.)......37
- फर्रुखसियर (1713-1719 ई.)......37
- मुहम्मद शाह (रंगीला) (1719-1748 ई.)......38
- आलमगीर द्वितीय-(1754-1759 ई.)......38
- शाह आलम द्वितीय (1759-1806 ई.)......38
- अकबर द्वितीय (1806-1837 ई.)......38
- बहादुर शाह द्वितीय-(1837-1857 ई.)......38
- मुगलों के पतन के कारण......38

मराठा साम्राज्य 40

- शिवाजी (1627-1680 ई.)......40
- मराठा प्रशासन......42
- पेशवाओं का शासन (1713-1818 ई.)......43

Search On TG: @apna_pdf

- बालाजी बाजी राव (1740-1761 ई.) 43
- पानीपत का तृतीय युद्ध (1761 ई.) 43
- आंग्ल-मराठा युद्ध...44
- आंग्ल-मराठा युद्ध...44
- पेशवाओं के अधीन मराठा प्रशासन (1714-1818 ई.) 45

भक्ति और सूफी परंपराएँ 48

- वीरशैव/लिंगायत परंपरा..49
- तंत्रवाद 50
- भक्ति आंदोलन..50
- चिश्तिया सिलसिला 53
- कादरिया सिलसिला..54
- सुहरावर्दी सिलसिला 54
- नक्शबंदी सिलसिला..55

विदेशी यात्रियों की नजर से 56

- अल-बरूनी (किताब-उल-हिंद)..56
- इब्न बतूता (रिहला) 56
- फ्रांस्वा बर्नियर (मुगल साम्राज्य में यात्राएँ)......................................57
- मध्यकालीन इतिहास में राजवंशों का कालक्रम 59

8. परिशिष्ट 59

- मध्यकालीन इतिहास राजवंशों का कालक्रम.................................59

Search On TG: @apna_pdf

These ebooks are free of cost, Join our telegram channel: @apna_pdf

1 प्रारंभिक मध्यकाल

परिचय

- "प्रारंभिक मध्यकाल" वाक्यांश का तात्पर्य प्राचीन काल और मध्यकाल के बीच की **संक्रमणकालीन अवधि से है।** इस काल की मुख्य विशेषता यह थी कि इसमें स्थानीय स्तर पर **अनेक राज्यों का उदय** हुआ।
- **हर्ष की मृत्यु (647 ई.)** के बाद, **कश्मीर के ललितादित्य (कार्कोट वंश) ने** कुछ समय के लिए पंजाब, **कन्नौज** और बंगाल के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण किया, लेकिन अन्य साम्राज्यों के उदय के कारण उनकी शक्ति कम हो गई।
    - **कल्हण की राजतरंगिणी में** उल्लेख है कि **यशोवर्मन** (8वीं शताब्दी, कन्नौज का **वर्मन वंश**) को ललितादित्य ने पराजित किया था।

अनंतनाग (कश्मीर) में **मार्तंड सूर्य मंदिर** का निर्माण ललितादित्य (8वीं शताब्दी ईस्वी) ने करावया था।

- **उत्तर भारत, दक्कन** और **दक्षिण भारत में कई बड़े राज्यों का उदय हुआ।** हालाँकि, गुप्त और हर्ष के साम्राज्यों के विपरीत, ये उत्तर भारतीय साम्राज्य संपूर्ण गंगा घाटी पर नियंत्रण स्थापित करने में विफल रहे।
    - **चक्रवर्ती सम्राट** का दर्जा प्राप्त करने और **कन्नौज पर नियंत्रण** के लिए **प्रतिहारों, पालों और राष्ट्रकूटों** के बीच **'त्रिपक्षीय संघर्ष'** हुआ।

- **पाल साम्राज्य:** 9वीं शताब्दी तक **पूर्वी भारत (बंगाल)** पर प्रभुत्व था।
- **प्रतिहार साम्राज्य:** 10वीं शताब्दी तक **पश्चिमी भारत (जालौर-राजस्थान)** और ऊपरी गंगा घाटी पर शासन किया।
- **राष्ट्रकूट साम्राज्य: दक्कन** तथा **उत्तर और दक्षिण भारत** के कुछ हिस्सों पर शासन था, जो दोनों क्षेत्रों के बीच एक पुल के रूप में कार्य करता था।

पाल साम्राज्य (750-1161 ई.)

पाल साम्राज्य की स्थापना **गोपाल (750-770 ई.)** ने की थी और अरबों द्वारा इसे **"धर्म का साम्राज्य"** कहा जाता था। उसने **ओदंतपुरी (बिहार)** में एक बौद्ध महाविहार की स्थापना की।

धर्मपाल (780-810 ई.)

उसने **परमेश्वर, परमभट्टारक और महाराजाधिराज** की उपाधियाँ धारण कीं।

साम्राज्य विस्तार/विजय

- **खलीमपुर ताम्रपत्र शिलालेख** में उसके राज्य की सीमा का उल्लेख है जिसमें बंगाल, बिहार, उड़ीसा के कुछ हिस्से, नेपाल, असम और कुछ समय के लिए कन्नौज शामिल था।
- **धर्मपाल** ने उत्तर भारत पर अपना प्रभाव जमाने और अपनी शक्ति को मजबूत करने के लिए **कन्नौज में एक भव्य दरबार का आयोजन किया।**

स्थापत्यकला:

- **भागलपुर (बिहार)** में **विक्रमशिला मठ (जो विश्वविद्यालय के रूप में भी काम करता था) की** स्थापना की।
- **सोमपुरा (बांग्लादेश)** में एक भव्य विहार का निर्माण करवाया।
- **धार्मिक प्रभाव**: उसने **बौद्ध दार्शनिक हरिभद्र** को संरक्षण दिया।

देवपाल (810-850 ई.)

- **साम्राज्य विस्तार/विजय**: वह **धर्मपाल** का पुत्र था, उसने **पूर्व की ओर कामरूप (असम)** तक पाल साम्राज्य का विस्तार किया। उसने राष्ट्रकूट शासक **अमोघवर्ष** को पराजित किया।
- **धार्मिक प्रभाव**: वह बौद्ध धर्म का भी महान **संरक्षक था** और उसने **सुवर्णदीप (सुमात्रा) के शैलेन्द्र वंश** के राजा **बालपुत्रदेव को** नालंदा में अपने द्वारा निर्मित एक मठ की देखरेख के लिए पाँच गाँव दिए थे।

अन्य शासक

- **महिपाल प्रथम (988-1038 ई.)** विग्रहपाल द्वितीय का पुत्र था जिसने **राजेंद्र चोल** के आक्रमण को गंगा नदी के पार रोका था।
- **रामपाल (1077-1120 ई.)** ने पाल वंश के खोए हुए गौरव को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया, लेकिन उसकी मृत्यु के बाद, पाल वंश का शासन केवल मगध (बिहार) के एक हिस्से तक ही सीमित रह गया और केवल थोड़े समय के लिए ही अस्तित्व में रहा।

पाल वंश का पतन

- **राजपाल, गोपाल तृतीय** और **विग्रहपाल द्वितीय** के शासनकाल के दौरान पाल वंश का तेजी से पतन होने लगा था।
- **मिहिर भोज** के अधीन जालौर में **प्रतिहारों** के उदय और **राष्ट्रकूटों के** पाल क्षेत्रों में आगे बढ़ने से पालों का पतन अपरिहार्य हो गया।
- सेन वंश के **विजयसेन ने पाल वंश के अंतिम शासक मदनपाल** (1130-1150 ई.) को बंगाल से निष्कासित कर दिया और अपने वंश का शासन स्थापित किया।

व्यापार:

- **दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापार संबंध**: कपड़ा, मिट्टी के बर्तन, चावल प्रमुख वस्तुएँ थीं।
- **दक्षिण-पूर्व बंगाल** 7वीं से 11वीं शताब्दी तक अरब व्यापारिक बस्तियों को मलाया प्रायद्वीप और इंडोनेशियाई द्वीपसमूह से जोड़ने वाला एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था।

Search On TG: @apna_pdf

कला और स्थापत्यकला:

- **धीमान** और उसके पुत्र **विटपाल** इस काल के महान चित्रकार, मूर्तिकार और कांस्य मूर्ति निर्माता थे।
- पाल मूर्तिकला पर **गुप्त कला का प्रभाव था।**
- पालों द्वारा ताड़ के पत्तों पर लघु चित्रकला की शुरुआत की गई। पाल काल में कांस्य की मूर्तियाँ लॉस्ट वैक्स तकनीक (सेरे पेरड्यू) के माध्यम से बनाई गई थी।
- **महिपाल प्रथम ने सारनाथ, नालंदा** और **बोधगया** में कई पवित्र स्थलों का निर्माण और मरम्मत करवाई।
- पाल युग में कई तालाबों और नहरों का निर्माण भी देखा गया, जो लोक निर्माण संबंधी महत्त्वपूर्ण पहलों को दर्शाता है।

साहित्य:

- **ग्रंथ और दर्शन: गौड़पाद (अद्वैत वेदांत संप्रदाय के विद्वान)** द्वारा संकलित **आगम शास्त्र; श्रीधर भट्ट** कृत **न्याय कुंडली।**
- **विक्रमशिला** और **नालंदा** विश्वविद्यालयों के **बौद्ध विद्वान आतिशा, सरहा, तिलोपा, दानशील, दानश्री, जिनमित्र, मुक्तिमित्र, पद्मनाव, विराचन और शीलभद्र थे।**
- **संध्याकर नंदी द्वारा रचित रामचरितम, पाल शासक रामपाल** की जीवनी है, जिसमें वर्णन किया गया है कि कैसे वन प्रमुखों को भव्य उपहारों के माध्यम से अपने गठबंधन में शामिल किया गया।
- उन्होंने संस्कृत विद्वानों को संरक्षण दिया। संस्कृत साहित्य में **गौड़ी-रीति की साहित्यिक शैली का विकास हुआ।**
- **चक्रपाणि दत्त, सुरेश्वर गदाधर वैद्य** पाल काल के दौरान **चिकित्सा** से संबंधित ग्रंथों के लेखक थे।
- **महिपालगीत (महिपाल पर गीत):** यह लोक गीतों का एक समूह है जो अभी भी बंगाल के ग्रामीण इलाकों में लोकप्रिय हैं।
- हिंदू विधि की प्रसिद्ध पुस्तक **"दायभाग" है। जो उत्तराधिकार प्रक्रिया पर आधारित है, इसकी** रचना **जिमूतवाहन** ने की।

धर्म:

- वे कट्टर बौद्ध थे और उन्होंने **महायान बौद्ध धर्म का प्रचार किया। दीपांकर श्रीज्ञान** जैसे प्रख्यात बौद्ध विद्वान, पाल के शासनकाल में फले-फूले और **विक्रमशिला विश्वविद्यालय, तिब्बती भिक्षुओं** का एक प्रमुख केंद्र बन गया।
- उन्होंने ब्राह्मणों का भी समर्थन किया और मंदिरों का निर्माण कराया।

पाल शासकों ने शिक्षा और धर्म को संरक्षण प्रदान किया, इसकी पुष्टि विदेशी राजाओं से प्राप्त विभिन्न साहित्यिक स्रोतों व यात्रा विरणों से से होती है, जिसमें **जावा और सुमात्रा के राजा भी शामिल** थे, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय छात्रों को सुविधा प्रदान करने के लिए नालंदा में एक छात्रावास की स्थापना के लिए अनुरोध किया था।

गुर्जर प्रतिहार (अग्निकुल राजपूत) (8वीं-11वीं शताब्दी ई.)

परिचय

गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना **हरिचन्द्र** ने की थी, जिसे **अरब लोग अल-जुर्ज** कहते थे।

साम्राज्य विस्तार/विजय:

- **9वीं शताब्दी** तक **मध्यदेश** और **कन्नौज** के एक बड़े हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया।
- प्रारंभ में उन्होंने **भीलमल** से शासन किया और बाद में **अपनी राजधानी कन्नौज स्थानांतरित कर ली।**
- प्रतिहार, **अरब सेनाओं के विरोध और पालों** तथा **राष्ट्रकूटों** के साथ अपने रणनीतिक संघर्षों के लिए जाने जाते थे।

महत्त्वपूर्ण शासक

शासक और शासनकाल	प्रमुख उपलब्धियाँ और घटनाएँ
नागभट्ट प्रथम (730-760 ई.)	राजस्थान, मालवा और गुजरात को शामिल करने के लिए क्षेत्रों का विस्तार किया। अरब आक्रमणों को सफलतापूर्वक दमन किया, जिससे राजवंश की प्रमुखता स्थापित हुई।
वत्सराज (780-800 ई.)	साम्राज्य का और विस्तार किया। इसमें राजस्थान, मालवा और गुजरात के क्षेत्रों को अपने राज्य में शामिल किया।
नागभट्ट द्वितीय (800-833 ई.)	काठियावाड़, आंध्र, कलिंग और विदर्भ के शासकों द्वारा स्वीकार किए गए आधिपत्य और असफल होने के बाद राजवंश को पुनर्जीवित किया। बंगाल के धर्मपाल और राष्ट्रकूट शासक गोविंदा तृतीय के साथ संघर्ष।
मिहिरभोज (836-885 ई.)	पंजाब और काठियावाड़ से लेकर कौशल और कन्नौज तक एक विशाल साम्राज्य को मजबूत किया। भोज प्रथम ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया, जिसे महोदया के नाम से भी जाना जाता है। बराह ताम्रपत्र शिलालेख में महोदया में एक सैन्य शिविर (स्कंधवार) का उल्लेख मिलता है, जो कन्नौज के सामरिक महत्त्व को दर्शाता है।
महेंद्रपाल प्रथम (885–910 ई.)	विष्णु के उपासक के रूप में 'आदि वराह' की उपाधि धारण की। मगध और उत्तरी बंगाल के कुछ हिस्सों में साम्राज्य का विस्तार किया। अपने पूर्ववर्तियों द्वारा स्थापित सांस्कृतिक और प्रशासनिक ढाँचे को मजबूत किया।
महिपाल प्रथम (913-944 ई.)	उन्होंने साम्राज्य का पुनर्निर्माण एवं पुनर्गठन किया। राजशेखर उनके दरबारी कवि थे।

Search On TG: @apna_pdf

- **राजशेखर,** एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि, नाटककार और आलोचक था जिसे महेंद्रपाल प्रथम (885-910 ई.) और महिपाल प्रथम (913-944 ई.) का संरक्षण प्राप्त था।
- **राजशेखर द्वारा रचित महत्त्वपूर्ण कृतियाँ:**
  - **कर्पूरमंजरी:** उनकी पत्नी अवंतीसुंदरी को समर्पित एक प्राकृत नाटक।
  - **काव्य मीमांसा:** एक संस्कृत ग्रंथ (880-920 ई.पू.) जो कवियों को काव्य रचना पर व्यावहारिक सलाह प्रदान करता है।
  - **अन्य रचनाएँ:** विधासलभंजिका, भृंजिका, बालरामायण, प्रपंच पांडव, बालभारत, भूषण कोष।

पतन: बाद के कमज़ोर शासक द्वारा राष्ट्रकूटों के हमलों का सामना करते हुए विशाल साम्राज्य को कायम नहीं रख सके। पतन ने चालुक्य, चंदेल, चाहमान, गढ़वाल, परमार, कलचुरी और तोमर जैसे कई नए राज्यों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया, जो अपने-अपने क्षेत्रों में अलग-अलग राजपूत वंशों के रूप में स्वतंत्र हो गए।

राष्ट्रकूट (753-975 ई.)

पृष्ठभूमि

- उन्होंने स्वयं को **अशोक के शिलालेखों** में वर्णित कन्नड़ भाषी क्षेत्र के एक कबीले **रथिक** का वंशज बताया।
- राष्ट्रकूट, जिन्हें **अरब लोग बल्लाहारा कहते थे, 743 ई. के आस-पास दक्कन** में एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरे, जो अपनी राजधानी **मान्यखेत, वर्तमान मालखेड** से शासन कर रहे थे।
- उन्हें **संस्कृत** और **अरबी दोनों अभिलेखों में** लगभग दो शताब्दियों तक भारत में एक प्रमुख शक्ति के रूप में **स्वीकार किया गया** है, अरब यात्रियों ने राष्ट्रकूट शासक को **अल-हिंद के "राजाओं के राजा (मलिक अल-मुलुक)" के रूप में वर्णित किया है।**
- अरब वृत्तांतों, विशेष रूप से **अल-मसूदी** के वृत्तांतों में राष्ट्रकूट **साम्राज्य की भव्यता का** सुंदर वर्णन किया गया है। साम्राज्य की अपार संपत्ति का श्रेय समुद्री व्यापार से होने वाले लाभ को दिया जाता है।

महत्त्वपूर्ण शासक

शासन और समयावधि	प्रमुख योगदान
दंतिवर्मन/दन्तिदुर्ग (735-756 ई.)	राष्ट्रकूट वंश के संस्थापक। मालवा में गुर्जर-प्रतिहारों सहित क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। क्षत्रियत्व का दावा प्रस्तुत करने के लिए हिरण्यगर्भ अनुष्ठान किया।
कृष्ण प्रथम (756-774 ई.)	हैदराबाद और मैसूर को शामिल करते हुए साम्राज्य का विस्तार किया। एलोरा में कैलाश मंदिर का निर्माण किया, जो एक महत्त्वपूर्ण वास्तुशिल्प उपलब्धि थी।
ध्रुव धारावर्ष (779-793 ई.)	उत्तरी अभियानों का नेतृत्व किया, वत्सराज (प्रतिहार राजा) और धर्मपाल (पाल राजा) को पराजित किया। गंगा और यमुना को राष्ट्रकूटों के प्रतीक के रूप में शामिल किया।
गोविंदा तृतीय (793–814 ई.)	नागभट्ट द्वितीय (प्रतिहार शासक) को युद्ध में पराजित किया। हिमालय तक अभियान किये और प्रयाग, बनारस और गया का दौरा किया।
अमोघवर्ष प्रथम (814-878 ई.)	जैन धर्म के प्रमुख अनुयायी; धार्मिक और साहित्यिक परंपराओं को संरक्षण प्रदान किया। कविराजमार्ग, जो आरंभिक कन्नड़ ग्रंथों में से एक है, और रणमालिका की रचना की। अमोघवर्ष प्रथम की पुत्री चंद्रबल्लबे ने कुछ समय तक रायचूर दोआब पर शासन किया। नृपतुंगा और वीर-नारायण जैसी उपाधियाँ धारण की। तुंगभद्रा नदी में जल-समाधि द्वारा अपना जीवन समाप्त किया। कमज़ोर सैन्य रणनीतियों के कारण अमोघवर्ष प्रथम के शासन में राष्ट्रकूटों का पतन आरंभ हो गया।
इन्द्र तृतीय (914-929 ई.)	प्रतिहार शासक महिपाल के विरुद्ध उत्तरी क्षेत्र में सफल अभियान संचालित किया।
कृष्ण तृतीय (939-967 ई.)	चोलों पर विजय प्राप्त करते हुए कांची और तंजौर पर अधिकार स्थापित किया। रामेश्वरम में विजय स्तंभ का निर्माण करवाया।

अमोघवर्ष प्रथम (814-880 ई.)

- अमोघवर्ष प्रथम समकालीन भारत की धार्मिक परंपराओं में रुचि रखता था और अपना समय जैन भिक्षुओं की संगति में बिताता था। उसके शिलालेख जैन धर्म के सबसे प्रमुख अनुयायियों में उसकी गिनती करते हैं।
- उसने **कन्नड़** साहित्य के सबसे प्राचीन ग्रंथों में से एक **कविराजमार्ग की रचना की**।
- उसने नृपतुंग, अतिशयधवल, महाराजा-शंद और वीर-नारायण की उपाधियाँ धारण कीं।
- उसने तुंगभद्रा नदी में **जल-समाधि** लेकर अपना जीवन समाप्त कर लिया।
- कमजोर सैन्य कौशल के कारण उसके शासनकाल में राष्ट्रकूटों का पतन शुरू हो गया। उसके उत्तराधिकारी कृष्ण द्वितीय के शासनकाल में साम्राज्य और अधिक कमजोर हो गया।
- **इंद्र तृतीय** ने उत्तर की ओर **प्रतिहार शासक महीपाल** के विरुद्ध एक सफल अभियान चलाया।
- **कृष्ण तृतीय** ने कांची और तंजौर जैसे क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया, यहाँ तक कि चोलों पर विजय प्राप्त की और **रामेश्वरम में एक विजय स्तंभ स्थापित किया।**

Search on TG: @apna_pdf

धर्म

- राष्ट्रकूट विभिन्न धर्मों के संरक्षक थे, जिनमें **शैव, वैष्णव, शाक्त संप्रदाय और जैन धर्म शामिल थे।**
- मुहरों पर विष्णु के गरुड़वाहन के चित्र थे।
- राष्ट्रकूटों द्वारा तुलादान द्वारा मंदिर के देवताओं को अपने वजन के बराबर सोना भेंट करने का भी उल्लेख मिलता है।
- उन्होंने **मुस्लिम व्यापारियों को** अपने राज्यक्षेत्र में इस्लाम का पालन करने और प्रचार करने की अनुमति दी, जिससे **विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई।**

साहित्य

- **अमोघवर्ष प्रथम ने संस्कृत कृति 'प्रश्नोत्तर रत्नमालिका'** और **कन्नड़** कृति **कविराजमार्ग की रचना की।**
- **जिनसेन ने** जैनियों का **आदिपुराण** लिखा।
- कृष्ण द्वितीय के आध्यात्मिक गुरु **गुणभद्र ने जैनियों का महापुराण** लिखा।
- **प्राचीन कन्नड़ साहित्य के तीन रत्नों** - कविचक्रवर्ती **पोन्ना, कविचक्रवर्ती रन्ना** और **आदिकवि पम्पा** - को **राष्ट्रकूट** राजा **कृष्ण तृतीय** के साथ-साथ **पश्चिमी चालुक्यों के तैलप और सत्याश्रय द्वारा संरक्षण दिया गया था।**
- प्रख्यात अपभ्रंश कवि **स्वयंभू** और उनका पुत्र संभवतः राष्ट्रकूट दरबार में रहते थे।

उत्तर के राजवंश

जेजाकभुक्ति के चंदेल (बुंदेलखंड) (9वीं-13वीं शताब्दी)

चंदेलों ने प्रारंभ में **गुर्जर प्रतिहारों के सामंतों** के रूप में कार्य किया और स्वयं को **ऋषि चंद्रात्रेय** का वंशज बताया। चंदेल वंश की स्थापना **नन्नुक (831-845 ई.)** ने की थी। **[यूपीएससी 2022]**

चंदेलों की स्थापत्य विरासत खजुराहो के भव्य मंदिरों में दिखाई देती है।

चंदेलों की स्थापत्य विरासत

- चंदेलों की स्थापत्य विरासत को खजुराहो के भव्य मंदिरों में देखा जा सकता है।
- उल्लेखनीय उदाहरणों में लक्ष्मण मंदिर (लगभग 930-950 ई.), विश्वनाथ मंदिर (लगभग 999-1002 ई.) और कंदारिया महादेव मंदिर (लगभग 1030 ई.) शामिल हैं, जिन्हें क्रमशः चंदेल शासकों यशोवर्मन, धंग और विद्याधर के शासनकाल के शासनकाल में बनाया गया था।

प्रसिद्ध शासक

- पहले स्वायत्त चंदेल शासक **यशोवर्मन (925-950 ई.)** ने उत्तर भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसके पुत्र **धंग/धंगदेव (950-999 ई.) ने** प्रतिहार प्रदेशों पर कब्जा कर लिया और **सुबुक्तिगिन** के खिलाफ **शाही शासक जयपाल का समर्थन किया,** जबकि **धंग के पुत्र गंड/गंडदेव (999-1002 ई.) ने महमूद गजनवी** के खिलाफ जयपाल के पुत्र **आनंदपाल की सहायता की।**
- **विद्याधर (1003-1035 ई.)** (गंड का पुत्र) एक शक्तिशाली **चंदेल राजा था।** उसने **प्रतिहारों को अपने अधीन कर लिया।**
- उत्तरवर्ती चंदेल शासक **परमर्दिदेव (1165-1203 ई.) को पृथ्वी राज तृतीय** और **कुतुबुद्दीन ऐबक से पराजय का सामना करना पड़ा,** लेकिन उसके वंशज ने **1205 ई. तक कालिंजर पर पुनः कब्जा कर लिया** क्योंकि तुर्क उस पर कब्जा बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे। कालिंजर किला 1545 **ई.** तक देशी शासकों के अधीन रहा, इसके बाद यह अफगानों के अधीन हो गया।

मालवा के परमार (9वीं-14वीं शताब्दी ई.)

- मालवा के परमार मूलतः प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के जागीरदार थे। 10वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वे एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में उभरे। **उपेन्द्र (कृष्णराज) (800-818 ई.) ने** परमार वंश की स्थापना की और **धार** को अपनी राजधानी बनाया। **मुंज/वाक्पतिराज द्वितीय (972-990 ई.)** एक प्रसिद्ध शासक था।
- वह कला और साहित्य का संरक्षक था। उसके दरबार की शोभा बढ़ाने वाले विभिन्न कवि निम्नलिखित थे:
  - **धनंजय** कृत **दशरूपकम्।**
  - **पद्मगुप्त** कृत **नव-सहसांक-चरित।**
  - अन्य कवियों में **हलायुध** और **धनिक** शामिल हैं।
- **राजा भोज:** उसके शासनकाल में परमार वंश अपने चरम पर पहुँच गया था।
- **1008 ई. में उसने महमूद गजनवी** के विरुद्ध **आनंदपाल की** सहायता के लिए एक सेना भेजी और आनंदपाल के पुत्र **त्रिलोचनपाल** को आश्रय दिया।
- उसे **चालुक्य** और **कलचुरियों के आक्रमणों का सामना करना पड़ा।**
- **1043 ई.** में, वह देशी सरदारों के संघ में शामिल हो गया जिन्होंने तुर्कों से हांसी, थानेसर, नगरकोट और अन्य क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की।
- भोपाल के निकट **भोजपुर** नगर की स्थापना की।

उसने चिकित्सा, खगोल विज्ञान, धर्म और स्थापत्यकला जैसे विषयों पर किताबें लिखीं।
- **शृंगार प्रकाश,** व्याकरण पर एक पुस्तक।
- **समराङ्गण सूत्रधार** वास्तुशास्त्र पर एक लोकप्रिय पुस्तक है।
- **चम्पू रामायण** (गद्य एवं पद्य)

- **परमार वंश के अंतिम शासक महालकदेव (मृत्यु 1305 ई.) को अलाउद्दीन खिलजी की सेना** ने पराजित किया था।

दिल्ली के तोमर (8वीं-12वीं शताब्दी)

पृष्ठभूमि:

- दिल्ली के तोमर **हरियाणा पर शासन करते थे और दिल्लिका (दिल्ली)** उनकी राजधानी थी। वे **प्रतिहारों** के सामंत थे।
- **मध्ययुगीन बार्डिक साहित्य (आयरलैंड और स्कॉटलैंड के गेलिक भागों के बार्डिक स्कूलों में प्रशिक्षित विद्वानों के एक वर्ग द्वारा रचित)** ने इस राजवंश को "**तुअर**" (**Tuar**) नाम दिया और उन्हें 36 राजपूत वंशों में से एक के रूप में वर्गीकृत किया है।
  - उनका शाकंभरी के चाहमानों के साथ संघर्ष होता था और उनके शासन का पालन चाहमानों द्वारा किया जाता था।

Search on TG: @apna_pdf

- **13वीं सदी के पालम बावली** (बावड़ीदार कुआँ) के शिलालेख से पता चलता है कि हरियानिका की भूमि पर पहले **तोमरों** का शासन था , फिर **चौहानों का** और उसके बाद **शकों का शासन** हुआ।
- सबसे महत्त्वपूर्ण राजा **अनंगपाल तोमर था**।
  - उसने **दिल्ली की स्थापना की** और उसका वर्णन **महरौली** के लौह स्तंभ के **11वीं शताब्दी के शिलालेख में किया गया है।**
  - उसके **सिक्कों पर घुड़सवार और वृषभ की आकृति** अंकित है साथ ही **उन पर "श्री सामंत-देव"** उपाधि भी अंकित है। ये सिक्के, शाकंभरी चाहवान राजा **सोमेश्वर** और **पृथ्वीराज तृतीय के सिक्कों के समान थे।**

योगदान:

- दिल्ली क्षेत्र में सबसे पुराने सर्वाइविंग (बावड़ीदार कुआँ) निर्माण करवाया।
- **अनंगपाल द्वितीय, महरौली** क्षेत्र में **लाल कोट** के गढ़ का संस्थापक था और उसने **अनंग ताल के** नाम से एक ताल भी बनवाया था।
- प्रसिद्ध **सूरज कुंड जलाशय** (फरीदाबाद, हरियाणा के पास) का निर्माण **तोमर राजा सूरजपाल** द्वारा करवाया गया था।

शाकंभरी के चाहमान या चौहान (छठी-बारहवीं शताब्दी ई.)

शाकंभरी के चाहमान राजवंश का नाम उनकी राजधानी, राजस्थान के **सांभर, के नाम पर रखा गया था।** इसकी स्थापना **सिंहराज (944–971 ई.) ने की थी।**

महत्त्वपूर्ण शासक

- **अजयराज (1110–1135 ई.) ने नागौर पर** पुनः कब्जा किया और गजनवी को आगे बढ़ने से रोका।
  - उसने **अजमेर (अजयमेरु) की स्थापना की।**
  - उसके सिक्कों पर **रानी सोमलदेवी** का नाम अंकित है।
- उसके पुत्र **अर्णोराज ने यामिनियों (गजनी साम्राज्य) को** रोका और **विवाह** के माध्यम से गुजरात के **चालुक्य शासक के साथ गठबंधन किया।**
- अर्णोराज के पुत्र **विग्रहराज चतुर्थ (1150–1164 ई.) ने** दिल्ली और हांसी पर कब्जा करके चौहान राज्य का विस्तार किया तथा उसे एक साम्राज्य के रूप में स्थापित किया।
  - वह साहित्य का संरक्षक था और उसकी नाटक कृति **हरकेलि** अजमेर के शिलालेख पर उत्कीर्ण है।
  - **ललित-विग्रहराज की** रचना उसके दरबारी कवि **सोमदेव ने की थी।**
  - **अढ़ाई दिन का झोंपड़ा (अब मस्जिद) का** निर्माण कराया जो **मूल रूप से एक विद्यालय था।**
- इस घराने के अंतिम शासक **पृथ्वीराज तृतीय (1177–1192 ई.) ने कन्नौज, गुजरात और चंदेल पर आक्रमण किया।**
- **चंदबरदाई ने** पृथ्वीराज तृतीय के जीवन पर **पृथ्वीराज रासो (ब्रज भाषा में)** लिखी।
- **पृथ्वीराज विजय भी जयानक** द्वारा लिखित उसके शासनकाल का एक वृत्तांत है।
- पृथ्वीराज तृतीय ने **मुहम्मद गौरी के साथ दो युद्ध लड़े।**
  - **तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.):** इसमे राजपूतों की विजय हुई; हालाँकि, मुहम्मद गौरी भागने में सफल रहा और गजनी लौट गया।
  - **तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.):** इस युद्ध में **पृथ्वीराज, मुहम्मद गौरी** से हार गए जिससे भारत में शासन का मार्ग प्रशस्त हुआ।।
- चौहान वंश की शाखाओं ने रणथंभौर, नाडोल और जालौर पर भी शासन किया। 14वीं शताब्दी की शुरुआत में अलाउद्दीन खिलजी ने अजमेर और जालौर पर कब्जा कर लिया।

गहड़वाल (11वीं-12वीं शताब्दी ई.)

गहड़वाल सूर्यवंशी क्षत्रिय थे जिन्होंने **11वीं शताब्दी के अंत** में **कन्नौज** राज्य पर शासन किया था। उन्होंने धीरे-धीरे **पालों को बिहार** से बाहर खदेड़ दिया और बनारस को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।

शासक और उनका योगदान:

- **चंद्रदेव (लगभग 1090 ई.):** उसने गहड़वाल **राजवंश की स्थापना की** और प्रतिहारों एवं राष्ट्रकूटों से दिल्ली को सफलतापूर्वक छीन लिया।
- **विजयचंद्र (1154–1170 ई.):** उसने गजनवियों के आक्रमणों का सफलतापूर्वक सामना किया। उसके शासनकाल के दौरान दिल्ली उसके हाथ से निकल गई और तोमर शासकों ने विजयचंद्र को अपने अधिपति के रूप में मान्यता देना बंद कर दिया।

जयचंद्र (1170–1194 ई.)

- **पृथ्वीराज चौहान** के नेतृत्व में अजमेर के चौहानों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया।
- **चंदावर के युद्ध** (1194 ई.) (फिरोजाबाद के पास, यमुना नदी के तट पर) में **मोहम्मद गौरी ने जयचंद्र को** पराजित कर साम्राज्य पर कब्जा कर लिया।
- **जयचंद्र** के पोते **सियाजी ने राठौड़ वंश की** स्थापना की, जो जोधपुर से मारवाड़ रियासत पर शासन करता था।
- **इल्तुतमिश** की विजय के साथ ही कन्नौज का गौरव समाप्त हो गया।

त्रिपुरी के कलचुरी (10वीं-12वीं शताब्दी)

- **कोकल्ल प्रथम (845-855 ई.)** ने कलचुरी वंश की स्थापना की। वह सिंध के तुर्की सैनिकों को हराने के लिए और चंदेलों के साथ विवाह के माध्यम से गठबंधन करने के लिए जाना जाता था। उसके साम्राज्य का पहला केंद्र नर्मदा **पर महिष्मति था।**
- प्रसिद्ध **कवि राजशेखर** कलचुरी दरबार में रहता था।
- इन्हें **कटसुरी, हैहय और चेदी के नाम से भी जाना जाता है।**
- कई सशक्त शासकों के बावजूद, 10वीं शताब्दी के अंत में इस राजवंश का पतन हो गया, लेकिन 1015 ई. के आसपास जबलपुर में **गांगेयदेव के नेतृत्व में इसका पुनरुत्थान हुआ।**
- उसके पुत्र, **कर्ण (इस राजवंश के सबसे महान शासक) ने बनारस और प्रयागराज सहित पश्चिम बंगाल तक** महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय विस्तार किया और मालवा के खिलाफ, चालुक्यों के साथ गठबंधन किया।

Search On TG: @apna_pdf

गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) (950-1300 ई.)

- **भीम प्रथम (1022-1064 ई.)**: इसके शासनकाल के दौरान **महमूद गजनी ने** गुजरात पर आक्रमण किया और सोमनाथ मंदिर को लूटा।
- **जयसिंह सिद्धराज (1092-93 ई.) ने** साम्राज्य को सुदृढ़ किया और उसका विस्तार किया। मालवा के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त करने (1137 **ई.**) के बाद, उसने **अवंतीनाथ (मालवा के स्वामी**) की उपाधि धारण की।
- वह **शिव भक्त था** और उसने सिद्पुर में **रुद्रमहाकाल मंदिर का निर्माण करवाया।**
- उसने जैन विद्वान **हेमचंद्र** को संरक्षण प्रदान किया।
- उसका उत्तराधिकारी **कुमारपाल, जैन धर्म का** अंतिम प्रसिद्ध शाही **समर्थक था**। कुमारपाल के नाबालिग पोते के शासनकाल के दौरान गुजरात को **मुहम्मद गौरी के आक्रमण का सामना करना पड़ा।**
- गुजरात के अंतिम हिंदू राजा **कर्ण द्वितीय ने अलाउद्दीन खिलजी की** सेना का सामना किया।

कश्मीर

- कश्मीर में **कार्कोट वंश (कर्कोटक वंश), जो ललितादित्य मुक्तापीड** जैसे शासकों के लिए जाना जाता है, के बाद 9वीं शताब्दी के मध्य में **उत्पल वंश का शासन स्थापित हुआ।**
- **उत्पल राजवंश** के संस्थापक **अवंतीवर्मन (855-883 ई.) ने** बाढ़ से राहत प्रदान करने के लिए जल निकासी और सिंचाई प्रणालियों का पर्याप्त विकास किया। उसने **अवंतीपुर शहर की स्थापना की** और कई मंदिरों का निर्माण कराया।
- प्रसिद्ध महिला शासक **रानी दिद्दा का शासनकाल अशांति से भरा रहा और लोहार राजवंश** का उदय हुआ। **1172 ई.** में इस राजवंश के पतन के परिणामस्वरूप दो शताब्दियों तक अराजकता की स्थिति बनी रही, जिसका अंत **1339 ई.** में **शाह मीर** द्वारा **रानी कोटा** को अपदस्थ करने के साथ हुआ, जो कश्मीर में हिंदू शासन की समाप्ति का प्रतीक था।

पूर्व और उत्तर-पूर्व के राजवंश

असम के राजवंश

1. **सलामा/सलस्तम्भ राजवंश (लगभग 800-1000 ई.पू.)**
   - असम, जिसे ऐतिहासिक रूप से कामरूप या प्रागज्योतिषपुर के नाम से जाना जाता है, देवपाल के शासनकाल के दौरान पाल शासकों के प्रभाव में था।
   - 800 ई. में, हरजवरमन ने पालों से स्वतंत्रता की घोषणा की और सलामा/सलम्बा राजवंश की स्थापना की। इसने असम में अपनी क्षेत्रीय स्वतंत्रता को स्थापित कर उसकी पुष्टि की।
   - इसकी राजधानी, हरुप्पेश्वर, ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर स्थित थी, जो व्यापार और संचार के लिए नदी के मार्गों से लाभान्वित थी।
2. **प्रलम्ब राजवंश (9वीं शताब्दी)**
   - सलामा राजवंश के बाद, 9वीं शताब्दी ई. के दौरान असम में प्रलम्ब राजवंश का उदय हुआ।
   - इस राजवंश के एक अज्ञात शासक द्वारा बख्तियार खिलजी के आक्रमण को सफलतापूर्वक विफल किया, जिससे आक्रमणकारियों को भारी क्षति हुई।
3. **अहोम साम्राज्य (1228 ई. के बाद)**
   - शान जनजाति का एक उपसमूह अहोम, 1228 ई. में सुकफा के नेतृत्व में असम में आया और अहोम साम्राज्य की स्थापना की। असम नाम की उत्पत्ति अहोम शासन से हुई।
   - राज्य पाइक प्रणाली पर निर्भर था, जो जबरन श्रम का एक रूप था, जहाँ पाइक राज्य के लिए विभिन्न क्षमताओं के साथ कार्य करते थे।

वर्मन और सेन (पूर्वी बंगाल)

- **11वीं शताब्दी की शुरुआत में** वर्मन सत्ता में आए, उनके बाद **सेन वंश ने सत्ता संभाली**, जो संभवतः **कन्नड़ भाषी क्षेत्र से आए थे और दक्षिणापथ** के राजाओं के साथ अपने संबंध का दावा करते थे।
- **विजयसेन** एक प्रसिद्ध सेन राजा था जिसने **1095 ई. से शासन करना प्रारंभ किया**। उसने क्षेत्र के सांस्कृतिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, उसके शासनकाल का विवरण **देवपाड़ा प्रशस्ति शिलालेख में दिया गया है**। उसके उत्तराधिकारी **बल्लाल सेन को उसकी शिक्षा, लेखनकौशल और कुलीनवाद** की सामाजिक व्यवस्था की शुरूआत के लिए जाना जाता था।
- **अंतिम हिंदू शासक** और **बल्लाल सेन के पुत्र लक्ष्मणसेन, जो अपने शासन काल में सांस्कृतिक प्रगति के लिए जाने जाते थे,** के दरबार में **जयदेव (गीत गोविंद), हलायुध** और **श्रीधरदास** जैसे प्रसिद्ध साहित्यकार थे। उसके उत्तराधिकारी ने 13वीं शताब्दी के मध्य तक वंग पर नियंत्रण बनाए रखा, उसके बाद **देव राजवंश ने** इस पर कब्जा कर लिया।

कलिंग, उड़ीसा

- **7वीं शताब्दी के मध्य** में उड़ीसा **शैलोद्भव वंश के सैन्यभीत माधववर्मन** (श्रीनिवास) के शासन के अधीन था, जो **अश्वमेध यज्ञ** करने के लिए प्रसिद्ध थे।
- इस राजवंश का प्रभुत्व **8वीं शताब्दी के मध्य तक रहा**। इसके बाद, उड़ीसा पर कई राजवंशों का शासन रहा, इनमें से **कर और भंज राजवंश विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कर राजवंश में** कम से कम **पाँच महिला शासक रहीं हैं।**
- **मैसूर के गंगों** से संबंधित पूर्वी **गंगों ने कलिंग** में अपना शासन स्थापित किया, जिसकी राजधानी **कलिंगनगर थी।**
  - एक प्रसिद्ध शासक **अनंतवर्मन चोडगंग ने उत्कल और कलिंग को** एकीकृत किया और **1078 ई. के आस-पास वह अपने पिता का उत्तराधिकारी बना**। उसने उड़ीसा के राज्यक्षेत्र का विस्तार किया।
  - **चोल आक्रमण का** सामना करने के साथ, उसने चोलों की भूमि पर कब्ज़ा कर लिया तथा अपने राज्य को **"गंगा से गोदावरी" तक बढ़ाया।** उसने आधुनिक ओडिशा की नींव रखी तथा **जगन्नाथ मंदिर का** निर्माण करवाया।

Search On TG: @apna_pdf

- उसके द्वारा स्थापित साम्राज्य ने गंगा तक नियंत्रण बनाए रखा और बंगाल के आक्रमणों का विरोध किया, जिसमें **बख्तियार खिलजी का आक्रमण भी शामिल था।**
- **नरसिंह प्रथम ने (1238-1264 ई.) कोणार्क में सूर्य मंदिर** का निर्माण शुरू करवाया।

- 15वीं शताब्दी के मध्य में, कलिंग में एक नया शाही परिवार, **सूर्यवंश** सत्ता में आया।

भुवनेश्वर स्थित लिंगराज मंदिर (शिव से संबंधित) का निर्माण **सोमवंशी राजा ययाति प्रथम ने करवाया था।**

दक्कन और दक्षिण भारत के राजवंश

कल्याणी के चालुक्य (10वीं-12वीं शताब्दी ई.)

- **कल्याणी के चालुक्य वंश** का संस्थापक **तैलप द्वितीय (973-997 ई.) राष्ट्रकूटों का** उत्तराधिकारी बना, उसने अपनी राजधानी कर्नाटक के **कल्याणी (आधुनिक बीदर जिला)** में स्थापित की।
- उसने पड़ोसी क्षेत्रों को अपने अधीन कर लिया, जिनमें **मैसूर के गंग, मालवा के परमार, गुजरात के चालुक्य** और **चेदि के कलचुरी शामिल थे।**
- इस अवधि में उल्लेखनीय **चालुक्य-चोल प्रतिद्वंद्विता देखी गई, जिसमें तुंगभद्रा नदी को** दोनों साम्राज्यों के बीच की सीमा के रूप में स्वीकार किया गया।
- **विक्रमादित्य षष्ठम ने शक संवत** के स्थान पर **चालुक्य-विक्रम संवत की** स्थापना की।
- उसने **विक्रमांकदेवचरित** के रचयिता बिल्हण और **मिताक्षरा** (याज्ञवल्क्य स्मृति पर टिप्पणी) के लेखक **विज्ञानेश्वर** जैसे प्रख्यात विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया था।
- 12वीं शताब्दी के मध्य तक चालुक्य शासन समाप्त हो गया, जिससे **वारंगल के काकतीय, द्वारसमुद्र के होयसल और देवगिरि के यादवों के शासन का मार्ग प्रशस्त हो गया। वेंगी के पूर्वी चालुक्य, जो शुरू में चोलों द्वारा संरक्षित थे, अंततः कोलुतुंग** के शासनकाल में चोल साम्राज्य में एकीकृत हो गए।

देवगिरि के यादव

- भगवान कृष्ण के **यदु वंश** से होने का दावा करने वाले यादवों को एक स्वदेशी मराठा समूह (प्रारंभ में राष्ट्रकूटों और बाद में पश्चिमी चालुक्यों के सामंत) माना जाता है।
- **भिल्लम पंचम** ने **देवगिरि को** अपनी राजधानी बनाकर यादव साम्राज्य की **स्थापना की।** इस साम्राज्य का पतनशील पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य के क्षेत्रों को लेकर **होयसलों के साथ संघर्ष** हुआ।
- **सिंहण (1210-1246 ई.) ने** यादव साम्राज्य को उसके चरम पर पहुँचाया। इस राजवंश का अंतिम प्रसिद्ध शासक **राम चंद्र देव था** जिसने **अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण का सामना किया था।**

काकतीय राजवंश (950-1323 ई.)

- इनकी उत्पत्ति **प्राचीन तेलुगु वंश** से हुई थी, वे **पश्चिमी चालुक्यों के सामंत थे।**
- **बेत प्रथम (सबसे पहले ज्ञात शासक) ने नलगोंडा जिले** (हैदराबाद) में एक छोटे राज्य की स्थापना की। **पश्चिमी चालुक्य राजा, विक्रमादित्य षष्ठम के** निधन के बाद काकतीयों ने चालुक्य सामंतों को हराकर अपना विस्तार शुरू किया।
- एक प्रमुख **काकतीय शासक, गणपति ने** तेलुगु क्षेत्र पर सत्ता का केंद्रीकरण किया, **प्रशासनिक दक्षता** और **व्यापार एवं कृषि** को बढ़ावा देने पर जोर दिया।
- उसने **वारंगल शहर का निर्माण पूरा किया** और अपनी राजधानी वहाँ स्थानांतरित कर दी।
- **रुद्रमादेवी (गणपति की पुत्री) ने रुद्रदेव महाराजा** का नाम धारण किया और उड़ीसा एवं यादवों के खतरों का सामना करते हुए लगभग 35 वर्षों तक शासन किया। वह **पाशुपत शैव मठों की संरक्षक थी।**
- रुद्रमादेवी का पौत्र **प्रताप रूद्र (1295-1323 ई.)** इस राजवंश का अंतिम शासक था।

मोटुपल्ली काकतीयों का प्रमुख बंदरगाह था। वेनिस यात्री **मार्को पोलो** इसी बंदरगाह पर आया था। [यूपीएससी 2017]

चोल साम्राज्य (9वीं-13वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध)

परिचय

चोल उन तीन शक्तिशाली राजवंशों में से एक थे जिन्होंने प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में **तमिझ (तमिल) देश पर शासन किया था। उन्हें संगम साहित्य में मुवेंधर** में से एक के रूप में वर्णित किया गया है और **अशोक** के शिलालेखों में भी उनका उल्लेख मिलता है।

- चोल साम्राज्य का 9वीं शताब्दी के मध्य में **विजयालय** (संभवतः **पल्लवों का जागीरदार**) के शासनकाल में पुनरुत्थान हुआ, जिसने मुत्तरैयार से कावेरी डेल्टा पर विजय प्राप्त की थी। उसने **तंजावुर (तंजौर) शहर का निर्माण कराया।**
- बाद के चोलों ने स्वयं को संगम युग के प्रसिद्ध चोल शासक **कराईकल** का वंशज बताया।

आदित्य (राजादित्य) और **परांतक प्रथम (जिसने** पांड्यों पर विजय प्राप्त करने के बाद **मदुरैकोंडा** की उपाधि धारण की) के शासन काल में साम्राज्य का और विस्तार हुआ। परिणामस्वरूप, **राष्ट्रकूट राजा कृष्ण द्वितीय के साथ टकराव पैदा हुआ, जिसकी परिणति 949 ई. में तक्कोलम के युद्ध** में **राजादित्य (चोल)** की हार के रूप में सामने आई।

प्रसिद्ध शासक

राजराज प्रथम (985-1014 ई.)

राजनीतिक महत्त्व की दृष्टि से राजराज प्रथम के युग की तुलना **समुद्रगुप्त से की** गई है।

प्रमुख उपलब्धियाँ/विजय:

- **उसने कई नौसैनिक अभियान** दल भेजे और पश्चिमी तट, श्रीलंका और मालदीव पर विजय प्राप्त की। उसने सैन्य विजय के माध्यम से **श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी हिस्सों पर सीधा नियंत्रण स्थापित कर लिया।**

Search On TG: @apna_pdf

- राजराज प्रथम ने विजित क्षेत्रों को एकीकृत किया और वहाँ "**सूबेदार (वायसराय)**" नियुक्त किए: **पांडिनाडु में चोल-पांड्य, श्रीलंका में चोल-लंकेश्वर, जिसे बाद में मुम्मुदिचोलामंडलम** नाम दिया गया और दक्षिणी कर्नाटक के **गंगावाड़ी क्षेत्र में चोल-गंग को नियुक्त किया।।**
- **स्थापत्यकला**: उसने तंजौर में **बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण कराया (जिसे उसके नाम पर राजराजेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है)**। इस मंदिर की दीवारों पर उसकी विभिन्न उपलब्धियाँ उत्कीर्ण हैं। उसने **जावा में बौद्ध विहार के** निर्माण में जावा के राजा की भी सहायता की।

राजेंद्र प्रथम (1014-44 ई.)

- वह राजराज का पुत्र था और उसके अधीन चोलों की शक्ति अपने चरम पर पहुँच गई थी।
- तिरुवलंगंडु **ताम्रपत्र शिलालेख** और **तिरुमलाई शिलालेख** में उसकी विजयों का विवरण है।

सैन्य अभियान:

- **उसने पश्चिमी चालुक्यों** पर आक्रमण करके चोल साम्राज्य की सीमा को तुंगभद्रा नदी तक बढ़ाया।
- **मदुरै पर** हमला किया, जिसके बाद पांड्य भाग गए और श्रीलंका में शरण ली। इसके बाद, राजेंद्र प्रथम ने उनकी खोज में श्रीलंका पर आक्रमण किया।
- **महीपाल** (पाल वंश के राजा) पर अपनी जीत के बाद उसने **गंगईकोंडा (गंगा का विजेता)** की उपाधि धारण की और **गंगईकोंडा चोलपुरम** शहर की स्थापना की। उसने गोदावरी नदी तक के अभियान का नेतृत्व किया। गंगईकोंडा **चोलपुरम मंदिर** उत्तर भारत में उसकी विजयों की याद में बनाया गया था।
- उसका **नौसैनिक अभियान श्री विजय साम्राज्य** (दक्षिणी **सुमात्रा**) के खिलाफ था, जो एक प्रमुख समुद्री और वाणिज्यिक राज्य था जो दक्षिण-पूर्व एशिया में 700-1300 ईस्वी तक फला-फूला था।
- **उसने मुदिकोंडा चोलन** (ताज धारण किए हुए चोल)**, कदारमकोंडन** (कदारम का विजेता) और **पंडित चोलन** (विद्वान चोल) की उपाधियाँ धारण कीं।
- उसने **सुमात्रा पर विजय प्राप्त की** और मलाया प्रायद्वीप एवं दक्षिण भारत के बीच व्यापार को बढ़ावा दिया।
- **पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य पर** 1003 ई. **में राजराज प्रथम** और 1009 ई. में **राजेन्द्र प्रथम द्वारा किए गए** चोल आक्रमण भी सफल रहे।
- **राजेंद्र प्रथम** के बाद **राजाधिराज** शासक बना और उसके बाद **राजेंद्र द्वितीय** शासक बना।

कुलोतुंग प्रथम (1070-1122 ई.)

- वह **अंतिम महत्त्वपूर्ण** चोल शासक था जिसने वेंगी के पूर्वी चालुक्यों को चोलों के साथ एकजुट किया।
- **भूमि सर्वेक्षण (जो इंग्लैंड के डोम्सडे सर्वेक्षण के साथ मेल खाता है)** सहित कई **प्रशासनिक सुधार** शुरू किए।
- एक शैव होने के बावजूद**,** उसने नागपट्टम के **बौद्ध मठों** को अनुदान दिया।
- वेंगी **पर उसका प्रभुत्व** समाप्त हो गया और उसे होयसलों के आक्रमण का सामना करना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप **गंगावाड़ी प्रांत** भी उसके हाथ से चला गया। उसे पांड्य और चेर शासकों से भी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इससे चोल साम्राज्य का पतन हुआ, अंततः **होयसल** और **पांड्यों ने उस पर कब्जा कर लिया।**

चोल राजाओं राजाधिराज और कुलोतुंग तृतीय के शासनकाल के दौरान उत्तरी अर्कोट और चेंगलपट्टू क्षेत्रों में संबुवरयार सरदार/सामंत थे।

चोल प्रशासन

- चोल साम्राज्य में, राजा प्रशासन का प्रमुख होता था, प्रशासनिक कार्यों में **शाही राजकुमारों**, मंत्रिपरिषद और प्रशासनिक कर्मचारियों द्वारा सहायता की जाती थी। राज्य के अधिकारियों को वेतन और सम्मान के रूप में **भूमि अनुदान** और उपाधियाँ प्रदान की जाती थीं।
- राजाओं को हमेशा **पेरुमान** या **पेरुमागन** (बड़ा आदमी), **उलागुदैयापेरुमल** (दुनिया का स्वामी) और **उलागुदैयानयनार** (दुनिया का स्वामी) कहकर संबोधित किया जाता था। बाद में, उन्होंने **चक्रवर्ती** (सम्राट) और **त्रिभुवन चक्रवर्ती** (तीन लोकों के सम्राट) जैसी उपाधियाँ भी धारण कीं।
- साम्राज्य को **प्रांतों (मंडलों) में विभाजित किया गया था**, जिन्हें आगे **वलनाडु** और **नाडु में विभाजित किया गया था।**
- चोल शासकों ने ब्राह्मणों को राजगुरु के रूप में नियुक्त किया, इसलिए उन्हें **ब्रह्मदेयम (ब्राह्मणों को कर मुक्त भूमि की विशाल संपदा)** और **चतुर-वेदी-मंगलम (ब्राह्मणों के लिए कर मुक्त गाँव) प्रदान किए।**

स्थानीय प्रशासन

- स्थानीय प्रशासन **उर, सभा या महासभा और नगरम** जैसी विभिन्न **ग्राम सभाओं** द्वारा प्रशासित किया जाता।
- **"उर"** सभी भूमिधारक वर्गों की एक ग्राम सभा थी।
- **"सभा" ब्रह्मदेय गाँवों के ब्राह्मणों** की एक सभा थी, और
- **"नगरम" व्यापारियों** की एक सभा थी।

उत्तरमेरुर शिलालेख (919 और 921 ई.) - इसे परांतक चोल प्रथम के शासनकाल में तैयार किया गया था। यह चोलों के **स्थानीय प्रशासन** पर प्रकाश डालता है। इसमें ब्राह्मण बस्ती के मामलों को प्रशासित करने वाली विभिन्न समितियों के सदस्यों को **चुनने** की प्रक्रिया का विवरण है।

सेना

चोलों के पास एक **सुसंगठित सेना थी**। सेना के **तीन** पारंपरिक अंग थे: पैदल सेना, घुड़सवार सेना **(कुदिराई सेवागार)** और हस्ति दल **(अनैयात्कल)।**

प्रासंगिक शब्द:

- **पदैविदु** - छावनियाँ, जो राजधानी शहर में स्थापित की गईं।
- **निलाईपादई** - विजित क्षेत्र में सैन्य चौकियाँ।
- **दंडनायगम** - प्रधान सेनापति।
- **पेरुन्दनम-** सेना में उच्च रैंक; **सिरुदनम-** निचले रैंक।
- **वेलैक्करन-** सम्राट के निजी अंगरक्षक।
- **विलालिगल** - तीरंदाज; **वलिलर** - तलवारवाज; **कोंडुवर** - भाला चलाने वाले।

अर्थव्यवस्था

भूमि सर्वेक्षण

- एक विस्तृत "भू-राजस्व विभाग" था जिसे **पुरवुवारी-तिनैक्कलम के नाम से जाना जाता था।**

Search On TG: @apna_pdf

- चोलों ने **कर निर्धारण** के उद्देश्य से **राजराज प्रथम (1001 ई.), कुलोतुंग प्रथम (1086 ई.) और कुलोतुंग तृतीय (1226 ई.)** के शासनकाल में व्यापक **भूमि सर्वेक्षण किया।**
  - भूमि के सर्वेक्षकों को **नाडु-वागैसेकिर कहा जाता था।**

भूमि माप की इकाइयों को कुली, मा, वेलि, पट्टी और पदागम जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता था।

कर

- कर की दरें **मिट्टी की उर्वरता** और **भूमिधारक की स्थिति के आधार पर तय की गई।** मंदिरों और ब्राह्मणों को कर चुकाने से **छूट दी गई।**
  - **इरई, कदमई, ओपती-** जमींदारों पर लगाया जाने वाला प्राथमिक भूमि कर था।
  - **कुडिमई** कृषकों अर्थात भूमि को वास्तव में जोतने वालों पर लगाया गया श्रम/सेवा कर था।
  - **पट्टम** और **अयम** विभिन्न गैर-कृषि व्यवसायों पर लगाया गया कर था।
  - **कलम** (28 किग्रा.) नामक इकाई द्वारा **कर के रूप में धान** लिया जाता था।
  - **इरैकाटिना नेलु - वस्तु के रूप में चुकाया गया कर था।**

सिंचाई प्रणाली

वटी एक जल निकासी चैनल है और **वयक्कल** एक आपूर्ति चैनल है।

वटी-वयक्कल, एक आढ़ा-तिरछा नाला, कावेरी डेल्टा में वर्षा जल के संचयन का एक पारंपरिक तरीका है। राजेंद्र प्रथम ने गंगईकोंडा चोलपुरम में सिंचाई के लिए ठोस चिनाई के एक तटबंध का निर्माण करवाया था। उसने इसे अपना **जलमायम जयस्तंभम बताया**, जिसका अर्थ है **"जल में विजय स्तंभ"**। उसने राजधानी के पास चोलगंगम नामक एक सिंचाई तालाब का निर्माण कराया जिसे जल-स्तंभ कहा जाता था। बाद में यही राजाओं का राज्याभिषेक केंद्र बन गया, जो एक महत्त्वपूर्ण चोल स्थल था।

व्यापार

- संघ जैसे दो समूहों की जानकारी मिलती है:
  - **अंजुवन्नत्तार समुद्री व्यापारी** थे जिनमें यहूदी, ईसाई और मुस्लिम सहित पश्चिम एशियाई लोग शामिल थे। वे पश्चिमी तट के सभी बंदरगाह शहरों में बस गए।
  - **मणिग्रामत्तार भीतरी इलाकों में व्यापारी** थे।
- **वेट्टी और अमांजी** ग्रामीण स्तर पर सार्वजनिक कार्यों से संबंधित **नि:शुल्क श्रम** के रूप थे।

समाज

- यह मुख्य रूप से एक **कृषि प्रधान समाज था** जिसमें भूमि स्वामित्व, सामाजिक स्थिति और पदानुक्रम का प्रमुख निर्धारक था।
- ब्राह्मण जमींदारों को **ब्रह्मदेय-किलवार कहा जाता था**, जो ब्रह्मदेय बस्तियों के शीर्ष पर थे (कर छूट प्राप्त थी), उन्होंने **कुडी नीक्की** (स्थानीय किसानों) को विस्थापित कर दिया।
- मंदिरों को **देवदान के** नाम से भूमि उपहार में दी जाती थी और उन्हें ब्रह्मदेयम के समान कर से छूट दी जाती थी।
- वेल्लनवागई गाँवों के जमींदारों को सामाजिक पदानुक्रम में अगले स्थान पर रखा गया था।
- **उलुकुडी (काश्तकार)** जमीन के मालिक नहीं हो सकते थे, लेकिन उन्हें ब्राह्मणों और वेल्लनवागई गाँवों के जमींदारों की जमीन पर खेती करनी पड़ती थी। जबकि जमींदारों ने **मेल्वरम** (फसल में बड़ा हिस्सा) अपने पास रखा, उलुकुडी को **किज वरम** (कम हिस्सा) मिला।
- **पनीसीमक्कल (मजदूर)** और **अदिमैगल (दास)** सामाजिक पदानुक्रम में सबसे नीचे रहे।

चोल कला और स्थापत्यकला

मंदिर

- मंदिर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बन गए।
- मंदिर बैंक के रूप में कार्य करते थे, वे ऋण देते थे और धर्मार्थ दान प्राप्त करते थे। उन्होंने वेदों, संगीत और कलाओं में प्रशिक्षण प्रदान करके शैक्षिक केंद्रों के रूप में भी काम किया।

प्रसिद्ध चोल मंदिर (यूनेस्को)

- **तंजावुर** में **बृहदीश्वर मंदिर राजराज** द्वारा बनवाया गया।
- **गंगाईकोंडाचोलिसवरम** में **बृहदीश्वर मंदिर का निर्माण राजेंद्र प्रथम** द्वारा कराया गया था।
- **दारासुरम में ऐरावतेश्वर मंदिर** राजराज द्वितीय (1146-1172 ई.) द्वारा बनवाया गया।
- मंदिर के प्रमुख अधिकारी थे-
  - **कोयिलकनक्कू** (मंदिर लेखाकार)
  - **देव-कन्मी** (भगवान का एजेंट)
  - **कंतेसर** (मंदिर प्रबंधक)
- अन्य अधिकारियों में **कोयिरमार** और **श्रीवैष्णवार शामिल थे।**
- **शंकरपादियार** नामक **तेल निकालने वाले लोग** मंदिर को तेल की आपूर्ति करते थे। बाद में ये मंदिर के पदाधिकारी बन गए।
- **राजराज प्रथम** के जीवन पर आधारित एक नाटक **राजराजनाटकम** का तंजावुर मंदिर में मंचन किया गया था।
- **कुड़क-कुथु** और **सक्काइक-कुथु** जैसे पारंपरिक नृत्य रूपों को मंदिरों में मूर्तियों और चित्रों के रूप में चित्रित किया गया था। तंजावुर मंदिर में **नृत्य** और **कर्ण मुद्राओं को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है।**
- पारंपरिक तमिल संगीत वाद्ययंत्रों को भी इसी तरह चित्रित किया गया था।

- **चोल मूर्तियाँ** ऊर्जा, लावण्य और गरिमा के सामंजस्य का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

  उदाहरण के लिए: चिदंबरम में **नटराज या नृत्य करते शिव की मूर्ति।**
- **चोल चित्र** सूक्ष्मता और रंग में समृद्ध थे, विशेष रूप से **बृहदेश्वर मंदिर** के **प्रदक्षिणा पथ को सुशोभित करते हुए चित्र समृद्धि के प्रतीक थे।।**

साहित्य

- चोल राजा शिक्षा के महान संरक्षक थे जिन्होंने संस्कृत शिक्षा का समर्थन किया।
- साहित्यिक कृतियाँ **कंब रामायण** और **पेरियापुराण** इसी काल की हैं।

Search On TG: @apna_pdf

- **राजेंद्र प्रथम ने एनायिरम (दक्षिण अरकोट जिला) में वैदिक कॉलेज की** स्थापना की, जो एक वैष्णव केंद्र था, जहाँ वेद, व्याकरण और वेदांत की शिक्षा प्रदान की जाती थी।

चोल साम्राज्य पतन

- 12वीं शताब्दी के अंत तक स्थानीय सरदार ताकतवर हो गए, जिससे केंद्र कमजोर हो गया।
- चोल साम्राज्य एक समय शक्तिशाली साम्राज्य था जो पांड्यों के लगातार आक्रमणों के कारण होयसलों पर निर्भर हो गया।
- 1264 ई. में, जटावर्मन पांडियन प्रथम ने चोल राजधानी गंगईकोंडा चोलपुरम को लूट लिया।
- 1279 ई. चोल राजवंश के अंत का प्रतीक है जब राजा **मारवर्मन पांडियन प्रथम ने अंतिम राजा राजेंद्र चोल तृतीय को** पराजित कर पांड्यों का शासन स्थापित किया।

होयसल (10वीं-14वीं शताब्दी)

- **सल (Sala),** जिसे **नृपकाम** के नाम से भी जाना जाता है, ने होयसल राजवंश **की स्थापना की।**
- **साम्राज्य विस्तार:** यह राजवंश पश्चिमी चालुक्यों और चोलों के बीच के जिलों में फैला, अंततः पूर्व मैसूर राज्य के अधिकांश भाग तक फैल गया।

होयसलों ने **द्वारसमुद्र** में अपनी राजधानी स्थापित की। **बेलूर** एक शाही निवास के रूप में कार्य करता था जो **शानदार होयसल स्मारकों के लिए प्रसिद्ध था।** शाही परिवार की सुरक्षा **गरुड़** नामक **अंगरक्षकों की एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित सेना द्वारा की जाती थी।**

- **संघर्ष:** होयसल शासक **यादवों और पांड्यों के साथ संघर्ष में लगे रहे।**
- **प्रसिद्ध शासकों में विष्णुवर्धन, बल्लाल द्वितीय और बल्लाल तृतीय** शामिल हैं।
- **बल्लाल तृतीय ने दिल्ली सल्तनत (खिलजी और तुगलक)** की सेनाओं से युद्ध किया।
- होयसल **प्रख्यात निर्माता थे, जिन्होंने** चालुक्य कला परंपराओं को विकसित किया। उदाहरण के लिए: **हलेबिदु में होयसलेश्वर मंदिर।**
- होयसलों की राजधानी हलेबिदु या हेलेबिडु को दो बार 1311 ई. और 1327 ई. में **लूटा गया।**

उत्तरकालीन पांड्य

- पांड्य उन **मुवेंदारों** में से एक थे जिन्होंने पूर्व-आधुनिक काल तक भारत के दक्षिणी भाग पर शासन किया था। उन्हें मदुरै के पांड्य कहा जाता है। यह दक्षिण भारत का एक प्राचीन तमिल राजवंश था और तमिलकम के चार महान साम्राज्यों में से एक था। दक्षिण भारत के अन्य तीन साम्राज्य पल्लव, चोल और चेर थे।

पांड्य वंश की कालरेखा स्थापित करना कठिन है क्योंकि यह राजवंश कई चरणों से गुजरा।
- प्राचीन पांड्य/प्रारंभिक पांड्य: चौथी से तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व
- उत्तरकालीन (मध्यकालीन) पांड्य: छठी से 10वीं शताब्दी ई.
- पांड्यों का पुनरुत्थान: 13वीं से 14वीं शताब्दी ई.

- **पांड्यों का राज्यक्षेत्र:** इसे **पांड्यमंडलम, थेनमंडलम** या **पांड्यनाडु कहा जाता है।** इसमें **वैगई** और **ताम्रपर्णी** नदियों द्वारा सिंचित क्षेत्रों को छोड़कर अन्य सभी पहाड़ी क्षेत्र शामिल थे।

साम्राज्य की सीमाएँ:

उत्तर: **पुदुक्कोट्टई** क्षेत्र से होकर बहने वाली **वेल्लार नदी**	**दक्षिण**: हिंद महासागर
पश्चिम: पश्चिमी घाट	**पूर्व**: बंगाल की खाड़ी

अध्ययन का स्रोत:

- नेदुंजदायन का **वेल्विक्कुडी अनुदान।**
- **मार्को पोलो, वसफ** और **इब्न-बतूता** के वृत्तांत।

प्रसिद्ध शासक

- **कडुन्कोन ने** पांड्य क्षेत्र को **कलभ्रों से पुनः प्राप्त किया** और पांड्यों का पुनरुत्थान किया।

प्रारंभिक चोल, पांड्य और चेर के प्राचीन राजवंशों के बाद, तीसरी से छठी शताब्दी ईस्वी के बीच **कलभ्र** (पहाड़ी जनजाति) तमिल क्षेत्र के सभी या कुछ हिस्सों के शासक थे। उन्होंने संभवतः बौद्धों और जैनियों को अपना संरक्षण प्रदान किया।

- **सेंदन में योद्धा जैसे गुण थे और उसने वनावन (Vanavan)** की उपाधि धारण की जिससे चेरों पर उसकी विजय का पता चलता था।

अरिकेसरी मारवर्मन (624-674 ई.)

- वैगई नदी तल शिलालेख के अनुसार, वह 642 ई. में सिंहासन पर बैठा। उसे चेर, चोल, पल्लव और सिंहली जैसे अपने समकक्षों पर विजय के लिए जाना जाता है।
- **धार्मिक झुकाव: शैव** संत **त्रिगुणसंबंदार ने** अरिकेसरी को जैन धर्म से शैव धर्म में परिवर्तित किया। इसके अलावा, **अरिकेसरी की पहचान जैनियों के उत्पीड़क कुन पांडियन** से की जाती है।
- अरिकेसरी, **महेंद्रवर्मन प्रथम और नरसिंहवर्मन प्रथम** का **समकालीन था।**

जटिला परांतक नेदुंजदायन (वारगुण प्रथम) (756-815 ई.)

- वह **अपने राजवंश में सबसे महान था** और उसने पल्लवों और चेरों का सफलतापूर्वक सामना किया।
- उसने पांड्य साम्राज्य का विस्तार तंजावुर, तिरुचिरापल्ली, सेलम और कोयंबटूर जिलों तक किया।
- उसे **वेल्विक्कुडी प्लेटों** का दाता माना जाता है और उसे कई शिव और विष्णु मंदिरों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है।
- **श्रीमार श्रीवल्लभ (815-862 ई.):** उसने सीलोन पर आक्रमण किया और अपना अधिकार कायम रखा। वह पल्लव राजा **नंदीवर्मन तृतीय** (846-869 ई.) द्वारा पराजित हुआ। श्रीमार के बाद वारगुण **द्वितीय ने शासन किया,** जिसे श्रीपुरम्बियम में **अपराजिता पल्लव** (885-903) ने पराजित किया था।
- **परांतक वीरनारायण और राजसिंह द्वितीय** जैसे अन्य उत्तराधिकारी/शासक, **परांतक प्रथम** के नेतृत्व में बढ़ते चोल राजवंश का सामना नहीं कर सके।
- **परांतक प्रथम ने** पांड्य राजा **राजसिंह द्वितीय को पराजित किया जो 920 ई.** में देश छोड़कर भाग गया।

Search On TG: @apna_pdf

आदि राजेंद्र (चोल सूबेदार) की मृत्यु के बाद 13वीं शताब्दी के अंत में पांड्यों को फिर से **अपनी सीमाओं को बढ़ाने का अवसर मिला** और पांड्य सरदारों ने स्वतंत्र रूप से अपने क्षेत्रों पर पुनः शासन करना शुरू कर दिया।

- **सद्यवर्मन सुंदरपांडियन (1251-1268 ई.):** वह दूसरे पांड्य साम्राज्य का प्रसिद्ध शासक था, जिसने **पूरे तमिलनाडु को अपने अधीन किया और आंध्र में नेल्लोर** तक अपना अधिकार स्थापित किया।

मारवर्मन कुलशेखरन (1268-1312 ई.)

- 1302 **ई.** में, बड़े पुत्र **जटावर्मन सुंदर पांडियन तृतीय को,** सह-शासक नियुक्त किया गया।
- राजा द्वारा सह-शासक के रूप में सुंदर पांडियन की नियुक्ति ने दूसरे पुत्र **वीरा पांडियन** को नाराज कर दिया, इसलिए उसने **अपने पिता मारवर्मन कुलशेखरन की हत्या कर दी।**
- इसके बाद हुए गृहयुद्ध में वीरा पांडियन ने जीत हासिल की और मजबूती से अपना राज्य स्थापित किया।
- दूसरा पुत्र, **सुंदर पांडियन दिल्ली भाग गया** और **अलाउद्दीन खिलजी के संरक्षण में शरण ली।** इस घटनाक्रम ने मलिक काफूर को आक्रमण के लिए एक अवसर प्रदान किया।

मलिक काफ़ूर का आक्रमण

मलिक काफूर ने पांड्य साम्राज्य पर आक्रमण किया और 1311 **ई.** में मदुरै को लूट लिया। मदुरै में, दिल्ली सुल्तान के अधीनस्थ एक मुस्लिम राज्य स्थापित हुआ और 1335 **ई.** तक यह उसके अधीन रहा, जब **मदुरै के मुस्लिम सूबेदार जलालुद्दीन आसन शाह ने** स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

मार्को पोलो (वेनिस यात्री)

वह दो बार (1288 ई., 1293 ई.) कयाल बंदरगाह (तमिलनाडु के कोरोमंडल तट का ताम्रापानी डेल्टा) पर आया था। उसने यहाँ के परिदृश्य पर लिखा है कि शहर अरब और चीन के जहाजों एवं व्यावसायिक गतिविधियों से भरा हुआ था। उसने विदेशी व्यापारियों के लिए निष्पक्ष प्रशासन और उदार आतिथ्य के लिए राजा की सराहना की।

- उसने राजाओं में प्रचलित **सती प्रथा** और **बहुविवाह** की घटनाओं का भी वर्णन किया।

पांड्य साम्राज्य का प्रशासन

राजनीतिक प्रशासन:

- पांड्य राजाओं ने **मदुरै को** अपनी राजधानी बनाया जो **कुडाल** और **तमिल केलुकुदल के नाम से प्रतिष्ठित थी।**
- राजाओं को पारंपरिक रूप से **कुडालकोन, कुडाल नगर कावलन और मदुरापुरा परमेश्वरन के रूप में सम्मानित किया जाता था** ।
- पांड्यों ने अपने घोड़ों के माध्यम से अपने पड़ोसियों पर सैन्य बढ़त प्राप्त की, वे इन घोड़ों को अरबों से अपने संबंधों के माध्यम से आयात करते थे।
- राजा शक्ति का प्रयोग करते समय शाही सिंहासन पर बैठते थे।
  - इन सिंहासनों का नाम स्थानीय सूबेदारों के नाम पर रखा गया था: **मुनैया दरैयान, पांडिया दरैयान और कालिनकट त्रैयान।**
- राजा **मौखिक रूप से शाही आदेश जारी करते थे।** इसका दस्तावेजीकरण **तिरुमन्तिर ओलाई** नामक एक शाही मुंशी द्वारा किया जाता था।
- शाही महलों को **तिरुमालीगई** और **मनापरानन तिरुमालीगई कहा जाता था।**

- **प्रारंभिक पांड्यों की उपाधियाँ**: पांडियातिरासन, पांडिया महारासन, मन्नार मन्नान, अवनिब सेकरन, एका वीरन, सकलपुवन चक्रवर्ती।
- **उत्तरवर्ती पांड्यों की उपाधियाँ: कोदंड रमण, कोलाकलां, पुवानेकविरन और कलियुग रमण।**
- **शुद्ध तमिल में उपाधियाँ: सेम्बियन, वनावन और थेन्नावन।**

शाही अधिकारी:

शाही अधिकारी	पदनाम
उत्तरमन्त्री	प्रधानमंत्री
एलुट्टू मंडपम	शाही सचिवालय
अकाप्परिवारा मुदालिकल	राजाओं के निजी परिचारक
मारन आइनान, सत्तन गणपति, एनाथी सत्तन, तीरा तिरान, मूर्ति आइनान	अधिकारी
पल्ली वेलन, परांतकन पल्लीवेलन, मारन अदित्तन और तेनावन तमिझावेल	सैन्य कमांडरों की उपाधियाँ
मणिकवसागर, कुलचिरैयार और मारनकारी ने मंत्री के रूप में काम किया।	

राजनीतिक विभाजन

- पांड्य मंडलम या पांड्य नाडु में कई **वलनाडु शामिल थे।**
- वलनाडु कई **नाडु** और **कुर्रम** में विभाजित थे।
  - नाडु और कुर्रम में **मंगलम, नगरम, उर** और **कुडी जैसी बस्तियाँ थीं**, जिनमें विभिन्न सामाजिक समूह रहते थे।
  - नाडु के प्रशासनिक अधिकारी **नट्टार थे।**
- **मंगलम** या **चतुर्वेदीमंगलम** सिंचाई सुविधाओं से युक्त ब्राह्मण बस्तियाँ थीं।
  - इन बस्तियों को शाही नाम और देवताओं के नाम दिए गए।
  - प्रभावशाली ब्राह्मणों के पास **ब्रह्मधि राजन** और **ब्रह्मरायण** जैसी सम्मानजनक उपाधियाँ थीं।
- **मनुर (तिरुनेलवेली जिला) के** एक शिलालेख में **ग्राम प्रशासन** का विवरण मिलता है।
  - यह चोलों के स्थानीय शासन के समान था, जिसमें ग्राम सभाएँ और समितियाँ शामिल थीं। नागरिक और सैन्य दोनों शक्तियाँ एक ही व्यक्ति में निहित थीं।

सिंचाई

- पांड्य मंडलम में एक अनोखा राजनीतिक विभाजन **कुलक्किल है,** अर्थात् सिंचाई तालाब के तहत क्षेत्र। उदाहरण के लिए, मदुरै को एक शिलालेख में **मदक्क्कुलक्किल मदुरै** के रूप में वर्णित किया गया है।
  - पांड्यों द्वारा निर्मित सिंचाई स्रोतों का नाम शाही परिवार के सदस्यों के नाम पर रखा गया था जैसे कि **वासुदेव पेरारू, वीरपांड्य पेरारू, श्रीवल्लब पेरारू** और **परकीरामा पांड्या पेरारू।**
  - तालाबों का नाम **तिरुमलेरी, मारानेरी, कालियानेरी** और **कादानेरी रखा गया।**

Search on TG: @apna_pdf

- वैगई नदी तल के **सेंदन मारन शिलालेख में** नदी के पानी को वितरित करने के लिए पांड्यों द्वारा निर्मित एक नहर का उल्लेख है।

पांड्यों के अधीन भूमि

- 14 और 24 फीट की छड़ों का उपयोग करके भूमि का सर्वेक्षण किया गया।
- **नट्टार ने** कर लगाने के उद्देश्य से खेती योग्य भूमि की गुणवत्ता का आकलन किया।
- **सलाबोगम** - ब्राह्मणों को सौंपी गई भूमि।
- **तट्टारकणी** - लोहारों को सौंपी गई भूमि।
- **तक्कु-मणियम** - बढ़ई को सौंपी गई भूमि।
- **भट्टवृत्ति - शिक्षा प्रदान करने** के लिए ब्राह्मण समूह को दान की गई भूमि।

व्यापार

- दक्षिणी भारत के पश्चिमी तट पर अरब बस्तियों के कारण तमिझ देश के पूर्वी तट तक उनके व्यापार संबंध का विस्तार हुआ। यहाँ से मसालों, मोती, जवाहरात, घोड़े, हाथी और पक्षियों का व्यापार होता था।
- **व्यापारियों को निकमत्तोर, नानादेसी, टिकाई-अयिरातु-ऐनुत्रुवर, ऐनुत्रुवर, मणिकिरामत्तार** और **पतिनेन-विश्यत्तार** कहा जाता था।
  - **तेरु** वह स्थान था जहाँ व्यापारी रहते थे।
- **वसफ (फ़ारसी इतिहासकार)** ने **घोड़ों के व्यापार** का उल्लेख किया है। घोड़ों का व्यापार करने वालों को **कुदिराई-चेट्टी कहा जाता था।**
- पांड्यों के अधीन सबसे व्यस्त बंदरगाह शहर पूर्वी **तट पर कयालपट्टिनम** (अब तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले में) था। **चिंतामणि, मायलापुर, तिरुवोत्रियूर, तिरुवदानई और महाबलीपुरम** अन्य व्यस्त तटीय व्यापारिक केंद्र थे।
- **सोने के सिक्कों का** उपयोग व्यापार के माध्यम के रूप में किया जाता था।
  - इसे **कासु, पलानकासु, अनरादुनारपलंकासु, कानम, कलानकु** और **पोन कहा जाता था।**
- व्यापारियों के नामधारी **देवता अयिरट्टू अयनुरुवर उदय्यार** और **सोक्का नायकी अम्मन थे।**
- समय-समय पर आयोजित होने वाले मेलों को **तावलामिन बस्तियाँ कहा जाता था।**

शिक्षा एवं साहित्य

- मंदिर भक्ति के प्रमुख केंद्र थे। उनमें भजन सुनाने और थिएटरों में नाटकों के मंचन के लिए गायकों की नियुक्ति के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा दिया गया।
- ब्राह्मणों ने **कादिगई, सालई** और **विद्यास्थानम** में संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन किया।
- महत्त्वपूर्ण तमिल साहित्यिक ग्रंथ: **तिरुप्पावै, तिरवेम्पावै, तिरुवसागम, तिरुक्कोवै और तिरुमंतीराम।**
- महाकाव्य 'शिलप्पादिकारम', जो कन्नगी और कोवलन की कहानी कहता है, पांड्यों के अधीन विकसित समृद्ध साहित्यिक संस्कृति का प्रमाण है।

धर्म

- पांडय पहले जैन धर्म में विश्वास करते थे लेकिन बाद में उन्होंने शैव और वैष्णव धर्म अपना लिया।
- **सद्यवर्मन सुंदरपांडियन का श्रीरंगम मंदिर** में अभिषेक किया गया था और इसकी स्मृति में उसने मंदिर को **विष्णु की एक मूर्ति दान में दी थी।**
- पांड्यों ने वैदिक प्रथाओं को संरक्षण दिया:
  - **पल्यागसलाई मुदुकुडुमी पेरुवलूठी** (जिन्होंने कई वैदिक अनुष्ठान किए) की पहचान संगम काल के पांड्यों से की जाती है।
  - **वेल्विक्कुडी ताम्र पत्र** के साथ-साथ शिलालेख स्रोतों में अश्वमेध यज्ञ, हिरण्यगर्भ और वाजपेय यज्ञ जैसे अनुष्ठानों का उल्लेख है।
- कुछ राजा कट्टर **शैव थे** और कुछ कट्टर **वैष्णव थे।** दोनों संप्रदायों के मंदिरों को संरक्षण दिया गया।

मंदिर

- पांड्यों ने विभिन्न प्रकार के मंदिरों का निर्माण कराया - सेपुलक्रल मंदिर (जैसे सुंदरपांडिस्वरम), चट्टानों को काटकर बनाए गए गुफा मंदिर और संरचनात्मक मंदिर।
- **प्रारंभिक पांड्य:** चट्टानों को काटकर बनाए गए प्रमुख **गुफा मंदिर पिल्लयारपट्टी, तिरुमेयम, कुंत्रक्कुडी, तिरुचेंदूर, कलुगुमलाई, कन्याकुमारी और सित्तनवासल** में मिलते हैं। **चित्र सित्तनवासल, अरित्तापट्टी, तिरुमलाईपुरम और तिरुनेदुनकरई के** मंदिरों में चित्र पाए जाते हैं।
- **मध्यकालीन पांड्यों और उत्तरवर्ती पाण्ड्यों** कोई नया मंदिर नहीं बनवाया, लेकिन मौजूदा मंदिरों को बनाए रखा, उनमें गोपुर, मंडप और परिक्रमा पथ का निर्माण करके उन्हें बड़ा किया।
- विशाल आकार के अखंड अलंकृत स्तंभ, मध्यकालीन पांड्य शैली की अनूठी विशेषता है।
- पांड्यों ने विशेष रूप से **मीनाक्षी मंदिर को संरक्षण दिया** और गोपुरों और मंडपों को जोड़कर इसके परिसर का विस्तार करना जारी रखा।

पांड्य साम्राज्य का पतन

1310 **ई.** में **मारवर्मन कुलशेखर प्रथम** की मृत्यु के बाद, उसके पुत्रों **वीर पांड्य चतुर्थ** और **सुंदर पांड्य चतुर्थ** के बीच सिंहासन के लिए संघर्ष हुआ, जबकि **दिल्ली की खिलजी सल्तनत ने** उनके क्षेत्र पर कई बार आक्रमण किया।

- होयसल **राजा बल्लाल तृतीय ने** भी इस स्थिति का फायदा उठाने की कोशिश की, लेकिन वह खिलजियों से हार गया।
- पंड्या बंधुओं ने अलग-अलग समय पर खिलजियों से मदद माँगी लेकिन अंततः उनके अधिकांश क्षेत्र पर खिलजियों का कब्जा हो गया।
- 1323 ई. तक पांड्य साम्राज्य दक्षिण अरकोट के एक छोटे से क्षेत्र तक सीमित रह गया था। सोलहवीं शताब्दी के अंत में, पांडियन राजवंश अचानक भारतीय ऐतिहासिक परिदृश्य से हमेशा के लिए गायब हो गया।

भारत में इस्लाम का आगमन

- **कदीसिया के युद्ध (Battle of Qadisiya) ने** अरब सेनाओं को अल-हिंद की सीमा पर ला दिया। उन्होंने उत्तर-पश्चिम में संघर्ष किया और लगभग चार शताब्दियों तक छोटे-छोटे हिंदू राज्यों से संघर्ष किया।
- **मुहम्मद-बिन-कासिम ने** अंततः **712 ई. में राजा दाहिर को हराकर सिंध में अरब शासन स्थापित किया।**

Search On TG: @apna_pdf

फारस की खाड़ी में दक्षिण भारतीय बस्तियाँ थीं, जबकि अरब भी **मालाबार** और **कोरोमंडल** तट पर बस गए। मालाबार महिलाओं से विवाह करके पश्चिमी तट पर बसने वाले अरबों को **मपिल्लै** (दामाद) कहा जाता था।

भारत में गजनवी

सुबुक्तगीन (तुर्की गुलाम सेनापति) गजनवी वंश का संस्थापक था और उसने हिंदू शाही वंश की सीमांत चौकी के खिलाफ कई अभियानों का नेतृत्व किया था।

- **सुबुक्तगीन के** पुत्र **महमूद गजनी ने** भारत पर **17 बार आक्रमण किया।** इस्लाम के प्रति उसकी सेवा के पुरस्कार के रूप में उसे अब्बासिद खलीफा से **'यामीन अल-दावला' की उपाधि मिली। इस प्रकार यह राजवंश यामिनी** कहलाया।
  - उसने **1001 ई.** में **जयपाल (हिंदूशाही शासक) को पराजित किया।**
  - उसने **वाहिंद के युद्ध (1008-1009 ई.) में आनंदपाल (जयपाल का पुत्र) को** पराजित किया।
  - **नगरकोट, थानेसर, मथुरा** और **कन्नौज** शहरों पर हमला किया और **1025 ई.** में **सोमनाथ मंदिर को लूटा।**
- महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद गजनवी साम्राज्य, **गजनी** और **पंजाब तक ही सीमित रह गया**, जिसे अंततः हेरात के पूर्व के पहाड़ी क्षेत्र से उनके जागीरदारों **घुरीदों** ने उखाड़ फेंका था।

भारत में घुरीद (GHURIDS IN INDIA)

- मुहम्मद गौरी या मुहम्मद गोरी का पहला आक्रमण मुल्तान के विरुद्ध था, जिस पर अंततः 1175 ई. में उसका कब्जा हो गया।
- उसे गुजरात में **राजा भीमदेव द्वितीय (चालुक्य/सोलंकी वंश) ने** 1178-79 **ई.** में माउंट आबू के निकट **कयादरा के युद्ध में पराजित किया था।** इस हार के बाद गौरी ने अपने अभियान की दिशा बदल दी और सिंध तथा पंजाब में अपनी स्थिति मजबूत कर ली।
- 1180 और 1190 के दशक में गौरी ने पंजाब, सिंध और हरियाणा के आधुनिक प्रांतों में सैन्य दुर्ग स्थापित किए।
- उसने **पृथ्वीराज के साथ दो युद्ध लड़े:**
  - **तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)**: पृथ्वीराज ने यह युद्ध जीत लिया, लेकिन वह इस युद्ध को सीमांत युद्ध मानकर **अपनी स्थिति मजबूत करने में विफल रहा।** उसे उम्मीद नहीं थी कि गुरीद लगातार हमले करेंगे।
  - **तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)**: यह भारतीय इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था। इस युद्ध में, पृथ्वीराज को करारी हार का सामना करना पड़ा और अंततः पकड़ लिया गया। माना जाता है कि बाद में, गौरी ने उसे अजमेर की गद्दी पर पुनः बैठाया, लेकिन राजद्रोह के आरोप में बाद में उसे फाँसी दे दी गई और गौरी के भरोसेमंद सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत में अपना सूबेदार नियुक्त किया।
  - **चंदावर का युद्ध (1194 ई.):** मौहम्मद गोरी ने **जयचंद** (कन्नौज के गहड़वाल राजा) को पराजित किया।
- उसने गहड़वालों का खजाना लूट लिया, बनारस शहर पर कब्जा कर लिया और उसके मंदिरों को अपवित्र कर दिया।
- 1203 ई. के बाद, अपने भाई की मृत्यु के बाद वह भारत से चला गया।
- **कुतुबुद्दीन ऐबक** (गौरी का गुलाम) ने अंततः 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत की स्थापना की।

❖ ❖ ❖

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH

UPSC OPTIONAL COURSE 2025 Hinglish / हिन्दी

Anthropology | PSIR | History | Sociology
Geography | Public Administration | Mathematics | हिन्दी साहित्य

Starts From ₹ 8,999/-

COUPON CODE PWOIAS500 FOR EXTRA DISCOUNT

9920613613 | pw.live

Search On TG: @apna_pdf

2 दिल्ली सल्तनत

दिल्ली सल्तनत के शासकों का शासनकाल				
गुलाम या मामलुक शासन (1206-1290 ई.)	**खिलजी शासन (1290-1320 ई.)**	**तुगलक शासन (1320-1414 ई.)**	**सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)**	**लोदी वंश (1451-1526 ई.)**
कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.) **शमसुद्दीन इल्तुतमिश** (1210-1236 ई.)	**जलालुद्दीन खिलजी** (1290-1996 ई.)	**गियासुद्दीन तुगलक** (1320-1324 ई.)	**खिज्र खाँ** (1414-1421 ई.)	**बहलोल लोदी** (1451-1489 ई.)
रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)	–	–	–	–
नासिरुद्दीन महमूद द्वितीय (1246-1266 ई.)	**अलाउद्दीन खिलजी** (1296-1316 ई.)	**मुहम्मद तुगलक** (1324-1351 ई.)	–	**सिकंदर लोदी** (1489-1517 ई.)
गियासुद्दीन बलबन (1266-1287 ई.)	**मुबारक शाह खिलजी** (1316-1320 ई.)	**फिरोज तुगलक** (1351-1388 ई.)	–	**इब्राहीम लोदी** (1517-1526 ई.)

परिचय

महमूद गजनवी और **मुहम्मद गौरी** के आक्रमणों के परिणामस्वरूप भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई।

गुलाम या मामलुक वंश (1206-1290ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

परिचय

- **तराइन के द्वितीय युद्ध (1192 ई.; करनाल, हरियाणा)** के बाद मुइज़ुद्दीन मुहम्मद (जिसे **मुहम्मद गौरी के नाम से भी जाना जाता है),** गजनी लौट गया और अपने भरोसेमंद **गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक** को सूबेदार नियुक्त कर गया।
- **गौरी** की मृत्यु के बाद **ऐबक** ने गजनी से संबंध तोड़ लिए और भारत में **गुलाम वंश की स्थापना की** और स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया। उसने **लाहौर को** अपने राज्य की राजधानी बनाया।
  - इसने भारत को मध्य एशियाई राजनीति से दूर रखा।
- उसे उसकी उदारता और उदार दानशीलता के लिए **"लाख बख्श"** (लाखों का दानकर्ता) के नाम से भी जाना जाता है।
- अफगानिस्तान के एक तुर्की सेनापति **मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी** ने बिहार और बंगाल पर विजय प्राप्त करने में उसकी सहायता की।
- **बख्तियार खिलजी पर** बिहार के **नालंदा विश्वविद्यालय को नष्ट** करने का आरोप है।
- **1210 ई. में चौगान** (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरकर ऐबक की मृत्यु हो गई।

मामलुक मतलब संपत्ति (गुलाम का अरबी पदनाम)।

स्थापत्य कला:

- कुतुबुद्दीन ऐबक ने दो मस्जिदों का निर्माण कराया: दिल्ली में **कुव्वत-उल-इस्लाम** और अजमेर में **अढ़ाई दिन का झोंपड़ा।**
- उसने दिल्ली में, सूफी संत **ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी** को समर्पित **कुतुब मीनार** का निर्माण शुरू किया। मीनार का निर्माण पूरा होने से पहले ऐबक की मृत्यु हो गई, जिसे बाद में इल्तुतमिश ने पूरा किया।।

साहित्य: उसके संरक्षण में **हसन निजामी** ने **ताज-उल-मासिर** (दिल्ली सल्तनत की पहली इतिहास पुस्तक) लिखी।

शमसुद्दीन इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

परिचय:

- **इल्तुतमिश** ऐबक का गुलाम और दामाद था और ऐबक के पुत्र को हराने के बाद सिंहासन पर बैठा। इसलिए उसे **'गुलाम का गुलाम'** भी कहा जाता है। वह **इलबरी जनजाति** का था।

सैन्य चुनौतियाँ:

- **गजनी:** उस समय गजनी पर ख्वारिज्मी शाह का कब्जा था, जिसने सिंधु तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
  - **मुल्तान:** ऐबक के गुलाम, कुबाचा ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
  - **ग्वालियर एवं अजमेर** : राजपूतों ने स्वतंत्रता का दावा किया।
  - **बिहार और बंगाल:** अली मर्दन खान ने स्वयं को बादशाह घोषित कर दिया।

Search on TG: @apna_pdf

विजय:

- इल्तुतमिश को उत्तर भारत में **तुर्की विजय का वास्तविक संयोजक** माना जाता है।
- उसने ग्वालियर और बयाना पर पुनः कब्जा करने का लक्ष्य रखा और **गुजरात के चालुक्यों** के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करने का प्रयास करते हुए रणथंभौर, जालौर और नागदा के खिलाफ सेना भेजी, जिसमें **सीमित सफलता मिली।**
- भारत पर **पहला मंगोल आक्रमण** इल्तुतमिश शासनकाल में हुआ था। लेकिन उसने मंगोलों के खिलाफ अपनी लड़ाई में, मध्य एशियाई शासक ख्वारिज्म जलालुद्दीन का समर्थन न करके मंगोलों (चंगेज खान) से भारत को बचाया। **[यूपीएससी 2022, 2021]**
- उसने कुबाचा को मुल्तान से खदेड़ दिया और सिंधु तक सल्तनत की सीमाओं को सुरक्षित कर लिया, जबकि मंगोलों ने ख्वारिज्मी साम्राज्य को नष्ट कर दिया।

प्रशासन:

- **राजधानी को लाहौर** से **दिल्ली** स्थानांतरित किया। बुखारा, समरकंद और बगदाद जैसे केंद्रों से लाए गए **कुलीन सैन्य गुलामों** (**बंदगान**) को गवर्नर और जनरल के रूप में नियुक्त किया।
- **उसने सल्तनत का प्रशासन चलाने के लिए चहलगानी / चालीसा (40 सदस्यों की परिषद) का गठन किया।**
- **ताँबे (जीतल)** और **चाँदी के सिक्के (टंका)** शुरू किए जो सल्तनत काल के दो बुनियादी सिक्के थे।
- **कुतुब मीनार**, जो एक विशाल विजय मीनार है, उसके शासनकाल के दौरान पूरी हुई।
- उसने भारत में **इक्ता प्रणाली की शुरुआत** की।
- **इल्तुतमिश खलीफा से मान्यता पत्र प्राप्त करने वाला पहला सुल्तान था।**

इक्ता प्रणाली:

- इक्ता एक अरबी शब्द है और इसकी शुरुआत फारस (ईरान) में हुई थी।
  - **खलीफा प्रशासन** में इसका उपयोग सैन्य संचालन के वित्तपोषण और नागरिक एवं सैन्य अधिकारियों को भुगतान करने के तरीके के रूप में किया जाता था।
- शासकों ने अपने अमीरों (**उमरा**) को नकदी के बदले में भूमि अनुदान (**इक्ता**) सौंपे।
  - उक्त अमीरों (जिन्हें **मुक्ति और वली के नाम से जाना जाता था**) ने इन क्षेत्रों से लगान एकत्र किया।
  - एकत्र किया गया लगान उनके स्वयं के खर्च, **सैनिकों** (जो उनके द्वारा रखे गए) **को भुगतान करने** के लिए था और अधिशेष **(फवाजिल)** को केंद्र में भेजा जाता था।
- यह **गैर-वंशानुगत** था और इसका तात्पर्य भूमि पर अधिकार नहीं था, लेकिन **फिरोज शाह तुगलक** के शासनकाल में यह वंशानुगत हो गया।

ये भूमि अनुदान **हस्तांतरणीय थे**, इक्ता धारक को हर तीन या चार साल में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरित किया जाता था।

उसने अपनी पुत्री **रजिया सुल्तान** को अपना उत्तराधिकारी नामित किया, जो तत्कालीन पुरुष प्रभुत्व के मध्य एक अपरंपरागत निर्णय था।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

परिचय:

- सल्तनत की एकमात्र महिला मुस्लिम शासक।
- **इब्नबतूता** के अनुसार, उसने **घोड़ों की सवारी करके, शस्त्र धारण करके, पर्दा प्रथा को त्यागकर, पुरुष पोशाक** पहनकर और युद्ध में **सेना का नेतृत्व करके तत्कालीन मानदंडों का उल्लंघन किया।**

विजय और प्रशासन

- उसने **रणथंभौर के खिलाफ (राजपूतों के खिलाफ)** सेना भेजी।
- एक गैर-तुर्क को उच्च पद पर पदोन्नत करने के उसके प्रयासों का विरोध हुआ।
- उसके शासनकाल के दौरान राजशाही और तुर्क प्रमुखों (**चहलगानी) के बीच सत्ता संघर्ष शुरू हुआ।**
- एक गुलाम **जलालुद्दीन याकूत** को **अस्तबल का स्वामी 'अमीर-ए-आखूर' के** पद पर **पदोन्नत करने से तुर्की** अमीर नाराज हो गए।
- **मृत्यु**: बाद में दक्षिणी पंजाब में विद्रोह को दबाने के दौरान उसकी हत्या कर दी गई।

बलबन (1266-1287 ई.)

परिचय

- राजशाही और तुर्क प्रमुखों के बीच संघर्ष तब समाप्त हुआ जब 1265 **ई.** में एक तुर्की प्रमुख **बलबन** (जिसे **उलुग खाँ के नाम से भी जाना जाता है**) सिंहासन पर बैठा।
- वह **आलोचना के प्रति असहिष्णु** और अत्यंत **सत्तावादी था।** अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के बाद उसने **जिल -ए- इलाही (Zil-e-Ilahi)** की उपाधि धारण की।

प्रशासन

- उसने प्रशासन में **चालीसा/चहलगानी** के बढ़ते प्रभाव के कारण उसे समाप्त कर दिया।
- उसने **सिजदा** (झुककर सुल्तान को अभिवादन करना) और **पैबोस** (सुल्तान के पैर चूमना) जैसी प्रथाओं को लागू किया - यह इस बात का प्रतीक था कि अमीर उसके बराबर नहीं थे। ये दोनों प्रथाएँ ईरानी मूल की थीं और इन्हें **गैर-इस्लामी** माना जाता था।
- उसने सरकारी विभागों में **गुप्तचरों का** एक व्यापक नेटवर्क बनाए रखा।
- उसका लक्ष्य **निष्पक्ष न्याय** सुनिश्चित करके **जनता का विश्वास हासिल करना था।** यहाँ तक कि उसके शासनकाल में सर्वोच्च अधिकारियों को भी जवाबदेह ठहराया गया।
- बलबन ने सरकारी पदों के लिए **तुर्क अमीरों को प्राथमिकता दी** और भारतीय मुसलमानों को उच्च पदों से बाहर रखा।
- **कानून एवं व्यवस्था:** अवध और **गंगा-जमुना दोआब** क्षेत्र की सड़कों पर लुटेरों और डकैतों से निपटने के लिए बलबन ने **'रक्त और लौह'** की नीति अपनाई एवं मेवों (मेवात क्षेत्र के निवासियों) का दमन किया, जिन्होंने दिल्ली के बाहरी इलाकों को लूटा था। दिल्ली के चारों ओर **सैन्य चौकियाँ (थाने)** स्थापित स्थापित कीं।

Search On TG: @apna_pdf

रक्त और लौह नीति: कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी प्रकार के कठोर तरीकों, यहाँ तक कि रक्तपात करना।

- सड़कों की सुरक्षा और राजपूत जमींदारों को नियंत्रित करने के लिए **दोआब और कटेहर (आधुनिक रुहेलखंड)** में **अफगान सैनिकों की कॉलोनियों** को बसाया गया था।
- बलबन ने **सैन्य विभाग (दीवान-ए-अर्ज)** को पुनर्गठित किया और उन सैनिकों को पेंशन प्रदान की जो अब सेवा के लिए उपयुक्त नहीं थे।
- **आंतरिक और बाहरी अशांति (मुख्य रूप से मंगोलों द्वारा की जाने वाली)** से निपटने के लिए एक **मजबूत केंद्रीकृत सेना** बनाए रखी।

मंगोल और उत्तर-पश्चिम सीमा की समस्या:

- मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी पहाड़ी दर्रों को छोड़कर, जिसके माध्यम से **तुर्क, हूण और सीथियन** जैसे आक्रमणकारियों ने भारत में प्रवेश किया, भारत की प्राकृतिक सीमाओं ने विशेष सुरक्षा प्रदान की। इस प्रकार, पंजाब और सिंध की उपजाऊ घाटियों को सुरक्षित करने के लिए **काबुल, गजनी और कंधार** जैसे क्षेत्रों को नियंत्रित करना महत्त्वपूर्ण था।
- पश्चिम एशिया में अस्थिरता के दौर में **दिल्ली सल्तनत अपनी सीमाओं को सुरक्षित नहीं रख सका।** उसे बढ़ते **ख्वारिज्मी साम्राज्य** के साथ बढ़ते तनाव का सामना करना पड़ा, जिसने **घुरीदों(Ghurids)** के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था। **1218 ई.** में **चंगेज खाँ** के आगमन के साथ स्थिति और अधिक खराब हो गई, जिसने ख्वारिज्मी साम्राज्य पर भयंकर हमले किए और काफी आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षति पहुँचाई।
- **मंगोल आक्रमण** के समय, **दिल्ली सल्तनत** शहजादों और विद्वानों की शरणस्थली बन गया। यह इस्लाम के केंद्र के रूप में उभरा।

खिलजी वंश (1290 ई. से 1320 ई.)

खिलजी, मिश्रित तुर्की-अफगान मूल के थे। वे घुरीदों के आक्रमण के समय भारत आए और उन्नति के अवसर की तलाश में बंगाल और बिहार चले गए। इसके अलावा, कुछ को मंगोल चुनौती से निपटने के लिए उत्तर-पश्चिम में सैनिकों के रूप में तैनात किया गया था।

जलालुद्दीन खिलजी (1290-1296 ई.)

परिचय

बलबन के उत्तराधिकारी की अयोग्यता और अमीरों की साजिश के बीच, सेनापति **मलिक जलालुद्दीन खिलजी** 1290 **ई.** में सिंहासन पर बैठा और खिलजी वंश की स्थापना की।

प्रशासन:

- जलालुद्दीन खिलजी ने **तुर्कों को न केवल** उच्च पदों से बाहर रखा बल्कि **उनके एकाधिकार को भी समाप्त** कर दिया।
- उसने यह कहते हुए **बलबन की सख्त नीतियों को नरम किया** कि हिंदू बहुमत के कारण राज्य पूरी तरह से इस्लामी नहीं हो सकता, इस प्रकार उसने **हिंदुओं** के प्रति **सहिष्णु दृष्टिकोण प्रदर्शित किया।**
- **मंगोल आक्रमण:** 1292 **ई.** में **हुलगु के पौत्र (मंगोल)** को हराया।
- **विजय: अलाउद्दीन खिलजी** (इलाहाबाद के निकट कड़ा मानिकपुर का गवर्नर) ने दक्कन में मालवा और यादव साम्राज्य की राजधानी देवगिरि पर सफलतापूर्वक आक्रमण किया।
- **मृत्यु:** उसके भतीजे और दामाद **अलाउद्दीन खिलजी ने उसकी हत्या कर दी**, जो बाद में सिंहासन पर बैठा।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

परिचय:

- अलाउद्दीन खिलजी एक असहिष्णु **सुल्तान** था (अपने पूर्ववर्ती **जलालुद्दीन** के विपरीत)।
- उसने **सिकंदर-ए-आजम** की उपाधि धारण की।

प्रशासन:

- पारंपरिक ग्राम प्रधानों को दरकिनार करते हुए सीधे किसानों से **केंद्रीकृत राजस्व संग्रहण** की नीति अपनाई। कर नीतियों में गरीबों पर बोझ डालने के बजाय **मुख्य रूप से अमीरों को लक्षित किया गया।**
- पारंपरिक **ग्राम अधिकारियों, खोतों (छोटे जमींदरों) और मुकद्दमों (ग्राम प्रधानों)** से उनके **पारंपरिक विशेषाधिकार छीन लिए गए।** उसने उन पर किसानों के समान कर लगाया और उन पर **चराई कर** और **गृह कर (हाउस टैक्स) लगाया।**
- उसने पूरे साम्राज्य में संचार व्यवस्था बनाए रखने के लिए **एक डाक प्रणाली की स्थापना की।**
- उसने अमीरों की गतिविधियों और चर्चाओं पर नजर रखने के लिए एक **गुप्तचर सेवा स्थापित की।**
- सोने के लालच में अनेक **अमीर मारे गए या बर्खास्त किए गए। उसने अपने ही परिवार के विद्रोही सदस्यों को दण्डित किया।** उनकी प्रसिद्ध उद्घोषणा की **'राजा का कोई रिश्तेदार नहीं होता'।**
- **मदिरा, नशीले पदार्थों और जुआ पर प्रतिबंध लगाया था।**

सैन्य अभियान

- अलाउद्दीन खिलजी तार्गी के नेतृत्व वाले **मंगोल आक्रमण के खिलाफ बचाव किया**, जिसने दिल्ली तक मार्च किया और शहर को घेर लिया था। **[यूपीएससी 2022]**
- **उत्तर भारतीय अभियान:**
  - **रणथंभौर** (1301 ई.), **चित्तौड़** (1303 ई.), **मालवा** (1305 ई.)
  - **देवगिरि:** 1307 **ई.** **(मलिक काफूर के तहत)**, 1314 **ई.** **सोमनाथ मंदिर को लूटा।**
  - **दक्कन और दक्षिण भारत के अभियान:** (मलिक काफूर का दक्षिण की ओर अभियान)
    - **काकतीय शासक** की पराजय: 1309 **ई.**
    - **होयसल शासक ने** खजाना समर्पित किया: 1310 **ई.**
    - **चिदंबरम, श्रीरंगम और मदुरै** के मंदिर शहरों को लूटा।
    - **पांड्य साम्राज्य के पतन ने** मदुरै में एक मुस्लिम राज्य का मार्ग प्रशस्त किया, जिसने दिल्ली सल्तनत के अधीनस्थ के रूप में कार्य किया।

सुधार:

- उसने **चेहरा (सैनिकों का विवरण या हुलिया)** और **दाग (घोड़ों को दागना)** प्रथा शुरू की।

Search on TG: @apna_pdf

- वह पहला सुल्तान था जिसने सैनिकों को लूट के हिस्से के बदले **नकद भुगतान किया।**
- अलाउद्दीन के पास दिल्ली के सभी शासकों की तुलना में **सबसे बड़ी स्थायी सेना** थी।

बाजार सुधार:

- उसने अकाल को कम करने और कीमतों को नियंत्रित करने के लिए **शाही अन्न भंडार में अनाज का भंडारण किया।**
- उसने मामूली वेतन पर एक बड़ी सेना को बनाए रखने के लिए अनाज, कपड़ा, फल जैसी वस्तुओं, पशुधन और यहाँ तक कि गुलामों और घोड़ों की **अधिकतम कीमतें निर्धारित** करके, **आवश्यक वस्तुओं की कम कीमतें सुनिश्चित कीं।**
- कालाबाजारी और जमाखोरी पर नजर रखने के लिए **व्यापक खुफिया नेटवर्क** के माध्यम से मूल्य नियंत्रण किया गया। मूल्य विनियमन उल्लंघनों के लिए **कड़े दंड लगाए गए।**

- **शाहना-ए-मंडी:** बाजार अधीक्षकों के माध्यम से बाजार कीमतों पर दैनिक रिपोर्ट ली जाती थी।
- **दीवान-ए-रियासत:** बाजार और कीमत को नियंत्रित करने के उद्देश्य से सृजित किया गया।

- **अलग बाजार:** कपड़ा, चीनी, जड़ी-बूटियाँ, सूखे मेवे, मक्खन और दीपक के तेल के लिए **सराय-ए-अदल;** दूसरा बाजार घोड़ों, दासों और मवेशियों के लिए था।
- **व्यापारियों की** एक रजिस्ट्री रखी गई थी, जिसमें उन्हें सराय-ए-अदल में निर्दिष्ट माल की मात्रा बेचने के लिए लिखित वचन देना अनिवार्य था।

कर व्यवस्था:

- **खराज** – यह एक कृषि कर था जो किसानों की उपज का लगभग 50 प्रतिशत होता था। खराज वसूलने के लिए एक विशेष पद सृजित किया गया, जिसे **मुस्तखराज कहा जाता था।**
- **बिस्वा (बीघा का 1/20 भाग)** का उपयोग खेती योग्य भूमि की माप और उसकी उत्पादकता की गणना के लिए किया जाता था।
- भूमि कर का भुगतान आमतौर पर नकद में किया जाता था, जिससे किसान मुद्रा बाजार में प्रवेश कर सकते थे जबकि **दोआब क्षेत्र में** भविष्य में अनाज की कमी के लिए अनाज पर कर वसूला जाता था।
- अलाउद्दीन ने किसानों पर दो अतिरिक्त कर भी लगाए:
  - **चराई कर (पशु चराने के लिए)** और **गढ़ी कर (आवास पर)।**
- उसने ग्राम प्रधान का उपकर **(किस्मत-ए-खूटी) समाप्त कर दिया।**

कला और स्थापत्यकला

- उसने अपने काल के कवियों, **अमीर खुसरो** और **मीर हसन दहलवी** का समर्थन किया।
  - **अमीर खुसरो को तूती-ए-हिंद** (भारत का तोता) की उपाधि से नवाजा।
  - **अमीर खुसरो द्वारा रचित खजाइन-उल-फुतुह** में अलाउद्दीन की विजयों का वर्णन है।
- **स्थापत्यकला**: उसने निम्नलिखित इमारतों का निर्माण कराया-
  - **अलाई दरवाजा (1311 ई.):** दिल्ली के महरौली स्थित कुतुब परिसर में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का दक्षिणी प्रवेश द्वार।
  - **सीरी किला (1303 ई.):** यह कुतुब परिसर के उत्तर में स्थित है।
  - **मस्जिद जमाइत खानम:** यह निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के परिसर के भीतर निर्मित है।
- **मृत्यु: 1316 ई. में** अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद खिलजियों का शासन धीरे-धीरे समाप्त हो गया और गाजी मलिक ने गयासुद्दीन तुगलक की उपाधि धारण कर सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

तुगलक वंश (1320 ई. से 1413 ई.)

गयासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई.)

परिचय:

- वह तुर्कों की **करौना जनजाति** से संबंधित था और तुगलक वंश का संस्थापक था।
- उसने सुल्तान बनने से पहले मंगोलों से सल्तनत की रक्षा की और दीपालपुर (पाकिस्तान) में अलाउद्दीन का **मुक्ता(Muqta)**(गवर्नर; एक इक्ता का प्रभारी) था।

विजय:

- उसने दक्कन में सल्तनत के नियंत्रण को मजबूत करने के लिए वारंगल के काकतीय शासक के खिलाफ सेना भेजी, जिसका नेतृत्व उसके पुत्र मुहम्मद बिन तुगलक ने किया।
- 1324 **ई.** में, उसने स्वयं पूर्वी और दक्षिणी बंगाल पर कब्जा करने के लिए एक सफल अभियान का नेतृत्व किया।

प्रशासन:

- अमीरों के साथ सुलह की नीति अपनाई।
- वह **नहरों का निर्माण कराने** वाला पहला सुल्तान था।
- गयासुद्दीन तुगलक ने राहत उपाय (अतिरिक्त कर, मवेशी कर आदि से छूट) प्रदान करके किसानों और ग्राम प्रधानों का दिल जीतने की कोशिश की।
- **स्थापत्यकला:** दिल्ली में **तुगलकाबाद किले का निर्माण** गयासुद्दीन तुगलक ने (1321 **ई.** में) करवाया था।
- **साहित्य: अमीर खुसरो की "तुगलकनामा"** गयासुद्दीन तुगलक के साथ-साथ अन्य तुगलक शासकों की जीवनी है।
- **मृत्यु:** उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र उलुग खाँ/मुहम्मद बिन तुगलक गद्दी पर बैठा।

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई.)

परिचय: उसका शासनकाल दिल्ली सल्तनत के **चरमोत्कर्ष और पतन** की शुरुआत, दोनों के लिए जाना जाता है।

मोरक्को के यात्री **इब्न-बतूता ने चीन** में उसके दूत के रूप में कार्य किया।

प्रशासन:

- **खुत और मुकद्दम** (ग्राम प्रधान) की भूमिकाओं को कम करने के लिए, उसने **अलाउद्दीन खिलजी की नीति को उलट दिया।** उसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि राज्य को भू-राजस्व का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त हो।

Search On TG: @apna_pdf

- राजस्व में राज्य की हिस्सेदारी **50% रही**, लेकिन इसे मनमाने ढंग से निर्धारित किया गया था। उपज को मुद्रा में बदलने के लिए कीमतें भी मनमाने ढंग से निर्धारित की गईं।
- उसने किसानों को बेहतर फसलों की खेती करने हेतु प्रेरित करने के लिए ऋण **(जिसे 'तकावी' कहा जाता था)** प्रदान करके, **कृषि को बढ़ावा देने** वाले एक अलग विभाग **"दीवान-ए-अमीर-कोही"** की स्थापना की। अयोग्य और भ्रष्ट अधिकारियों के कारण यह पहल विफल रही।
- उसने योग्यता और दक्षता के आधार पर विभिन्न पृष्ठभूमियों के अमीरों को नियुक्त किया।
- **धार्मिक नीति**: उसने हिंदुओं और जैन विद्वानों को संरक्षण दिया, विशेष रूप से **जिनप्रभा सूरी (जैन) को,** जो 1328 ई. में उसके दिल्ली दरबार में आए थे। उसने जैन भिक्षुओं के लिए एक नए **बसदी उपाश्रय** (जैन भिक्षुओं के लिए एक विश्राम गृह) के निर्माण का आदेश दिया। वह **होली के त्यौहार में भाग लेने वाला पहला सुल्तान था।**

मुहम्मद बिन तुगलक के प्रमुख प्रयोग:

- 1326 **ई.** में गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में **कराधान** और उपकर में वृद्धि।
- उसने दक्षिण भारत पर बेहतर नियंत्रण के लिए सबसे पहले **राजधानी को दिल्ली से देवगिरि (दौलताबाद) स्थानांतरित किया** लेकिन यह स्थानांतरण विनाशकारी साबित हुआ।
- उसने 1330 ई. में एक **सांकेतिक मुद्रा शुरू की**, जो **चाँदी के टंका** के बराबर मूल्य के, **कांस्य के सिक्के थे।** हालाँकि, उसने ताँबे की मुद्रा भी शुरू की, लेकिन अंततः दोनों को **वापस ले लिया** (1329 ई. में) क्योंकि इसके परिणामस्वरूप **जालसाजी** और **मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई।**
- खुरासान और इराक को जीतने के लिए **खुरासान अभियान (1329 ई.)** का प्रस्ताव रखा, जिसे **बाद में त्याग दिया गया।**
- चीनी घुसपैठ को रोकने के लिए **कुमाऊँ की पहाड़ियों में कराचिल अभियान** (1333 ई.) शुरू किया गया।

उसके शासनकाल के दौरान दक्षिण भारत में राज्यों का उदय:

- मदुरै (1335 ई.) जलालुद्दीन शाह के अधीन।
- विजयनगर(1336 ई.) हरिहर और बुक्का के अधीन।
- वारंगल (1336 ई.) कन्हैया के अधीन।
- बहमनी (1341-1347 ई.) हसन गंगू के अधीन।

मुहम्मद बिन तुगलक जब सिंध की ओर मार्च कर रहा था तभी 1351 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। इस पर **बदायूँनी** ने टिप्पणी की कि **"राजा को अपनी प्रजा से और प्रजा को अपने राजा से मुक्ति मिल गई।"**

फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 ई.)

विजय:

- फिरोज शाह ने साम्राज्य विस्तार के लिए कोई युद्ध नहीं छेड़ा लेकिन, उसने विद्रोहों को कुचलकर अपना अधिकार कायम रखा। उसके शासनकाल के दौरान दो मंगोल आक्रमणों को विफल कर दिया गया।
- उसने **दक्षिण भारत** और दक्कन पर प्रभुत्व स्थापित करने से **बचने का प्रयास किया।**

प्रशासन:

- उसने सेना और अमीरों (इक्ता सहित) के लिए वंशानुगत सिद्धांतों को लागू किया, उसने पुत्रों, दामादों अथवा गुलामों को उत्तराधिकार की अनुमति दी, उसने वफादारी सुनिश्चित की और विद्रोह को रोका।
- **सैनिकों को नकद भुगतान नहीं किया जाता था** बल्कि गाँवों का भू-राजस्व सौंपा जाता था (मुहम्मद बिन तुगलक की नीति के विपरीत)।
- **वकील-ए-दर** पद का सृजन किया जो **अदालत की मर्यादा** और अमीरों की प्राथमिकता के लिए जिम्मेदार था।
- **उसने एक लोक निर्माण विभाग** बनाया, जो **फतेहाबाद, हिसार, फिरोजपुर, जौनपुर और फिरोजाबाद** शहरों में निर्माण कार्य के लिए जिम्मेदार था। इसके अलावा उसने:
  - **उसने पाँच नहरों का निर्माण कराया** जिनमें **सतलज नदी से हांसी तक** एक नहर और दूसरी **यमुना नहर शामिल थी।**
  - उसके शासनकाल के दौरान **अशोक के** दो **स्तंभ** दिल्ली लाए गए, एक **मेरठ से** और दूसरा **टोपारा से।**
- **मुक्तियों (प्रांतीय गवर्नरों) को** पिछले शासकों के शासनकाल में **कठोर ऑडिट का** सामना करना पड़ा, लेकिन फिरोज ने इन उपायों को आसान बना दिया।
- भारत में **फलों की गुणवत्ता** में सुधार को प्राथमिकता दी गई और दिल्ली के पास 1,200 बगीचे लगाए गए।
- **बड़ी संख्या में गुलाम** की नियुक्ति की और **गुलामों के लिए एक विभाग (दीवान-ए-बंदगान) की स्थापना की**
  - गुलाम **हस्तशिल्प** का काम करते थे।
  - गुलाम अंगरक्षकों के रूप में काम करते थे तथा व्यक्तिगत सेवाएँ प्रदान करते थे।
- उसने गरीबों के लिए अस्पतालों की स्थापना की जिन्हें **"दारुल-शफा" के नाम से जाना जाता था।**
  - **दीवान-ए-खैरात,** गरीब लड़कियों की शादी में मदद करता था।
- उसने दो नए सिक्के चलाए:
  - **अद्धा** (एक जीतल के 50% के बराबर) और **बिख** (एक जीतल के 25% के बराबर)।

धर्म:

- **धर्मशास्त्रियों को प्रसन्न करने** के लिए अनेक धर्मशास्त्रियों को उच्च पदों पर नियुक्त किया गया। उन्होंने न्यायपालिका और शिक्षा प्रणाली पर नियंत्रण बनाए रखा।
- फिरोज शाह तुगलक ने **जजिया** को एक **अलग कर के रूप में लगाया गया था।** यह पहले भू-राजस्व के साथ ही एकत्र किया जाता था।

कराधान नीति

- फिरोजशाह तुगलक ने उसने इस्लामी कानून द्वारा स्वीकृत चार कर लगाए: **खराज** (भूमि कर); **खम्स** (युद्ध में लूटी गई संपत्ति का 1/5 भाग); **जजिया** (हिंदुओं पर धार्मिक कर); **जकात** (मुसलमानों की आय का 2½ प्रतिशत, जो मुस्लिम प्रजा के कल्याण और उनके धर्म के लिए उपयोग किया जाता था)।
- वह **शर्ब (सिंचाई कर)** लगाने वाला **पहला सुल्तान बना।**

Search On TG: @apna_pdf

स्थापत्यकला और साहित्य

- उसने अपनी आत्मकथा **'फतूहात-ए-फिरोजशाही' (फारसी)** लिखी।
- **जियाउद्दीन बरनी ने 'फतवा-ए-जहांदारी'** और **'तारीख-ए-फिरोजशाही'** लिखी।
- फिरोज तुगलक **पहला** शासक था जिसने हिंदू धार्मिक कृतियों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद शुरू करवाया।
- फिरोज शाह तुगलक ने अपने चचेरे भाई मुहम्मद बिन तुगलक की याद में **जौनपुर** शहर की स्थापना की। मुहम्मद बिन तुगलक को **जौना खाँ** के नाम से भी जाना जाता था।
- फिरोज शाह तुगलक ने दिल्ली में **कोटला किला** बनवाया।
- **मृत्यु**: फिरोज शाह तुगलक की मृत्यु **1388 ई.** में हुई। फिरोज शाह तुगलक का मकबरा नई दिल्ली में हौज खास परिसर में स्थित है।
- फिरोज शाह तुगलक के बाद के शासक कमजोर थे। **तैमूर** (मंगोल सरदार) ने **1398 ई.** में उत्तरी भारत को लूटा। भारत छोड़ते समय उसने **खिज्र खाँ** को मुल्तान, लाहौर और दीपालपुर का गवर्नर नियुक्त किया।

सैय्यद वंश (1414 ई.-1451 ई.)

- **खिज्र खाँ** (1414-1421 ई.) ने दिल्ली पर कब्जा करके सैय्यद वंश की स्थापना की। उसके और उसके उत्तराधिकारियों के शासनकाल में कटेहर, बदायूँ, इटावा और अन्य क्षेत्रों में विद्रोहों को दबाने के प्रयासों के साथ-साथ जौनपुर के शर्की सुल्तानों के साथ संघर्ष देखने को मिला।
- 1421 ई. में उसकी मृत्यु के बाद **मुबारक शाह (1421-1433 ई.), मुहम्मद शाह (1434-1443 ई.),** और **अलाउद्दीन आलम शाह (1445-1451 ई.)** सिंहासन पर बैठे जो बहुत प्रभावशाली शासक नहीं थे। बाद में, **बहलोल लोदी** (लाहौर का गवर्नर) ने सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

महत्तवपूर्ण बिंदु:

- सैय्यद नुकीली टोपी (**कुलाह**) पहनते थे और उन्हें **'कुलाह-दारान' के नाम से जाना जाता था।** [यूपीएससी 2022]
- **याह्या बिन अहमद सरहिंदी** ने उसके शासनकाल के दौरान **"तारीख-ए-मुबारक शाही"** लिखी।

लोदी वंश (1451-1526 ई.)

लोदी वंश सल्तनत काल का अंतिम शासक वंश और **अफगानों के नेतृत्व वाला पहला वंश था।**

बहलोल लोदी (1451-1489 ई.)

- बहलोल लोदी वंश की **स्थापना की** और उत्तर भारत के एक विशाल क्षेत्र को अपने नियंत्रण में लाने में सफल रहा। उसने जौनपुर साम्राज्य पर कब्जा कर लिया।
- अमीरों को पर्याप्त स्थानीय स्वायत्तता प्राप्त थी और वे मुख्य रूप से सैन्य दायित्वों के माध्यम से उससे जुड़े थे। इसके कारण, बहलोल लोदी ने शाही अधिकार का प्रदर्शन नहीं किया और खुले दरबारों से उसने परहेज किया। उसने अपने अफगान अमीरों को **मसनद-ए-अली** कहा।
- मालवा सुल्तान के खिलाफ मुहम्मद शाह की सफलतापूर्वक मदद करने के बाद उसे **खान-ए-खाना** की उपाधि दी गई थी।

सिकंदर लोदी (1489-1517 ई.)

- वह बहलोल लोदी का पुत्र था। उसके शासनकाल में उत्तर भारत में लोदी साम्राज्य अपने **चरमोत्कर्ष** पर था।
- 16वीं शताब्दी की शुरुआत तक लोदी का प्रभाव राजपूताना और मालवा तक फैल गया।
- उसने बहलोल लोदी के विपरीत अमीरों को अपने अधीन कर लिया और खुला दरबार लगाया।
- वह गुजरात के **महमूद बेगड़ा** और **मेवाड़ के राणा सांगा,** दोनों के समकालीन था।

प्रशासन:

- उसने अनाज पर लगाए जाने वाले **'जकात' कर** को **समाप्त कर दिया।**
- माप की एक नई इकाई की शुरुआत की गई जिसे **गज-ए-सिकंदरी** कहा जाता था।
- गैर-मुसलमानों पर **जजिया कर** पुनः लगाया।
- **सिकंदर लोदी ने आगरा** शहर की स्थापना की और 1506 ई. में राजधानी को दिल्ली से आगरा स्थानांतरित किया।
- वह एक प्रसिद्ध कवि था और **गुलरुखी उपनाम से कविताएँ लिखता था।**

इब्राहीम लोदी (1517-1526 ई.)

- इब्राहीम लोदी दिल्ली में लोदी वंश का अंतिम सुल्तान था।
- उत्तराधिकार विवाद के कारण साम्राज्य का विभाजन हुआ। इससे **केंद्रीय शक्ति कमजोर हो गई** और आंतरिक संघर्ष उत्पन्न हो गया।
- पंजाब के गवर्नर दौलत खाँ लोदी ने इब्राहिम लोदी को अपदस्थ करने के लिए बाबर को आमंत्रित किया। **बाबर ने** प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और **पानीपत के प्रथम युद्ध (1526 ई.)** में **इब्राहिम लोदी** को हरा दिया। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत का अंत हो गया।

दिल्ली सल्तनत का जन-जीवन

केंद्रीय प्रशासन:

प्रशासन में सुल्तान की मदद करने के लिए मंत्रिपरिषद **(मजलिस-ए-खलवत)** होती थी। मंत्रियों को वह व्यक्तिगत रूप से चुनता था और वे उसके विवेकाधिकार के तहत कार्य करते थे।

सुल्तान:

- सल्तनत ने भारत में **तुर्क-अफगान प्रशासनिक प्रणाली** की स्थापना की।
- सुल्तान स्वयं को बगदाद के खलीफा का प्रतिनिधि मानते थे और अपनी इबादतों (**खुतबा**) में खलीफा का नाम शामिल करते थे और अपनी मुद्रा पर भी उनका नाम अंकित करते थे।
- **स्पष्ट उत्तराधिकार नीति** के अभाव के कारण, सुल्तान की मृत्यु के बाद अस्थिरता और सत्ता संघर्ष देखा गया।

Search On TG: @apna_pdf

नायब या वली	• **सबसे प्रभावशाली पद था।** यह विस्तारित अधिकार के साथ सभी विभागों का निरीक्षण करता था।
दीवान-ए-वजीरत	• वित्त विभाग का प्रमुख होता था।
दीवान-ए-आरिज	• रक्षा मंत्री,जो सैन्य मामलों की देखरेख करता था जबकि **आरिज-ए-मुमालिक** विभाग का प्रमुख होता था, जो सैनिकों की भर्ती के लिए जिम्मेदार होता था।
दीवान-ए-रिसालत	• मुख्य सद्र इसका प्रमुख होता था; यह विभाग धार्मिक मामलों का प्रबंधन करता था और मस्जिदों, कब्रों और मदरसों के निर्माण एवं रखरखाव के लिए संसाधन आवंटित करता था।
काजी	• मुख्य काजी दीवानी मामलों में शरिया को लागू करने वाले न्यायिक विभाग का प्रमुख होता था। • आपराधिक कानून सुल्तान द्वारा जारी नियमों पर आधारित था। हिंदू अपने व्यक्तिगत कानूनों का पालन करते थे और मुद्दों का समाधान ग्राम पंचायतों द्वारा किया जाता था।
दीवान-ए-इंशा	• शासक और अधिकारियों के बीच सभी प्रकार के संचार को संभालते हुए पत्राचार का प्रबंधन करता था।
वकील-ए-दर	• दरबार की मर्यादा बनाए रखने के लिए जिम्मेदार था।
बरीद	• गुप्तचर
कारखाना	• उन्होंने सुल्तान की जरूरतों को पूरा किया, रेशम तथा सोने एवं चाँदी के बर्तन जैसी **शान-शौकत** की वस्तुओं का उत्पादन किया और दुर्लभ वस्तुओं का भंडारण किया।

दिल्ली सल्तनत में स्थानीय प्रशासन:

क्षेत्र	द्वारा शासित
इक्ता (प्रांत)	**मुक्ती** (राज्यपाल)
शिक (जिले)	**शिकदार**
परगना (ब्लॉक)	**आमिल** (राजस्व एकत्र करने के लिए) **[यूपीएससी 2019]**
गाँव (प्रशासन की मूल इकाई)	**मुकद्दम** या **चौधरी**

अर्थव्यवस्था:

सल्तनत की आय के लिए भूमि राजस्व महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि एक बड़ी आबादी कृषि कार्य से जुड़ी थी। कुप्रबंधन के कारण कृषि का इष्टतम लाभ नहीं मिल पाया, जिसकी भरपाई उनके विजय अभियानों के दौरान की गई लूट और खजाने का उपयोग करके की गई थी।

- **भूमि वर्गीकरण** (तीन प्रकार थे):
  - **इक्ता भूमि**: वह भूमि जो अधिकारियों को उनकी सेवाओं के लिए वेतन के बदले इक्ता के रूप में प्राप्त होती थी।
  - **खालिसा भूमि**: सीधे सुल्तान द्वारा नियंत्रित होती थी, इससे शाही दरबार और शाही घरेलू खर्चों के लिए निर्धारित राजस्व प्राप्त होता था।
  - **इनाम भूमि**: धार्मिक नेताओं या संस्थाओं को अनुदान में दी गई भूमि।

- **कृषि:** खाद्य फसलें, नकदी फसलें, फल, सब्जियाँ और मसालों की खेती की जाती थी **(इब्न बतूता** का वृत्तांत), जिसमें **रेशम उत्पादन भी शामिल था,** जिसमें फसल चक्र, दोहरी फसल, तीन फसलें उगाना और फलदार वृक्षों की कलम काटने जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता था। पानी निकालने के लिए **रहट** जैसे कृत्रिम उपकरणों का उपयोग किया जाता था।
- **भू-राजस्व उपज का एक-तिहाई से आधे तक होता था।**
- **व्यापार:** साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण से **बेहतर संचार** और **स्थिर मुद्रा प्रणाली** के साथ-साथ **व्यापार में वृद्धि हुई**। कपास, कपड़ा और रेशम उद्योगों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- **बंगाल और गुजरात** उच्च गुणवत्ता वाले कपड़ों के लिए जाने जाते थे। भारतीय वस्त्र चीन में लोकप्रिय थे। ध्यातव्य है कि गुजरात कपड़ा, स्वर्ण और चाँदी के काम में उत्कृष्ट था। **सोनारगाँव (बांग्लादेश)** कच्चे रेशम और मलमल के लिए प्रसिद्ध था।

तुर्कों ने **नई तकनीकें पेश कीं** जैसे:
- **कागज** का निर्माण (चीन से सीखा)
- **लोहे की रकाब और कवच** का उपयोग
- **चरखे** की शुरुआत
- **धातुकर्म उद्योग** का विकास

संचार

इब्न बतूता ने दो प्रकार की डाक प्रणाली का वर्णन किया है :
- **घोड़ा डाक (उलाक)**, हर **चार मील** की दूरी पर तैनात शाही घोड़ों द्वारा संचालित की जाती थी।
- **पैदल डाक (दावा) एक-तिहाई मील की** दूरी पर थी।
  - यात्रियों की सुविधा के लिए राजमार्गों के किनारे **सराय** नामक विश्राम गृह बनाए गए थे।

सामाजिक जीवन:

दिल्ली सल्तनत के दौरान सामाजिक जीवन इस्लामी, फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय सांस्कृतिक तत्त्वों के मिश्रण से प्रभावित था।

- **महिलाएँ:** महिलाओं की अधीनस्थ स्थिति - सती प्रथा; पर्दा प्रथा जिसने महिलाओं में अकेलेपन को बढ़ाया।
- **विभाजन:** हिंदू समाज में **जाति व्यवस्था;** मुस्लिम समाज में **जातीय और नस्लीय समूहों** (तुर्क, ईरानी, अफगान और भारतीय मुस्लिम) ने अलग-अलग समूहों का निर्माण किया, जिनके बीच **अंतर्विवाह बहुत सीमित थे।**
- **धार्मिक भेदभाव:** मुस्लिम अमीरों के पास उच्च पद थे जबकि हिंदू अमीरों को शायद ही कभी महत्त्वपूर्ण पद मिले। हिंदुओं को **"जिम्मी" या संरक्षित लोग माना जाता था और** उन्हें **जजिया कर** देना पड़ता था।
- **गुलामी:** बाजारों में पुरुष और महिला गुलामों का व्यापार किया जाता था और उनका घरेलू कामों एवं कुशल श्रम सहित कई प्रकार के अन्य कार्यों के लिए उपयोग किया जाता था।

स्थापत्यकला:

भारत में दिल्ली सल्तनत काल के दौरान कला और स्थापत्यकला में इस्लामी, फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय प्रभावों का एक अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है।

Search on TG: @apna_pdf

स्थापत्यकला संबंधी तत्त्वों में निम्नलिखित शामिल थे:

- **मेहराब, गुंबद, ऊँची मीनारें** और **सजावटी अरबी लिपि**। मेहराबों और गुंबदों को रोमन स्थापत्यकाल से लिया गया था। हालाँकि, भारतीयों को मेहराबों और गुंबदों के बारे में पता था, लेकिन उन्होंने उनका बड़े पैमाने पर उपयोग नहीं किया।
- **पट्टी और शहतीर निर्माण विधि**।
- तुर्कों ने ज्यामितीय और पुष्प डिजाइन **(अरबस्क)** और कुरानिक उत्कीर्णलेखों को शामिल किया।

तुगलक स्थापत्यकला में निम्नलिखित शामिल थे:

- ढलान युक्त दीवारें, मेहराब, सरदल (चौखट) और शहतीर सिद्धांतों का संयोजन।
- भूरे बलुआ पत्थर का उपयोग और न्यूनतम सजावट।

लोदी स्थापत्यकला में निम्नलिखित शामिल थे:

- ऊँची इमारतें, विशेषकर ऊँचे चबूतरों पर मकबरे। कुछ मकबरे बगीचों के बीच स्थित, जैसे- दिल्ली में **लोदी गार्डन।**
- **दोहरे गुंबद** लोदी स्थापत्यकला की एक विशिष्ट विशेषता थे, जैसे कि **सिकंदर लोदी का मकबरा**।

संगीत:

अमीर खुसरो:

- **तबला और सितार** जैसे नवीन संगीत वाद्ययंत्रों का आविष्कार किया।
- उन्हे **"भारत का तोता"** या **"तूती-ए-हिंद"** भी कहा जाता है।
- उन्होंने नए राग और कव्वालियाँ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई ।
- उन्होंने **"तुगलकनामा"** का संकलन भी किया और कश्मीर को धरती पर स्वर्ग बताया।

- सूफी प्रथाएँ, विशेषकर संगीतमय **समा**, संगीत प्रचार में महत्त्वपूर्ण थीं। **पीर भोदन(Pir Bhodan)** इस युग का प्रसिद्ध संगीतकार था। इस काल के दौरान, कुछ विशिष्ट संगीत वाद्ययंत्रों जैसे **सारंगी** और **रबाब** का आविष्कार किया गया।
- ग्वालियर के **राजा मान सिंह तोमर** ने शास्त्रीय संगीत की **ध्रुपद शैली को सुदृढ़ किया।**
- **फिरोज तुगलक** के संरक्षण में **राग दर्पण का फारसी** में अनुवाद किया गया।
- जलालुद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान **नुसरत खातून (संगीतकार)** और **मिहर अफरोज (नर्तक)** जैसे कलाकारों के कारण, नृत्य भी एक महत्त्वपूर्ण दरबारी गतिविधि बन गई।

साहित्य

आधिकारिक भाषा के रूप में फारसी की स्थापना के कारण फारसी और भारतीय प्रभावों का साहित्यिक मिश्रण, इसकी प्रमुख विशेषता थी। इस काल में बंगाली, गुजराती, मराठी और तेलुगु जैसी क्षेत्रीय भाषाएँ भी विकसित हुई।

विद्वान	कृतियाँ
जियाउद्दीन बरनी	• **फतवा-ए-जहाँदारी** - फारसी गद्य लेखन की कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। • **तारीख-ए-फिरोजशाही** - इसमें तुगलक वंश का ऐतिहासिक विवरण है।
मिन्हाज-उस-सिराज	**तबकात-ए-नासिरी**- 1260 ई. तक का मुस्लिम वंशों का एक व्यापक इतिहास।
जिया नक्शबी	• वे संस्कृत कहानियों का फारसी में अनुवाद करने में अग्रणी थे। • उन्होंने तोते की कहानियाँ **'तूतीनामा' लिखी,** जो लघु कथाओं की एक शृंखला है।
मालाधर बसु	ये एक बंगाली कवि थे, जिन्होंने **श्री-कृष्ण विजय लिखी**। इन्हें बंगाली सुल्तानों से संरक्षण प्राप्त हुआ तथा इन्हें **गुणराज खान की** उपाधि दी गई।
फरिश्ता	**गुलशन-ए-इब्राहीमी या तारीख-ए-फरिश्ता** - इसमें गजनवी शासक महमूद (11वीं सदी की शुरुआत) के समय से लेकर फरिश्ता के संरक्षक, बीजापुर के सुल्तान इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय के समय तक की घटनाओं और वंशों का एक पारंपरिक विवरण दिया गया है।

लेखक-पुस्तकें (मुगल सल्तनत काल में)

- **हसन निजामी:** ताज-उल-मासिर
- **चंदबरदाई:** पृथ्वीराज रासो
- **कल्हण:** राजतरंगिणी
- **राजा मान सिंह तोमर:** मान कौतूहल

नुसरत शाह ने महाभारत का बंगाली में अनुवाद करने में मदद की।

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

3 बहमनी और विजयनगर साम्राज्य

परिचय

14वीं शताब्दी की शुरुआत में **दक्कन** और **दक्षिण भारत, चार राज्यों** में विभाजित था:

- **देवगिरि के यादव** (पश्चिमी दक्कन या वर्तमान महाराष्ट्र)
- **द्वारसमुद्र के होयसल** (कर्नाटक)
- **वारंगल के काकतीय** (वर्तमान तेलंगाना का पूर्वी भाग)
- **मदुरै के पाण्ड्य** (दक्षिणी तमिलनाडु)
  - अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान इन राज्यों को 1304 ई. और 1310 ई. में जनरल मलिक काफूर द्वारा पराजित किया गया था।
  - मुहम्मद तुगलक (1325-51 ई.) द्वारा अपनी राजधानी को देवगिरि (दौलताबाद) में स्थानांतरित करने का प्रयास असफल रहा, जिसके कारण जब वह दिल्ली वापस लौटा तो दक्षिणी अधीनस्थ राज्यों ने स्वतंत्रता की माँग की।

नए साम्राज्यों का उदय:

1336 ई. में संगम भाइयों **हरिहर और बुक्का** ने **तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर** स्थित विजयनगर (वर्तमान हम्पी) में **विजयनगर साम्राज्य** की स्थापना की। 1345 ई. में **जफर खाँ ने** सल्तनत से स्वतंत्रता की घोषणा की और **बहमन शाह की उपाधि** धारण कर **बहमनी वंश** की शुरुआत की।

बहमनी साम्राज्य (1347-1527 ई.)

विभिन्न शासक और उनके योगदान

बहमन शाह (1347-1358 ई.)

- **परिचय: बहमन शाह (जिसे जफर खाँ और हसन गंगू के नाम से भी जाना जाता है)** ने 1345 ई. में **देवगिरि** में स्वतंत्रता की घोषणा कर दी और बाद में अपनी राजधानी **गुलबर्गा** (उत्तरी कर्नाटक) में स्थानांतरित कर दी।
- उसे उड़ीसा (जाजनगर) और विजयनगर के शासकों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा। सफल अभियानों के बाद, उसने **सिक्कों पर खुद को दूसरे सिकंदर के रूप में चित्रित करवाया।**
- उसने प्रशासनिक रूप से दिल्ली सल्तनत की संरचना को अपनाया, अपने क्षेत्र को **चार प्रांतों (गुलबर्गा, दौलताबाद, बीदर और बरार) में विभाजित किया, जिन्हें 'तरफ'** कहा जाता था, प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक गवर्नर नियुक्त किया गया जो प्रशासन, राजस्व संग्रह और सैन्य कमान के लिए जिम्मेदार था।

मुहम्मद प्रथम (1358-1375 ई.)

- इसने 1363 ई. में वारंगल पर आक्रमण किया तथा **गोलकुंडा के किले** और **फिरोजा सिंहासन** पर कब्जा कर लिया। बाद में **फिरोजा सिंहासन ने** बहमनी राजाओं के राजसिंहासन का रूप ग्रहण कर लिया।
- उसने एक ऐसी शासन प्रणाली स्थापित की जिसका पालन बाद के सभी शासकों के साथ-साथ मराठों ने भी किया।
- उसने **आठ** राज्य मंत्रियों की एक परिषद नियुक्त की:
  - **वकील-ए-सल्तनत:** राज्य के लेफ्टिनेंट और निकटस्थ अधीनस्थ।
  - **वजीर-ए-कुल:** वह अन्य सभी मंत्रियों के कार्यों का पर्यवेक्षण करता था।
  - **अमीर-ए-जुमला:** वित्त मंत्री
  - **वसीर-ए-अशरफ:** विदेश मंत्री और समारोहों का प्रमुख।
  - **नाजीर:** सहायक वित्त मंत्री।
  - **पेशवा:** राज्य के लेफ्टिनेंट के साथ संबद्ध।
  - **कोतवाल:** राजधानी में पुलिस प्रमुख और नगर मजिस्ट्रेट।
  - **सद्र-ए-जहाँ:** मुख्य न्यायाधीश तथा धार्मिक कार्य और बंदोबस्त मंत्री।
- इसके अलावा, उसने **राजमार्ग पर होने वाली लूटपाट के दमन के लिए कई उपाय किए** और गुलबर्गा में दो मस्जिदें भी बनवाई।
- सुल्तानों ने अक्सर दक्षिण के राज्यों को हड़पने के उद्देश्य से लगभग एक शताब्दी तक, दक्षिण में एक के बाद एक कई युद्ध किए, जिससे उन्हें कोई अधिक लाभ नहीं हुआ। **1425 ई. में** इन्होंने **वारंगल पर कब्जा कर लिया,** लेकिन उड़ीसा के शासकों ने पूर्व की ओर आगे बढ़ने से रोक दिया। **अहमद वली शाह ने 1429 ई.** में राजधानी को **गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित कर दिया।**

Search On TG: @apna_pdf

मुहम्मद तृतीय (1463-1482 ई.): मुहम्मद गवाँ उसका लेफ्टिनेंट (**प्रधान मंत्री**) था जिसने बहमनी साम्राज्य के विकास में योगदान दिया।

मुहम्मद गवाँ:

- मुहम्मद गवाँ ने विजयनगर राजाओं के खिलाफ **बेलगाँव का युद्ध, बारूद का** उपयोग करके युद्ध जीता।
- **प्रशासनिक सुधार:**
  - बहमनी सल्तनत के मौजूदा चार प्रांतों को **आठ प्रांतों** में विभाजित किया।
  - शाही अधिकारियों को भुगतान के रूप में जमींदारी दी गई और उन्हें उनकी आय एवं व्यय के लिए जवाबदेह ठहराया गया।
- गवाँ के प्रशासनिक सुधारों के कारण दक्कनी मुसलमानों और परदेसी (विदेशी) मुसलमानों के बीच टकराव बढ़ गया।

- सल्तनत धीरे-धीरे चार स्वतंत्र राज्यों: **बीजापुर, अहमदनगर, बरार** और **गोलकुंडा** में विभाजित हो गई। इसके अलावा, **बहमनी सुल्तान ने एक कठपुतली के रूप में बीदर** पर शासन किया, जो पाँचवाँ स्वतंत्र राज्य बन गया।
- **बीदर और बरार** के विलय के कारण, **बीजापुर** की ताकत बढ़ गई।
- **अहमदनगर** और **गोलकुंडा ने** शुरू में स्वतंत्र रूप से कार्य किया लेकिन बाद में **1565 ई.** में **बीजापुर के साथ मिलकर विजयनगर** के विरुद्ध **तालीकोटा के युद्ध (या राक्षस-तांगड़ी का युद्ध)** में विजयनगर को पराजित कर दिया। इसके बाद, मुगल साम्राज्य ने धीरे-धीरे एक सदी के ही भीतर सम्पूर्ण सल्तनत को अपने अधीन कर लिया।

अन्य संबंधित तथ्य

राजवंश	शहर	संस्थापक
आदिल शाही	बीजापुर	यूसुफ आदिल शाह
कुतुब शाही	गोलकुंडा	कुली कुतुब शाह
निजाम शाही	अहमदनगर	मलिक अहमद
शर्की शाही	जौनपुर	मलिक सरवर

इब्राहीम आदिल शाह-द्वितीय (1580-1627 ई.)

- वह बीजापुर का शासक था।
- वह एक अच्छा प्रशासक, कवि, कलाकार व कला संरक्षक था।
- उसने दक्खिनी में **'किताब-ए-नौरस'** पुस्तक भी लिखी।
- धर्मनिरपेक्षता में विश्वास के कारण उन्हें मुस्लिम समुदाय द्वारा **'जगदगुरु'** की उपाधि दी गई थी।

गोल गुंबद कर्नाटक के बीजापुर जिले में स्थित है, इसे दुनिया का **सबसे बड़ा गुंबद कहा जाता है**। यह आदिल शाही राजवंश के सातवें सुल्तान **मुहम्मद आदिल शाह (1626-1656 ई.) का मकबरा** है।

गोलकुंडा का किला

- इस किले को काकतीय राजवंश के **राजा कृष्ण देव** द्वारा मिट्टी के किले के रूप में निर्मित किया गया था।
- इस किले को 1495-1496 **ई.** के दौरान **जागीर** (भूमि अनुदान) के रूप में **सुल्तान कुली कुतुब खाँ को सौंप दिया गया था।**
  - उन्होंने मिट्टी के किले का पुनर्निर्माण किया और उसे **ग्रेनाइट के किले में बदल** दिया तथा उस स्थान का नाम **मुहम्मद नगर** रखा।
- **कुतुब शाही राजवंश ने** उस पर कब्जा कर लिया और गोलकुंडा को अपनी राजधानी बनाया।
  - **मोहम्मद कुली कुतुब शाह ने** गोलकुंडा किले की भव्यता को और बढ़ाया।
  - इस किले में कुतुब शाही वंश की कब्रें हैं।
- 17वीं शताब्दी तक गोलकुंडा **'कोहिनूर' हीरे** के लिए प्रसिद्ध था।
- यह किला अपनी **ध्वनिक वास्तुकला के लिए लोकप्रिय है,** इसका उच्चतम बिंदु **बाल हिसार** है।
- **फतह दरवाजा** (या **विजय द्वार**) किले का प्रवेश द्वार है।
- औरंगजेब द्वारा 1687 **ई.** में गोलकोंडा किले की घेराबंदी आठ महीने तक चली, लेकिन विश्वासघात के कारण उसका पतन हो गया।

विजयनगर साम्राज्य (1336-1650 ई.) (कर्नाटक साम्राज्य)

विजयनगर साम्राज्य की जानकारी देने वाले विभिन्न स्त्रोत स्रोत:

साहित्यिक स्रोत:

- **मनुचरित्रम् (तेलुगु, अल्लासानी पेद्दना कृत):** मनु की कहानी; इसमें विजयनगर साम्राज्य की सामाजिक स्थिति विशेषकर जाति व्यवस्था का विवरण है।
- **सलु वभ्युदयम् (राजनाथ डिंडिमा कृत):** सालुवा नरसिंह के युद्धों पर कविताएँ।
- **रायवाचकमू (तेलुगु): यह** नायकों और उनके संरक्षक राज्य, विजयनगर के संबंधों पर प्रकाश डालता है।

विदेशी यात्रियों का विवरण:

यात्री	मूल देश	जिसके शासनकाल के दौरान यात्रा की
इब्न बतूता (1333-45 ई.)	मोरक्को	हरिहर प्रथम
निकोलो द कोंटी (1420-21 ई.)	इटली	देवराय प्रथम
अब्दुर रज्जाक (1443-45 ई.)	फारस	देवराय द्वितीय
अफानसी निकितिन (1470-74 ई.)	रूस	मुहम्मद शाह तृतीय (बहमनी)
दुआर्ते बारबोसा डोमिंगो पेस (1520 ई.)	पुर्तगाल	कृष्णदेव राय
फर्नाओ नुनिज (1535-37 ई.)	पुर्तगाल	अच्युत देवराय

- **पुरालेख:** कन्नड़, तमिल, तेलुगु व संस्कृत में ताम्रपत्र अभिलेख।
- **मुद्राशास्त्रीय साक्ष्य: कृष्णदेव राय** के **सोने के सिक्के,** जिन्हें **वराह सिक्के** भी कहा जाता है (जिन्हें **तमिल में पोन** और **कन्नड़ में होन्नू** भी कहा जाता है)।

उत्पत्ति और विस्तार

- चार राजवंशों ने विजयनगर साम्राज्य पर तीन शताब्दियों से अधिक समय तक शासन किया:

Search On TG: @apna_pdf

राजवंश	संस्थापक	समय
संगम	हरिहर प्रथम	1336-1485 ई.
सलुव	सलुव नरसिंह	1485-1505 ई.
तुलुव	वीर नरसिंह	1505-1570 ई.
अराविडु	तिरुमल	1570-1650 ई.

- **हरिहर** और **बुक्का ने होयसल शासकों** से अपनी स्वतंत्रता का दावा करने के बाद (**बल्लाल तृतीय** की मृत्यु के बाद) **1336 ई.** में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।
- माना जाता है कि **प्रतिष्ठित शैव संत और संस्कृत विद्वान विद्यारण्य** ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- प्रारंभ में, राजधानी **अनेगोंडी के पास थी** (तुंगभद्रा के **उत्तरी तट पर), बाद में** होयसल शहर, **होसापट्टन (हम्पी के पास; तुंगभद्रा के दक्षिणी** तट पर) में स्थानांतरित हो गयी, और इसका नाम बदलकर **विजयनगर कर दिया गया (विजय का शहर**)। हम्पी का नाम स्थानीय देवी **पम्पादेवी के नाम पर पड़ा।**

हम्पी को 1986 में यूनेस्को द्वारा **विश्व धरोहर स्थल** घोषित किया गया था।

- हम्पी के खंडहरों की खोज 1800 ई. में **कर्नल कॉलिन मैकेंजी** द्वारा की गई थी। बाद में, 1815 ई. में उन्हें **भारत का पहला महासर्वेक्षक नियुक्त किया गया।**
- **विरुपाक्ष, जिसे शिव** के एक रूप में मान्यता प्राप्त है, राज्य का संरक्षक देवता था।
  - सभी शाही आदेशों पर आमतौर पर कन्नड़ लिपि में **"श्री विरुपाक्ष"** के हस्ताक्षर होते थे।
  - **शासकों ने "हिंदू सुरत्राण"** की उपाधि के माध्यम से देवताओं के साथ अपने मजबूत संबंधों का प्रदर्शन किया। यह अरबी शब्द सुल्तान का संस्कृतीकरण था।
- उन्होंने अपने **शाही प्रतीक के रूप में चालुक्यों के प्रतीक, सूअर या वराह को अपनाया।**

विजयनगर की लोकप्रिय परंपराओं में, **दक्कन के सुल्तानों को अश्वपति** कहा जाता था **जिसका अर्थ** घोड़ों का स्वामी है; **राय का अर्थ नरपति**, या मनुष्यों के स्वामी हैं।

- **सैन्य गतिविधियों** के माध्यम से, कई क्षेत्रों को अपने साम्राज्य में मिला लिया गया:
  - **कर्नाटक** में **होयसल राज्य** का संपूर्ण क्षेत्र।
  - **तटीय आंध्र** (उड़ीसा **के गजपति साम्राज्य** और **विजयनगर साम्राज्य** के बीच सत्ता संघर्ष था)।
  - **तोंडाई-मंडलम** (उत्तरी तमिलनाडु और दक्षिणी आंध्र का क्षेत्र); बुक्का प्रथम के पुत्र राजकुमार **कुमार कम्पाना ने** इस क्षेत्र को जीता। उसने **मदुरै के सुल्तान को** भी पराजित कर दिया और 1370 ई. के आस-पास सल्तनत का अंत कर दिया, जैसा कि कंपाना की पत्नी **गंगादेवी** द्वारा रचित संस्कृत कृति **मदुरा-विजयम** में वर्णित है।
  - 1500 ई. तक मदुरै सहित पांड्य क्षेत्र, विजयनगर से स्वतंत्र था। कावेरी डेल्टा तक केवल उत्तरी और मध्य तमिल क्षेत्रों पर संगम और सलुव राजवंशों का शासन था।
  - **कोंकण क्षेत्र,** पश्चिमी घाट और समुद्र के बीच एक संकीर्ण पट्टी है।
- अपने चरमोत्कर्ष पर विजयनगर साम्राज्य उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण तक फैला हुआ था।

विजयनगर - बहमनी संघर्ष

- **संघर्ष के प्रमुख कारण:**
  - **कृष्णा और तुंगभद्रा** के बीच उपजाऊ क्षेत्र **(रायचूर दोआब)** पर नियंत्रण करने के लिए।
  - गोवा और अन्य बंदरगाहों से होने वाले **घोड़े के व्यापार** पर नियंत्रण करने के लिए।
- लगातार युद्ध के बावजूद, **कृष्णा नदी ने** दोनों शक्तियों के बीच विभाजन रेखा के रूप में काम किया।
- **बहमनी साम्राज्य और वारंगल** के बीच गठबंधन ने तुंगभद्रा दोआब पर विजयनगर की जीत की क्षमता को सीमित कर दिया।

Search On TG: @apna_pdf

महत्त्वपूर्ण शासक और उनके योगदान

संगम वंश

हरिहर (1336-56 ई.)

- मैसूर के होयसल शासक को हराया और उसे मार डाला।
- उसका भाई **बुक्का** (1356-77 ई.) उसका उत्तराधिकारी बना।
- उसने कृष्णा नदी की एक सहायक नदी के दक्षिणी तट पर, एक नए शहर की स्थापना की और एक देवता के प्रतिनिधि (एजेंट) के रूप में अपने नए राज्य पर शासन करने का बीड़ा उठाया। कृष्णा नदी के दक्षिण की सारी भूमि को इस देवता की भूमि माना जाता था। **[यूपीएससी 2015]**

हरिहर द्वितीय (1377-1404 ई.)

- बहमनी साम्राज्य के बेलगाँव और गोवा पर अधिकार कर लिया।
- उत्तरी श्रीलंका में एक सैन्य दल भेजा।

देवराय प्रथम (1404-1422 ई.)

- वह बहमनी शासक फिरोज शाह से पराजित हो गया था। बाद में, उसने वारंगल के साथ गठबंधन किया, जिसने दक्कन में शक्ति का संतुलन बदल दिया और फिरोज शाह बहमनी को पराजित कर कृष्णा नदी के मुहाने तक पूरे रेड्डी क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।

- उसने तुंगभद्रा और हीराद्रा नदियों पर एक बाँध का निर्माण करवाया और पानी की कमी को दूर करने के लिए नहरों का उपयोग किया।
- निकोलो कोंटी ने 1420 ई. में विजयनगर की यात्रा की।

देवराय द्वितीय (1422-46 ई.)

- **यह संगम वंश** का सबसे महान शासक था।
- उसने ओडिशा के गजपति शासकों को पराजित किया।
- **फरिश्ता** (दक्कन के सुल्तानों का दरबारी इतिहासकार) के अनुसार, उसने प्रशिक्षित मुस्लिम घुड़सवार सेना की भर्ती की और अपने सैनिकों को तीरंदाजी का प्रशिक्षण दिया।
- **अब्दुर रज्जाक ने** उसके शासनकाल के दौरान कोच्चि के जमोरिन और विजयनगर दरबार का दौरा किया।
- 1443 ई. जमोरिन ने बहमनी सुल्तानों से मुदकल, बंकापुर आदि क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करने के लिए तुंगभद्रा को पार करने की कोशिश की, लेकिन अंत में दोनों पक्षों को मौजूदा सीमाओं पर सहमत होना पड़ा।
- नुनिज के अनुसार, **श्रीलंका और तेनासेरिम** (मलय और बर्मा) के राजाओं ने उसे उपहार प्रदान किए।
- विजयनगर में वंशानुक्रम स्थापित नहीं किया गया था, जिसके कारण उसकी मृत्यु के बाद सिंहासन के लिए कई गृह युद्ध हुए।

सलुव वंश

सलुव नरसिंह

- उसने **1485 ई. में सलुव वंश की स्थापना की**, जो बहुत ही कम अवधि के लिए, ही रहा। सलुव सैन्य कमांडर थे।
- उनके बड़े बेटे **वीर नरसिंह** ने 1505 ई. में **तुलुव वंश** की शुरुआत की।

तुलुव वंश

कृष्णदेव राय (1509-29 ई.)

- वे विजयनगर के सभी शासकों में सबसे महान थे। वे **वीर नरसिंह के छोटे भाई** थे और उन्होंने अपने पिता और बड़े भाई द्वारा स्थापित मजबूत सैन्य आधार को और अधिक मजबूत किया। उन्हें **आंध्र भोज** के नाम से भी जाना जाता है।
- **दो मोर्चों पर युद्ध**: उन्होंने दो मोर्चों पर युद्ध किया, एक बहमनी सुल्तान (जो कि पारंपरिक शत्रु था) के साथ और दूसरा उड़ीसा के गजपति शासकों के साथ।
- **रायचूर दोआब** (1512 ई.) पर कब्जा कर लिया, **उड़ीसा के शासकों** को अपने अधीन कर लिया (1514 ई.) और बीजापुर के सुल्तान को पराजित कर दिया (1520 ई.)।
- शिलालेखों में **उदयगिरि** जैसे कई गजपति किलों पर उसके द्वारा कब्जा करने का वर्णन मिलता है।
- उन्होंने **सिंहाचलम** (विशाखापत्तनम) में **विजय स्तंभ** का निर्माण करवाया।
- **बहमनी पर आक्रमण:**
  - पुर्तगालियों की मदद से मालाबार और कोंकण तटों पर अधिकार स्थापित किया।
  - पुर्तगालियों को **भटकल** (कर्नाटक) में किला बनाने की अनुमति मिल गई।
- उन्होंने श्रीशैलम, तिरूपति, कालाहस्ती, कांचीपुरम, तिरुवन्नमलाई और चिदंबरम जैसे मंदिरों के लिए उदारतापूर्वक दान दिया। उन्होंने इन मंदिरों में विशाल गोपुरम बनवाए।
- **स्थापत्यकला:**
  - विजयनगर के पास **नागलापुरम** नामक एक उपनगर की स्थापना की, जिसका नाम उनकी माँ के नाम पर रखा गया।
  - उन्होंने **विजय महल और विट्ठल स्वामी मंदिर** जैसे कुछ महत्त्वपूर्ण मंदिरों में गोपुरम का निर्माण करवाया।
- विदेशी यात्रियों **डोमिंगो पेस, फर्नाओ नुनिज और दुआर्ते बारबोसा** ने कृष्णदेवराय के चरित्र और विजयनगर शहर की समृद्धि की प्रशंसा की।
- वह तेलुगु और संस्कृत के प्रतिभाशाली विद्वान थे। उनकी कृतियों में निम्नलिखित शामिल हैं:
  - प्रसिद्ध तेलुगु कविता **अमुक्तमाल्यदा** (इसमें अंडाल की कहानी और उनके सपने में भगवान विष्णु के आने का वर्णन है)।
  - मदालसा चरित, सत्यवेदु परिणय, रसमंजरी, **जांबवती कल्याणम** (संस्कृत)।
  - कृष्णदेव रायण दिनाचारी (कन्नड़)।
- उन्होंने **तेलुगु के आठ प्रसिद्ध कवियों, अष्टदिग्गजों** को संरक्षण दिया।
  - **अल्लासानि पेद्दाना** (जिसे **आंध्रकविता का पितामह** के नाम से भी जाना जाता है), उनकी कृतियाँ हैं: **मनुचरितम** और **हरिकथासारम।**
  - मदय्यागरी मल्लाना, नंदी थिम्मन, धूर्जति, रामभद्र, पिंगली सुराणा, रामराजाभूषणुडु।

Search On TG: @apna_pdf

- **तेनाली रामकृष्ण** (दरबारी विदूषक और कवि): उसकी कृति **पांडुरंग महत्यम** है।
- उन्होंने **चतु विट्ठलनाथ** (कन्नड़ कवि; उनकी कृति भागवत); तमिल कवि **हरिदास**; **व्यासतीर्थ** (उनके शिष्य **पुरंदर दास** थे) को भी संरक्षण दिया।
- धार्मिक मतभेदों के बावजूद, कृष्णदेव राय ने सल्तनत में सत्ता के कुछ दावेदारों का समर्थन किया और **"यवन साम्राज्य के संस्थापक"** की उपाधि धारण की।
  - यवन एक संस्कृत शब्द है जिसका उपयोग यूनानियों और ऐसे अन्य लोगों के लिए किया जाता है जिन्होंने उत्तर-पश्चिम से उपमहाद्वीप में प्रवेश किया था।

कृष्णदेव राय की कर प्रणाली:

- भूमि पर कर की दर, भूमि की उर्वरता के आधार पर तय की जाती थी।
- कार्यशालाओं के निजी मालिकों ने उद्योग कर का भुगतान किया। **[यूपीएससी 2016]**

अच्युत देवराय

- कृष्णदेव राय की मृत्यु के बाद उनके भाई **अच्युत देवराय** ने सिंहासन संभाला। शक्तिशाली **चेल्लप्पा** (जिन्हें **सलुव नायक** के नाम से भी जाना जाता है) के समर्थन ने उन्हें अच्छी स्थिति बनाए रखने में मदद की।
- **1542 ई. तक सदाशिव राय उनके उत्तराधिकारी बने रहे।**

सदाशिव राय (1543-67 ई.)

- वास्तविक शक्ति उनके मंत्री रामराय के हाथों में थी। रामराय ने अपने रिश्तेदारों (अराविडु कबीले के) को रणनीतिक इलाकों के नायक के रूप में नियुक्त किया, जिससे रामराय को उनका समर्थन प्राप्त हुआ। रामराय एक महान योद्धा और रणनीतिकार थे:
  - उन्होंने बहमनी मुस्लिम शक्तियों को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा किया।
  - उन्होंने पुर्तगालियों के साथ एक व्यापारिक संधि की, जिसके तहत बीजापुर के शासक को घोड़ों की आपूर्ति रोक दी गई।
  - उन्होंने बीजापुर के शासक से युद्ध किया। हालाँकि, बाद में उन्होंने गोलकुंडा और अहमदनगर के खिलाफ बीजापुर के साथ गठबंधन किया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः तालीकोटा का युद्ध (1565) में हुआ

तालीकोटा का युद्ध (1565 ई.)

- यह युद्ध **1565 ई.** में **विजयनगर और दक्कन राज्यों (बीजापुर, अहमदनगर और गोलकुंडा की संयुक्त सेनाओं)** के बीच **तालीकोटा या राक्षसी-तांगड़ी** में लड़ा गया था।
- **रामराय ने** व्यक्तिगत रूप से सेना की कमान संभाली; हालाँकि, वह **युद्ध हार गया** और बाद में उसे मार दिया गया।
- विजयी बहमनी सेनाओं ने **इतिहास में पहली बार** विजयनगर शहर में प्रवेश किया और कई महीनों तक इसे लूटा।
- इस युद्ध को आमतौर पर विजयनगर के अंत का संकेत माना जाता है।

युद्ध के बाद के प्रभाव

- राजा **सदाशिव** ने भागकर **पेनुगोंडा** में शरण ली और बाद में **चंद्रगिरि** (तिरुपति के पास) **से शासन किया।**
- रामराय के भाई **तिरुमला** ने **1570 ई.** में खुद को राजा घोषित कर दिया। उसने चौथे राजवंश अर्थात् अराविडु राजवंश की शुरुआत की। हालाँकि, वास्तविक शक्ति देश के विभिन्न हिस्सों में नायक प्रमुखों (**Nayak chiefs**) के पास थी।

विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन

- विजयनगर साम्राज्य में राजा साम्राज्य का सर्वोच्च प्राधिकारी और सेना का सर्वोच्च सेनापति होता था।
- उसकी सहायता के लिए उच्च स्तर के कई अधिकारी होते थे।
- **महाप्रधानी** (मुख्यमंत्री) निचले स्तर के अधिकारियों का नेतृत्व करता था जैसे कि **दलवाई** (सेनापति), **वासल** (महल का रक्षक), **रायसम** (सचिव/लेखाकार), **अदईप्पम** (निजी परिचारक) और **कार्यकर्ता** (कार्यकारी एजेंट)।
- **हरिहर प्रथम** और उसके उत्तराधिकारियों द्वारा सृजित **प्रशासनिक प्रभाग:**
  - साम्राज्य को राज्यों या **मंडलम** (प्रांतों) में विभाजित किया गया था, जिन्हें आगे **नाडु** (जिला), **स्थल** (उप-जिला) और **ग्राम** (गाँव) में विभाजित किया गया था।
    - **राज्य** या प्रांत **प्रधानी** नामक **गवर्नर द्वारा शासित होते थे।**
    - प्रमुख राज्य होयसल, अरागा, बाराकुर (मंगलूर) और मुलुवे थे।
  - **प्रधानी या तो एक शाही सदस्य** या एक **सैन्य अधिकारी था** जो शाही परिवार से संबंधित नहीं था।
    - प्रधानी के पास, प्रशासन में सहायता के लिए अपना स्वयं का राजस्व **राजस्व लेखाकार** और **सेना** होती थी।
  - **नाडु, सिम, स्थल, कंपाना आदि** जैसे **छोटे प्रशासनिक प्रभाग थे** जिनकी सबसे छोटी इकाई गाँव थी।
  - कृष्णदेव राय के शासनकाल में **नायक प्रणाली के विकास** के कारण **तुलुव वंश के तहत** राज्यों का प्रशासनिक **और राजस्व दर्जा कम हो गया था।**

नायक प्रणाली

- तेलुगु और कन्नड़ क्षेत्रों में **"नायक" सेना प्रमुख होते थे।** 13वीं शताब्दी के बाद, वे आमतौर पर **किलों को नियंत्रित करते थे** और उनके हथियारबंद रक्षक होते थे।
- नायकों को **सौंपी गई राजस्व** (मालगुजारी) **प्रणाली,** 13वीं शताब्दी में **काकतीय साम्राज्य** में भी मौजूद थी, जो दिल्ली सल्तनत में प्रचलित **इक्ता प्रणाली** के समान थी।

Search On TG: @apna_pdf

- **नुनिज** के अनुसार, प्रत्येक नायक जरूरत के समय राजा की सेवा के लिए एक निश्चित संख्या में सैन्य बल (घोड़े और पैदल सैनिक) रखता था। नुनिज का वृत्तांत कृष्णदेव राय के युग की तेलुगु कृति रायवाचकमू से मेल खाता है।
- नायक महानवमी उत्सव के दौरान राजा को राजस्व का एक हिस्सा, भेंट स्वरूप देते थे।
- कई नायकों ने विजयनगर के राजाओं की अधीनता स्वीकार कर ली, लेकिन वे अक्सर विद्रोह करते थे और उन्हें सैन्य कार्रवाई से वश में करना पड़ता था। इसके अलावा, उन्हें राजा द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित कर दिया जाता था।
- **पलायगारों** (जो पुराने नायक परिवारों के उत्तराधिकारी थे) की **वंशावली** (पारिवारिक इतिहास) इस बात की पुष्टि करती है कि नायक प्रणाली, कृष्णदेव राय के शासनकाल दौरान और अधिक सुधार के दौर से गुजरी।
- वे **अलग-अलग जातियों से संबंधित थे**, जिनमें ब्राह्मण और गैर- ब्राह्मण दोनों शामिल थे।
  - **गैर-ब्राह्मण नायक विभिन्न सामाजिक मूल के थे** जिसमें योद्धा, देहाती कबीले (यादव, बिलामा), किसान (रेड्डी), व्यापारी (बलीजा) आदि शामिल थे।
  - कृष्णदेव राय के अधीन **चेलप्पा** जैसे कुछ ब्राह्मण नायक प्रमुख थे।
- विजयनगर साम्राज्य में, यह प्रणाली 1500 ई. के आस-पास अधिक स्पष्ट हो गई, जो कृष्णदेव राय और अच्युत देवराय के शासनकाल में और मजबूत हुई, जैसा कि **"नायककट्टनम"** (तमिल), **"नायकतनम"** (कन्नड़), और **"नयनकरमु"** (तेलुगु) जैसे शिलालेखों में वर्णित है।

अमर-नायक

- यह विजयनगर साम्राज्य का एक प्रमुख राजनीतिक नवप्रवर्तन था।
- अमर-नायक सेनापति थे जिन्हें राजा द्वारा शासन करने के लिए अलग-अलग क्षेत्र दिए गए थे।
- वे क्षेत्र के किसानों, शिल्पकारों और व्यापारियों से **कर** और अन्य बकाया वसूल करते थे।
- उन्होंने **राजस्व** का कुछ हिस्सा व्यक्तिगत उपयोग के लिए व घोड़ों और हाथियों की एक निर्धारित टुकड़ी को बनाए रखने के लिए रखा, जिससे राजाओं को युद्ध में प्रभावी रूप से सहयोग प्राप्त होता था।
- राजस्व का कुछ हिस्सा **मंदिरों के रखरखाव और सिंचाई कार्यों के लिए उपयोग किया जाता था।**
- नायकट्टनम प्रमुख **वाणिज्यिक केंद्रों (पेट्टई), कर प्रोत्साहन, अधिवास और सिंचाई के माध्यम से उत्पादन का प्रबंधन करते थे।**
  - उनमें से कई ने उच्च अधिकारियों (सेनापति, गवर्नर, लेखाकार आदि) के रूप में शुरुआत की और राजा के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया।
- **तालीकोटा युद्ध के बाद**, नायक प्रमुख विजयनगर के राजा से स्वतंत्र हो गए।
  - उनमें से कुछ मदुरै, तंजावुर, इक्केरी आदि जैसों ने अपने अधीन कई छोटे नायकों को नियंत्रित करते हुए शक्तिशाली राज्य स्थापित किए।

अयंगार प्रणाली

इसमें केंद्र द्वारा ग्राम स्तर पर प्रशासन को बनाए रखने के लिए 12 सदस्यीय अधिकारियों के समूह का गठन किया जाता था। ये अधिकारी, जिन्हें अयंगार कहा जाता था, गाँव के कार्यकर्ता थे और परिवारों के एक समूह का गठन करते थे। उन्हें उनकी सेवा के लिए गाँव में एक हिस्सा या भूखंड प्रदान किया जाता था जो कर मुक्त होता था। अयागर वंशानुगत अधिकारी थे और उनकी अनुमति के बिना भूमि की बिक्री या खरीद नहीं की जा सकती थी।

समाज

- विदेशी यात्रियों ने विजयनगर और बीजापुर जैसे शहरों में शासकों, अधिकारियों और अभिजात वर्ग की **समृद्ध जीवन शैली को देखा, जो व्यापक गरीबी एवं गुलामी** की उपस्थिति के विपरीत थी। शासक वर्ग और शासित वर्ग के बीच **खाई बढ़ती जा रही** थी।
- निरंतर युद्ध और उससे उत्पन कष्टों के कारण, लोगों का **विस्थापन** और **पलायन हुआ।**
- पुर्तगाली लेखक **नुनिज** के अनुसार, विजयनगर साम्राज्य की महिलाएँ कुश्ती, ज्योतिष, लेखांकन और भविष्यवाणी की विशेषज्ञ थीं। **[यूपीएससी 2021]**

अर्थव्यवस्था

कर व्यवस्था

- राज्य को अपना राजस्व मुख्यतः **कराधान से प्राप्त होता था।**
- कर **की दर** फसलों, मिट्टी के प्रकार, सिंचाई के विविध साधन आदि के अनुसार भिन्न-भिन्न होती थी।
  - भूमि कर के अलावा, कई अन्य कर भी थे, जैसे- संपत्ति कर, उपज की बिक्री पर कर, पेशा कर, सैन्य योगदान (संकट के समय में), विवाह कर आदि।

आर्थिक क्रियाकलाप:

- विजयनगर साम्राज्य प्रारंभ में कृषि प्रधान था, जो 14वीं शताब्दी में एक वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गया। उत्तरी तमिलनाडु, रायलसीमा और तटीय आंध्र में बड़ी संख्या में व्यावसायिक और बुनाई केंद्र खुले। बुनकर, लोहार और राजमिस्त्री जैसे कारीगर समाज में अधिक प्रमुख हो गए।
- विजयनगर युग में गैर-कृषि शिल्प में काफी वृद्धि देखी गई। इन गैर-कृषि समूहों को आम तौर पर **पट्टाडायर** (कार्यशाला के लोग) और **कसायावर्गम** (वह समूह जो नकद में कर का भुगतान करता था) कहा जाता था।
- 16वीं शताब्दी में, नायकों ने नायक प्रणाली के तहत कभी-कभी कर प्रोत्साहन के साथ बुनाई जैसे शिल्प को बढ़ावा दिया।

व्यापार:

- अंतरदेशीय, तटीय और विदेशी व्यापार, राज्य को समृद्धि की ओर ले गया।
- विजयनगर के प्रारंभिक समय के व्यापार में घोड़ों पर अरब व्यापारियों का नियंत्रण था जो अरब और मध्य एशिया से **घोड़े आयात करते थे**, जो प्रतिद्वंद्वी साम्राज्यों के लिए भी महत्त्वपूर्ण थे।
  - व्यापारियों के स्थानीय समुदायों को **कुदिराई चेट्टी (घोड़ा व्यापारी)** कहा जाता था, वे भी व्यापार में भाग लेते थे।
- विजयनगर अपने मसालों, वस्त्रों और कीमती पत्थरों (जवाहरात) के बाजारों के लिए भी प्रसिद्ध था।
- जैसे-जैसे मुद्रा अर्थव्यवस्था का विकास हुआ, वैसे-वैसे सिक्कों के उपयोग में भी वृद्धि हुई।

विजयनगर साम्राज्य का प्रमुख सोने का सिक्का **वराह** था। **पर्टा** आधे वराह के बराबर था। **फैनम** पर्टा का दसवाँ हिस्सा था। **[यूपीएससी 2022]**

Search On TG: @apna_pdf

व्यापारिक संबंध और पुर्तगालियों का आगमन:

- **पुर्तगाली** 1498 ई. से नए प्रतिभागियों के रूप में उभरे। उनका लक्ष्य **पश्चिमी तट पर व्यापार और सैन्य चौकियाँ स्थापित करना था।**
- 16वीं शताब्दी की शुरुआत में आने वाले **पुर्तगाली और अन्य यूरोपीय व्यापारियों के लिए, कपड़ा** एक प्राथमिक आकर्षण के रूप में उभरा।
- बंदूक जैसी बेहतर सैन्य तकनीक ने इस युग की जटिल राजनीति में अपना महत्त्व बढ़ाया।

हम्पी / विजयनगर की स्थापत्यकला

- **निकोलो डी कोंटी, अब्दुर रज्जाक और अफानसी निकितिन**, जिनमें से सभी ने पंद्रहवीं शताब्दी में शहर की यात्रा की थी, और **दुआर्ते बारबोसा, डोमिंगो पेस (विजयनगर के राजधानी शहर की तुलना रोम से की थी), और फर्नाओ नुनिज,** जो सोलहवीं शताब्दी में आए थे, के वृत्तांतों में विजयनगर शहर का वर्णन मिलता है।
- **हम्पी की किलेबंदी: अब्दुर रज्जाक** ने हम्पी में **किलों की सात पंक्तियों का** उल्लेख किया है, जो न केवल शहर को, बल्कि इसके कृषि क्षेत्र और जंगलों को भी घेरे हुए थीं।
  - निर्माण में कहीं भी गारे या सीमेंट का उपयोग नहीं किया गया था।
  - **किले की दीवारों के अंदर कृषि** क्षेत्र भी थे।
  - प्रवेश द्वार पर मेहराब और गुंबद **इंडो-इस्लामिक** स्थापत्यकला की विशेषताओं को दर्शाते थे।
- हालाँकि, इसे द्रविड़ शैली के रूप में जाना जाता है, लेकिन इसकी अपनी अनोखी विशेषताएँ थीं जिसे **प्रोविदा शैली** कहा जाता है, जिसमें बड़ी संख्या में स्तंभ और खंभे प्रयुक्त होते हैं।
- **शहरी भवन क्षेत्र:**
  - यहाँ स्थित **मकबरों और मस्जिदों** के अलग-अलग कार्य थे, फिर भी उनकी स्थापत्यकला हम्पी के मंदिरों में पाए जाने वाले मंडपों से मिलती-जुलती है।
  - पूरा क्षेत्र कई मंदिरों और छोटे मंदिरों से घिरा हुआ था, जो विभिन्न प्रकार के पंथों के प्रचलन की ओर इशारा करता है, जिन्हें विभिन्न समुदायों का समर्थन प्राप्त था।
- **जल संसाधन**: चूँकि यह प्रायद्वीप के सबसे शुष्क क्षेत्रों में से एक था, इसलिए वर्षा जल का संग्रहण करने और इसे शहर तक पहुँचाने के लिए विस्तृत व्यवस्था की गई थी। उदाहरण के लिए, **कमलापुरम ताल** तथा **हिरिया नहर (तुंगभद्रा** से पानी लिया जाता था, स्पष्ट तौर पर **संगम वंश के राजाओं द्वारा निर्मित**)। शहर में तुंगभद्रा से पानी लाने के लिए एक विस्तृत नहर प्रणाली थी।
- विजयनगर शहर को **पवित्र** केंद्र और **शाही** केंद्र में विभाजित किया गया था।
- **शाही केंद्र में स्थित इमारतें**: महानवमी डिब्बा, लोटस महल, हजारा राम मंदिर आदि।
  - **महानवमी डिब्बा (Mahanavami Dibba)**:
    - यह शहर के सबसे ऊँचे स्थान पर स्थित सबसे लम्बी संरचना है।
    - इस मंदिर में महानवमी पर्व से जुड़े अनुष्ठान होते थे, जो हिंदुओं के दस दिवसीय शरद उत्सव (उत्तर भारत में दशहरा के रूप में मनाया जाता है) का एक महत्त्वपूर्ण दिन है।
    - **डोमिंगो पेस द्वारा द हाउस ऑफ विक्ट्री (The House of Victory)** के रूप में वर्णित।
  - **हजारा राम मंदिर**: मंदिर की भीतरी दीवारों पर **रामायण के दृश्य उत्कीर्णित हैं।**
  - अधिकांश मंदिर पवित्र केंद्र में स्थित थे, जबकि कई मंदिर शाही केंद्र में भी थे।
- **पवित्र केंद्र** में निम्नलिखित शामिल थे:
  - **गोपुरम और मंडप**: **राय गोपुरम** या शाही प्रवेश द्वार मंदिरों के केंद्रीय शिखर से ऊँचे होते थे। दिव्य विवाहों के लिए प्रयुक्त होने वाले **कल्याण मंडप,** इस अवधि के दौरान मंदिर निर्माण की एक उल्लेखनीय विशेषता थी। **[यूपीएससी 2019]**
  - मंदिरों में शाही मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं।
  - **विरुपाक्ष मंदिर (शिव** मंदिर): विरुपाक्ष साम्राज्य के संरक्षक देवता थे।
    - मुख्य मंदिर के सामने एक विशाल कक्ष, कृष्णदेव राय द्वारा अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में बनवाया गया था।
  - **विट्ठल मंदिर (विष्णु** मंदिर; विट्ठल, विष्णु का एक रूप जिसे आम तौर पर महाराष्ट्र में पूजा जाता है।)
    - इसमें कई विशाल कक्ष और रथ के आकार का एक अनोखा मंदिर है। मंदिर परिसर की एक विशिष्ट विशेषता **रथ मार्ग है** जो मंदिर के गोपुरम से एक सीधी रेखा में जाता है।
    - **यह संगीतमय स्तंभों** के लिए भी प्रसिद्ध था। **[यूपीएससी 2007]**
    - यह विजयनगर मंदिर स्थापत्यकला के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करता है।
    - इसका निर्माण **देवराय द्वितीय** के शासनकाल के दौरान 15वीं शताब्दी में किया गया था।
  - विजयनगर काल से पहले के **जैन मंदिर** भी पाए गए हैं, जो इस क्षेत्र में कई पवित्र परंपराओं के अस्तित्व का संकेत देते हैं।

घटनाक्रम

प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रम	
1200-1300 ई.	दिल्ली सल्तनत की स्थापना (1206 ई.)
1300-1400 ई.	विजयनगर साम्राज्य की स्थापना (1336 ई.); बहमनी साम्राज्य की स्थापना (1347 ई.); जौनपुर, कश्मीर और मदुरै में सल्तनत।
1400-1500 ई.	उड़ीसा के गजपति साम्राज्य की स्थापना (1435 ई.); गुजरात और मालवा की सल्तनतों की स्थापना; अहमदनगर, बीजापुर और बरार सल्तनतों का उदय (1490 ई.)
1500-1600 ई.	पुर्तगालियों द्वारा गोवा पर विजय (1510 ई.); बहमनी साम्राज्य का पतन, गोलकुंडा सल्तनत का उदय (1518 ई.); बाबर द्वारा मुग़ल साम्राज्य की स्थापना (1526 ई.)

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

4 मुगल साम्राज्य

परिचय

1526 ई. में बाबर द्वारा स्थापित मुगल साम्राज्य, लगभग **तीन शताब्दियों** तक भारत में फला-फूला और इसने भारत के सांस्कृतिक और प्रशासनिक ढाँचे का स्वरूप सुनिश्चित किया। हालाँकि, 1707 ई. में औरंगजेब के निधन के बाद, साम्राज्य का पतन होना शुरू हो गया और 1857 ई. में बहादुरशाह II के पतन के साथ ही इस साम्राज्य का अंततः पतन हो गया।

बाबर	1526-1530 ई.
हुमायूँ	1530-1540 ई. और 1555 -1556 ई.
अकबर	1556-1605 ई.
जहाँगीर	1605-1627 ई.
शाहजहाँ	1628-1658 ई.
औरंगजेब	1658-1707 ई.
बहादुर शाह प्रथम	1707-1712 ई.
जहाँदार शाह	1712-1713 ई.
फर्रुखसियर	1713-1719 ई.
मुहम्मद शाह	1719-1748 ई.
आलमगीर द्वितीय	1754-1759 ई.
शाह आलम द्वितीय	1759-1806 ई.
अकबर द्वितीय	1806-1837 ई.
बहादुर शाह द्वितीय	1837-1857 ई.

1540 से 1545 ई.के बीच शेरशाह सूरी के हाथ में दिल्ली का शासन था।

बाबर (1526-1530 ई.)

परिचय

- बाबर की विशिष्ट वंशावली की जड़ें **तुर्क-मंगोल** विजेताओं से जुड़ी हैं:
  - वह अपने पितृ वंश से **तैमूर** से जुड़ा था, और
  - अपने **मातृ** वंश से मंगोल शासक **चंगेज खाँ** से जुड़ा था।
- बाबर ने **फरगना** (उजबेकिस्तान का एक शहर) की छोटी रियासत पर अपने पिता के उत्तराधिकारी के रूप में शासन किया। उसे समरकंद को जीतने की महत्त्वाकांक्षा विरासत में मिली थी। हालाँकि, **वित्तीय तनाव और संभावित उज़्बेक खतरों** ने, बाबर को आगे के अभियान के लिए भारत को एक शरणस्थल और रणनीतिक आधार के रूप में विचार करने के लिए प्रेरित किया। जब बाबर ने अफगानिस्तान पर विजय प्राप्त की, तब उसका मानना था कि उसका इन क्षेत्रों (जैसे पंजाब) पर दावा सही था क्योंकि उन पर **बाबर के पूर्वज, तैमूर** द्वारा कब्जा कर लिया गया था।
- भारत में अस्थिर राजनीतिक परिदृश्य और इब्राहिम लोदी के खिलाफ अफगानों और राजपूतों के बीच असंतोष ने उसकी विजय को आसान बना दिया। प्रारंभ में उसे अपने आक्रमण के लिए दौलत खाँ लोदी और राणा सांगा जैसे शासकों से समर्थन प्राप्त हुआ।
- लोदी और राजपूतों की संयुक्त सेना को हराने के बाद, बाबर ने काबुल और कंधार को उत्तरी भारत में फिर से मिला लिया।
  - इसने कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद पहली बार रणनीतिक सुरक्षा प्रदान की और इस प्रकार, भारत में एक केंद्रीकृत साम्राज्य का मार्ग प्रशस्त हुआ।
  - इस एकीकरण ने विदेशी व्यापार को सुविधाजनक बनाया जिससे भारत, ट्रांस-एशियाई व्यापार नेटवर्क के साथ जुड़ गया।

भारत में प्रमुख विजय

- **पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई.):** यह बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच लड़ा गया था।
  - बाबर ने अपने शासन को मजबूत करने के लिए राजपूतों और अफगानों को अपने अधीन करने के इरादे से, दिल्ली और आगरा पर विजय प्राप्त की।
- **खानवा का युद्ध (1527 ई.):** एक ओर बाबर की सेना और दूसरी ओर राणा सांगा, महमूद लोदी (इब्राहीम लोदी का भाई) और हसन खाँ मेवाती (मेवात का शासक) की संयुक्त सेना के बीच युद्ध हुआ।
  - खानवा के युद्ध में विजय के बाद उसने गाजी की उपाधि धारण की।
- **चंदेरी का युद्ध (1528 ई.):** मालवा में चंदेरी के मेदिनी राय पर बाबर ने विजय प्राप्त की।
- **घाघरा का युद्ध (1529 ई.):** बाबर का अंतिम युद्ध अफगानों के खिलाफ था। उसने घाघरा के किनारे महमूद लोदी और नुसरत शाह (बंगाल) की संयुक्त सेना के खिलाफ युद्ध लड़ा। हालाँकि, 1530 में आगरा से लाहौर की यात्रा के दौरान बाबर की मृत्यु हो गई।

सेना और युद्धकला:

- हालाँकि, बारूद के बारे में भारत में पहले से ही जानकारी थी, लेकिन बाबर ने तोपखाने और घुड़सवार सेना के साथ इसके कुशल उपयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया। [यूपीएससी 2015]
- बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में एक नई युद्ध पद्धति का उपयोग किया जिसे तुलुगमा पद्धति के नाम से जाना जाता है। तुलुगमा का अर्थ पूरी सेना को विभिन्न इकाइयों में विभाजित करना था।
- **रणनीतिक संपत्ति के रूप में घोड़े:** खैबर दर्रे पर नियंत्रण रखने के कारण मुगलों को पश्चिम से अच्छी नस्ल के घोड़े लगातार मिलते रहे, जिससे उनकी सैन्य क्षमताएँ बढ़ती गईं।

Search On TG: @apna_pdf

सोलहवीं सदी के युद्ध में **तोपें एक महत्त्वपूर्ण योगदानकर्ता थीं।** बाबर ने इनका प्रभावी ढंग से प्रयोग, **पानीपत के प्रथम युद्ध में किया था।**

- **स्थापत्यकला: चार बाग शैली** (फारसी शैली के उद्यान) की शुरुआत की; **पानीपत** और **संभल** में मस्जिदों का निर्माण कराया।

साहित्य:

- बाबर की आत्मकथा, तुज़ुक-ए-बाबरी (बाबरानामा):
  - इस आत्मकथा से उसकी सैन्य रणनीतियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
  - यह उसकी मातृभाषा तुर्की में लिखी गयी है।
  - यह बाबर के भारतीय भूमि के प्रति प्रेम को दर्शाती है।
- बाबर ने विस्तृत लेखन के प्रति अपने उत्साह के साथ संस्मरण रखने की परंपरा स्थापित की, भारत में उसके उत्तराधिकारियों ने भी इस प्रथा का पालन किया।
- वह फारसी और अरबी में निपुण था।

धार्मिक दृष्टिकोण:

- एक रूढ़िवादी सुन्नी होने के बावजूद, बाबर ने खुले विचारों वाला दृष्टिकोण बनाए रखा।
- वह नक्शबंदिया सूफी ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार के प्रति समर्पित था।

हुमायूँ (1530-1540 ई. और 1555-1556 ई.)

परिचय

1530 ई. में बाबर के बाद, हुमायूँ पूर्व में अफगानों के बढ़ते प्रभाव के बीच **असंगठित प्रशासन और वित्तीय अस्थिरता** जैसी चुनौतियों से जूझ रहा था। उसके भाई **कामरान** ने काबुल, कंधार और पंजाब पर शासन किया, जो खंडित अधिकार और शासन की चुनौतियों को उजागर करता है।

भारत में प्रमुख विजय

- **चुनार की घेराबंदी [मिर्जापुर] (1532 ई.):** हुमायूँ ने ददराह में अफगानों को पराजित किया और उसके बाद चुनार किले (जिसे पूर्वी भारत का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है) को घेर लिया।
- **चौसा का युद्ध [बक्सर] (1539 ई.):** शेरशाह सूरी के हाथों हुमायूँ को पराजय का सामना करना पड़ा, युद्ध के मैदान में वह बाल-बाल बचा।
- **कन्नौज का युद्ध (1540 ई.):** शेरशाह सूरी ने हुमायूँ पर पूर्ण विजय प्राप्त की और एक स्वतंत्र शासन स्थापित किया।
- गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने मुगल सम्राट हुमायूं के खिलाफ सैन्य सहायता मांगने के बाद 1535 में दीव को पुर्तगालियों को सौंप दिया था। इससे दीव पर पुर्तगाली नियंत्रण की शुरुआत हुई। **[UPSC 2023]**

हुमायूँ का निर्वासन (1540-1555 ई.):

- शेरशाह सूरी के भय से हुमायूँ भारत से भाग गया और अमरकोट (सिंध, पाकिस्तान) में रहने के दौरान 1542 ई. में अकबर का जन्म हुआ।
- इसके बाद हुमायूँ ईरान चला गया और ईरान के शासक, सफ़ाविद शाह से सहायता माँगी।
- इसके साथ-साथ, भारत में सूर राजवंश का तेजी से पतन हो रहा था। हुमायूँ ने 1555 ई. में अफगानों पर विजय प्राप्त की और बैरम खाँ के समर्थन से दिल्ली पर पुनः कब्जा कर लिया।
- 1556 ई. में पुराना किला स्थित शेर-ए-मण्डल नामक पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

भारत में हुमायूँ का शासन

स्थापत्यकला:

- दीनपनाह नाम से एक नया शहर बसाया।
- दिल्ली में जमाली मस्जिद और ईसा खाँ की मस्जिद का निर्माण कराया।
- उनकी पत्नी हमीदा बानो बेगम ने, हुमायूँ के मकबरे का निर्माण शुरू कराया।

चित्रकला:

- हुमायूँ ने फारस में रहते हुए मुगल चित्रकला की नींव रखी और प्रसिद्ध चित्रकारों मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद को भारत लाया।
- उसने अपने पुस्तकालय के एक हिस्से में निगार खाना (चित्रकला कार्यशाला) की स्थापना की।

साहित्य:

- उसकी बहन गुल बदन बेगम ने "हुमायूँ-नामा" लिखी।
- उन्होंने हमजा नामा को चित्रित करने की परियोजना शुरू की, जिसे अकबर ने जारी रखा।

शेरशाह सूरी (सूर साम्राज्य) (1540-1555 ई.)

परिचय

फरीद, जिसे शेर खाँ के नाम से भी जाना जाता है, लोदी शासन के दौरान जौनपुर साम्राज्य के हसन खाँ (जागीरदार) का पुत्र था। एक बाघ को मारने के बाद उसे शेर खाँ की उपाधि मिली।

विजय

- उसने 1540 ई. में हुमायूँ को हराकर भारत में दूसरे अफगान साम्राज्य की स्थापना की।
- शेरशाह के विजय अभियान में 1542 ई. में मालवा और रणथंभौर, 1543 ई. में रायसेन (भोपाल के पास), 1544 ई. में चित्तौड़, और 1545 ई. में कालिंजर (बांदा जिला, उत्तर प्रदेश) की विजय शामिल थी।
- कालिंजर किले की घेराबंदी के दौरान अचानक बारूद विस्फोट होने के कारण शेरशाह की मृत्यु हो गई।
- इस्लाम शाह (1545-53 ई.) और आदिल शाह सूरी (1555 ई.) इस वंश के अंतिम शासक माने जाते हैं।

प्रशासन:

उसने **अत्यधिक केंद्रीकृत शासन की** स्थापना की।

- **प्रमुख मंत्री:**
  - दीवान-ए-विजारत (वजीर) - राजस्व और वित्त का प्रभारी,
  - दीवान-ए-आरिज - सेना की देखरेख करने वाला,
  - दीवान-ए-रिसालत - विदेश मंत्री, और
  - दीवान-ए-इंशा - संचार व्यवस्था संभालने वाला।
- शेरशाह ने अपने साम्राज्य को सरकारों में विभाजित किया।
  - प्रत्येक सरकार का शासन एक मुख्य शिकदार (कानून और व्यवस्था) और एक मुख्य मुंसिफ (न्यायाधीश) के अधीन था।
- प्रत्येक सरकार को आगे कई परगनों में विभाजित किया गया था।
  - प्रत्येक परगना का प्रशासन एक शिकदार (सैन्य अधिकारी), अमीन (भूराजस्व अधिकारी), फोतेदार (कोषाध्यक्ष) और कारकुन (लेखाकार) द्वारा किया जाता था।

Search On TG: @apna_pdf

- गाँव (मौजा) मूल राजस्व इकाई था, जिसमें वंशानुगत मुखिया कर एकत्र करते थे और राज्य एवं किसानों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते थे।
- अमीन, तटबंधों के निर्माण और मरम्मत तथा खेती योग्य भूमि की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार था।
  - अन्य अधिकारियों में खजानदार (कोषाध्यक्ष), मुंसिफ-ए-खजाना (कोष निरीक्षक) और कानूनगो (राजस्व अभिलेख रखने वाला) शामिल थे।
  - लचीली राजस्व प्रणाली: शेरशाह ने भारत में फसल-दर (राय) प्रणाली की स्थापना की, जिसमें मिट्टी की उर्वरता को ध्यान में रखते हुए, राज्य की माँग की गणना प्रति बीघे औसत उपज के एक-तिहाई के रूप में की गई। इस राशि का भुगतान मौजूदा बाजार दरों पर नकद में किया जा सकता था।
  - अकाल और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए 2.5 सेर प्रति बीघा की दर से उपकर भी लगाया गया था।
  - किसानों को पट्टा (बोया गया क्षेत्र, फसलों का प्रकार, और प्रत्येक किसान को भुगतान की जाने वाली राशि एक कागज पर लिखी जाती थी) और कबूलियत (समझौता पत्र) प्रदान किया जाता था।

एक रूढ़िवादी सुन्नी के रूप में, वे निष्पक्ष न्याय करने के लिए विख्यात हैं, यहां तक कि उन्होंने कुलीनों या रिश्तेदारों को भी दंडित किया।

- बड़े पैमाने पर दान, निराश्रितों को वजीफा देना।
- यद्यपि जिज़िया कर वसूला जाता रहा, फिर भी इसे नगर कर कहा जाता है, जिसका तात्पर्य है कि इसे ग्रामीण क्षेत्रों में भू-राजस्व के एक भाग के रूप में वसूला जाता था।

व्यापार:

- व्यापार शुल्क को सुव्यवस्थित किया और केवल प्रवेश एवं बिक्री बिंदुओं पर कर एकत्र किया;
- सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्कों में धातु की मात्रा का मानकीकरण किया;
- व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए एक समान वजन और माप की एक प्रणाली बनाई गई।
- 178 ग्रेन वजन का चाँदी का सिक्का जारी किया, जिसे रुपिया कहा जाता था।

सेना:

- इसे तीन खंडों में विभाजित किया गया था अर्थात घुड़सवार, हाथी और पैदल यात्री।
- व्यक्तिगत सेना, जिसे शाही खालसा खेल के नाम से जाना जाता था।
- दाग और हुलिया/चेहरा की प्रथा को पुनर्जीवित किया।
- **स्थापत्यकला**
  - ग्रैंड ट्रंक रोड का पुनरुद्धार किया - (प्राचीन काल का उत्तरापथ)
    - बंगाल में **ताम्रलिप्ति से लेकर** पेशावर में **पुरुषपुर तक।**
    - व्यापार मार्गों पर **सरायों (विश्राम गृहों)** का निर्माण करवाया।
  - दिल्ली में एक नए परकोटे वाले शहर का निर्माण, जिसे पुराना किला के नाम से जाना जाता है।
  - सासाराम (बिहार) में अपनी स्वयं की समाधि का निर्माण करवाया।
- शेरशाह एक रूढ़िवादी सुन्नी था, वह निष्पक्ष न्याय देने, यहाँ तक कि दमनकारी सामंतों या रिश्तेदारों को भी दंडित करने के लिए प्रसिद्ध है।
  - बड़े पैमाने पर दान दिया, निराश्रितों को वजीफा दिया।
  - हिंदुओं पर जजिया कर लगाया।

अकबर (1556-1605 ई.)

परिचय

- अकबर का जन्म 1542 **ई.** में हुमायूँ के निर्वासन के दौरान **अमरकोट में** हुआ था।
- 1556 ई. में हुमायूँ की मृत्यु के बाद, 13 वर्ष की उम्र में अकबर का राज्याभिषेक पंजाब के कलानौर में हुआ।
- अकबर का मकबरा सिकंदरा (आगरा के पास) में स्थित है।

अकबर इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ-प्रथम का समकालीन था। इनके शासनकाल में (1600) ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई ।

- **बैरम खाँ:** वह अकबर का **शिक्षक** और हुमायूँ का **सलाहकार था।** उसने 1556-60 ई. तक राज्य-संरक्षक **के रूप में कार्य किया** और शुरुआती विजयों की कमान संभाली, जिससे मुगल साम्राज्य का **काबुल से जौनपुर तक विस्तार हुआ**, जिसमें ग्वालियर और अजमेर जैसे क्षेत्र भी शामिल थे।
- **बाहरी चुनौतियाँ: आदिल शाह ने** मुगलों को खदेड़ने के लिए **हेमू** को **वजीर** नियुक्त किया और उसने **'विक्रमादित्य अर्थात विक्रमजीत की उपाधि धारण की।** हेमू ने आगरा पर विजय प्राप्त की और दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। हालाँकि, **बैरम खाँ ने** शेरशाह सूरी के खतरे को बेअसर करते हुए, उसे **पानीपत के द्वितीय युद्ध (1556 ई.) में पराजित कर दिया।**
- **आंतरिक चुनौती: बैरम खाँ को** अन्य अमीरों के प्रति उसके अहंकार के कारण बर्खास्त कर दिया गया और अकबर ने उसके विद्रोह को तुरंत कुचल दिया। मक्का जाते हुए रास्ते में उसकी हत्या कर दी गई और उसके परिवार को दिल्ली स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ उसके बेटे **अब्दुर रहीम** ने अकबर के दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त की और उन्हें **खान-ए-खाना की उपाधि से नवाजा गया।**

भारत में प्रमुख विजय

- **पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556 ई.):** 1556 ई. में अकबर के अधीन मुगल सेना ने हेमू और अफगान सेना को पराजित कर दिया।
- **मालवा (1562 ई.):** बाज बहादुर (मालवा का अंतिम सुल्तान; राजधानी मांडू) को पराजित किया; जिसने बाद अकबर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।
- **गोंडवाना (1564 ई.):** रानी दुर्गावती ने मुगल विस्तार का विरोध किया लेकिन उसे इसमें पराजय का मुँह देखना पड़ा।
- **मेवाड़ (1568 ई.):** राणा उदय सिंह के पीछे हटने के बाद चित्तौड़ पर कब्जा कर लिया। चित्तौड़ के पतन के साथ ही रणथंभौर और जोधपुर जैसे कई राजपूत राज्यों ने भी आत्मसमर्पण कर दिया।
- **गुजरात (1573 ई.):** मुजफ्फर शाह के बाद से गुजरात, दक्कन पर कब्जे के लिए एक लॉन्च पैड बन गया।
- **हल्दीघाटी का युद्ध (1576 ई.):** हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर ने निर्णायक जीत हासिल की, जहाँ महाराणा प्रताप को मान सिंह के नेतृत्व वाली मुगल सेना के हाथों बड़ी पराजय का सामना करना पड़ा। इस विजय के परिणामस्वरूप, अधिकांश प्रमुख राजपूत शासकों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।
- **बिहार और बंगाल का विलय (1576 ई.):** बिहार और बंगाल के अफगान शासक दाउद खाँ को पराजित किया और बाद में 1576 ई. में दोनों प्रांतों को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

Search On TG: @apna_pdf

- **उत्तर और उत्तर-पश्चिम:** काबुल के मिर्जा हकीम को पराजित किया। बाद में 1586 ई. में कश्मीर और 1591 ई. में सिंध पर उसकी विजय ने उत्तर-पश्चिम में और अधिक मजबूती प्रदान की।
- **दक्कन क्षेत्र:** 1591 ई. में खानदेश क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। 1596 ई. तक, अहमदनगर की संरक्षिका चाँद बीबी से बरार का अधिग्रहण कर लिया गया। अहमदनगर के कुछ हिस्से 1600 ई. तक मुगल नियंत्रण में थे।

केंद्रीय प्रशासन:

- **वजीर या दीवान-ए-आला:** राजस्व विभाग का प्रमुख था लेकिन उसके पास कोई उच्च मनसब नहीं होता था। वह सभी आय और व्यय के लिए जिम्मेदार था और खलीसा, जागीर एवं इनाम भूमि पर नियंत्रण रखता था।

- **खालसा:** सीधे सम्राट के स्वामित्व वाली भूमि।
- **जागीर:** मनसबदारों को वेतन के रूप में दी जाती थी।
- **इनाम:** विद्वान और धार्मिक पुरुषों को सौंपी जाती थी।

- इनाम अनुदान सभी धर्मों के लोगों को दिए गए, जिसने खेती को प्रोत्साहित किया गया। मुगल अमीरों के उच्च वेतन के कारण इसने विदेशी प्रतिभाओं को आकर्षित किया।
- **मीर बख्शी:** सैन्य प्रशासन का प्रमुख था तथा सशस्त्र टुकड़ियों और युद्ध उपकरणों की देखरेख के लिए जिम्मेदार था। वह व्यक्तिगत रूप से घोड़ों की ब्रांडिंग (दाग) की निगरानी करता था और सैनिकों के मस्टर-रोल (चेहरा) की जाँच करता था। मनसबदारों की नियुक्तियों और उनके वेतन पत्रों के सभी आदेश, उसके द्वारा अनुमोदित और पारित किए जाते थे। वह खुफिया और सूचना एजेंसियों का प्रमुख भी था।

- खुफिया अधिकारी **(बरीद)** और समाचार देने वाले **(वाकिया नवीस)** पूरे साम्राज्य में तैनात किये गए थे।
- अकबर व्यक्तिगत सैनिकों **(अहदी सैनिकों)** की एक टुकड़ी भी रखता था। वे सम्राट के अपने घरेलू सैनिक थे जिन्हें सीधे मुगल सम्राट द्वारा भर्ती किया जाता था, जो मुख्य रूप से सम्राट के अपने रक्त संबंधियों और कबीलों से होते थे।
- **बर्नियर** शाही कारखानों या कार्यशालाओं के कामकाज का विस्तृत विवरण प्रदान करता है।

- **मीर समान:** शाही घराने का प्रभारी, आपूर्ति और रसद का प्रबंध करता था। वह कारखानों में विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन की देखरेख करता था और दरबार के शिष्टाचार को बनाए रखने और शाही अंगरक्षकों को नियंत्रित करने के लिए जिम्मेदार था।

कोर्निश: विनम्रता और समर्पण का प्रतीक एक औपचारिक अभिवादन था, जिसमें दरबारी अपनी दाहिनी हथेली अपने माथे पर रखकर और अपना सिर झुकाकर अभिवादन करता था।

- **सद्र-उस-सुदूर:** वह धार्मिक मामलों का प्रधान होता था। उसका मुख्य कर्तव्य शरीयत के कानूनों की रक्षा करना था। वह दान-नकद (वजीफा) और भूमि अनुदान (सुयुर्गल, इनाम, मदद-ए-माश) का वितरण भी संभालता था।
- बर्नियर शाही कारखानों या कार्यशालाओं की कार्यप्रणाली का विस्तृत विवरण प्रदान करता है।

प्रांतीय प्रशासन:

साम्राज्य को 12 **प्रांतों (सूबों)** में विभाजित किया गया, प्रत्येक को एक **दीवान, बख्शी, सद्र** और **काजी प्रदान किया गया था**, जो अपने केंद्रीय समकक्षों के समान, कार्यों के लिए जिम्मेदार थे। प्रांतों को आगे **सरकार** और **परगना में विभाजित किया गया था।** **[यूपीएससी 2021]**

सूबा (प्रांत):

- सूबेदार इसका प्रधान होता था जो कानून और व्यवस्था के लिए जिम्मेदार होता था।
- दीवान राजस्व का प्रबंधन करता था, कर संग्रहण की निगरानी करता था और खेती की भूमि में वृद्धि करता था।
- राजस्व विभाग के माध्यम से किसानों के लिए तकावी (ऋण) की सुविधा दी जाती थी।
- बख्शी घोड़ों और सैनिकों की देखरेख करता था।
- सदर धार्मिक और न्यायिक मामलों की देखरेख करने वाले केंद्रीय प्राधिकरण का प्रतिनिधित्व करता था।

सरकार (जिला):

- फौजदार इसका प्रधान होता था जो विद्रोहों और कानून-व्यवस्था की समस्याओं का ध्यान रखने, निवासियों की रक्षा करने और राजस्व संग्रहण में सहायता करने के लिए जिम्मेदार था।
- अमलगुजार/आमिल सबसे महत्त्वपूर्ण राजस्व संग्रहकर्ता था। एक अच्छे आमिल से अपेक्षा की जाती थी कि वह खेती योग्य भूमि को बढ़ाए और किसानों को बिना किसी दबाव के स्वेच्छा से, राजस्व का भुगतान करने के लिए प्रेरित करे।

परगना:

- शिकदार (कार्यकारी अधिकारी) इसका प्रधान होता था जो राजस्व संग्रहण में अमलगुजार की सहायता करता था।
- कानूनगो भूमि अभिलेख रखता था।
- शहरों में नियुक्त कोतवाल, कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार था।

गाँव:

- मुकद्दम (ग्राम प्रधान) इसका प्रधान होता था।
- पटवारी गाँव के राजस्व अभिलेख का प्रबंधन करता था।
- जमींदार कानून एवं व्यवस्था तथा राजस्व संग्रहण में सहायता करते थे।
- किलादार किलों के प्रशासन के लिए जिम्मेदार था।

भू-राजस्व प्रणाली:

- भू-राजस्व व्यवस्था में राजस्व संग्रहण के दो चरण शामिल हैं:
- कर निर्धारण (जमा) और वास्तविक संग्रहण (हासिल)।

भू-राजस्व प्रणाली:

- शेरशाह की प्रणाली को संशोधित किया और राजा टोडरमल ने भूमि माप और वर्गीकरण को मानकीकृत करके, इसे और परिष्कृत किया।
- राजस्व औसत उपज का एक-तिहाई निर्धारित किया गया था और इसका भुगतान मुख्य रूप से नकद में किया जाता था।
- जब्त/जब्ती प्रणाली (शेरशाह द्वारा लागू की गई और अकबर द्वारा अपनाई गई) राजा टोडर मल ने सुधारों के साथ लागू किया, जिसे टोडर मल का बंदोबस्त भी कहा जाता है।
- 1580 ई. में शुरू की गई दहसाला प्रणाली में स्थानीय कीमतों को ध्यान में रखते हुए पिछले दस वर्षों की औसत उपज के आधार पर राजस्व की गणना की जाती थी। समान उत्पादकता वाले परगनाओं को अलग-अलग कर-निर्धारण मंडलों में संगठित किया गया था।

Search On TG: @apna_pdf

- भूमि को उनकी संबंधित कर-निर्धारण दरों के आधार पर निम्नलिखित में वर्गीकृत किया गया था:
  - पोलज (लगभग हर साल खेती के तहत भूमि),
  - परती (ऐसी भूमि जिस पर 1 से 2 वर्ष के अंतराल पर खेती होती थी),
  - चाचर (दो से तीन वर्षों तक परती),
  - बंजर (पाँच से अधिक वर्षों तक परती)
- करोड़ी को राजस्व संग्रहण एवं लेखापरीक्षा के लिए नियुक्त किया जाता था।
- आमिलों (राजस्व संग्रहकर्ताओं) को विभिन्न आवश्यकताओं के लिए तकावी ऋण प्रदान करके और आसान किश्तों में पुनर्भुगतान की व्यवस्था करके, किसानों की सहायता करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।

अकबर के शासनकाल के दौरान लगान की विधियाँ:

- **बटाई/गल्ला बख्शी (Batai/Ghalla Bakhshi):** किसान और राज्य के बीच फसल का बँटवारा, जिसका नकद या वस्तु के रूप में भुगतान किया जाता था। इसमें शामिल थे:
  - बटाई या भाओली (फसल काटने के बाद उसका बँटवारा);
  - खेत-बटाई (बुवाई के बाद खेत बाँटना);
  - लंग-बटाई (फसल का ढेर लगाने के बाद अनाज का बँटवारा)
- **हस्त-ओ-बद (Hast-o-bud):** अधिकारी कुल उपज का अनुमान लगाते थे और गाँव का निरीक्षण करके राजस्व माँग निर्धारित करते थे साथ ही कुल उपज का आकलन करने के लिए हलों की संख्या पर विचार कर थे।
- **कनकुट (Kankut):** भूमि की माप की जाता थी और प्रत्येक खड़ी फसल के लिए प्रति इकाई उपज का अनुमान लगा कर लगान निश्चित करती ।
- **नसक (Nasaq):** राज्य के राजस्व की गणना के लिए पिछले आकलन का इस्तेमाल किया जाता था।

मनसबदारी व्यवस्था

"मनसबदार" शब्द उस व्यक्ति के लिए उपयोग किया जाता था जिसके पास मनसब होता था, जिसका अर्थ है कोई पद या **रैंक**। यह एक **ग्रेडिंग प्रणाली** थी जिसका उपयोग मुगलों द्वारा **(1) रैंक, (2) वेतन और (3) सैन्य जिम्मेदारियों** को तय करने के लिए किया जाता था।

- पद और वेतन का निर्धारण, जात (zat) नामक संख्यात्मक मान द्वारा किया जाता था। जात जितनी ऊँची होती थी, दरबार में अमीर का पद उतना ही अधिक प्रतिष्ठित होता था और उसका वेतन भी उतना ही अधिक होता था।
- मनसबदार की सैन्य जिम्मेदारियों के लिए उसे एक निश्चित संख्या में सवार या घुड़सवार सैनिक रखने की आवश्यकता होती थी।
  - मनसबदार अपने घुड़सवारों को निरीक्षण के लिए लाता था, उनका पंजीकरण कराता था, उनके घोड़ों की ब्रांडिंग की जाती थी (घोड़ों को दागा जाता था) और फिर उन्हें वेतन के रूप में भुगतान करने के लिए मनसबदार को धन प्राप्त होता था।
  - 500 ज़ात से नीचे के पद वाले व्यक्तियों को मनसबदार कहा जाता था; 500 से 2500 से नीचे के पद वाले लोगों को अमीर कहा जाता था और 2500 और उससे अधिक पद वाले लोगों को अमीर-ए-उम्दा या उम्मीद-ए-आज़म कहा जाता था।
  - हालाँकि मनसबदार शब्द का प्रयोग कभी-कभी तीनों श्रेणियों के लिए किया जाता था। दाग़ प्रणाली का उपयोग कर मनसबदारी प्रणाली को प्रभावी बनाया गया। दाग़ प्रणाली का उपयोग कर मनसबदारी प्रणाली को प्रभावी बनाया गया।
  - मनसबदारों को उनका वेतन जागीर के रूप में मिलता था।
  - जागीरें कुछ हद तक इक्ता जैसी होती थीं। लेकिन मुक्ती के विपरीत, अधिकांश मनसबदार वास्तव में अपनी जागीरों में नहीं रहते थे या उनका प्रशासन नहीं करते थे। उनके लिए राजस्व उनके नौकरों द्वारा एकत्र किया जाता था जबकि मनसबदार, स्वयं देश के किसी अन्य हिस्से में सेवा करते थे।
  - जागीरों का नियमित रूप से हस्तांतरण किया जाता था और वे वंशानुगत नहीं थीं। इसके अलावा, मनसबदार की मृत्यु पर इन्हें राज्य को वापस कर दिया जाता था।

- राजस्व उद्देश्यों के लिए, सारी भूमि को दो भागों में बाँट दिया गया - **जागीर** और **खलीसा**।
- **खलीसा** से एकत्र किया गया भू-राजस्व **शाही खजाने में जाता था,** जबकि **जागीर से प्राप्त राजस्व मनसबदारों के पास जाता था।**

- राजा मान सिंह और मिर्जा अजीज कोका जैसे असाधारण व्यक्तियों के पास 7,000 घुड़सवार थे। इस प्रणाली के कारण अमीर वर्ग में विविधता आ गई। इसमें शुरू में मध्य एशियाई और फारसी, लेकिन बाद में राजपूत और शेखजादा (भारतीय मुस्लिम) भी शामिल हो गए।

राजपूत नीति

- सुलह नीति अपनाई, उनके परिवारों के साथ वैवाहिक संबंध बनाए और उन्हें दरबारों में उच्च पद सौंपे।
- उसने हरखा बाई (आमेर के राजा भारमल की बेटी) और बीकानेर एवं जैसलमेर की राजकुमारियों से शादी की।

स्थापत्यकला:

- **किले:** आगरा के किले का निर्माण लाल बलुआ पत्थर का उपयोग करके किया गया था। इसके अलावा लाहौर और इलाहाबाद में किलों का निर्माण करवाया गया।
  - अकबर ने मान मंदिर से प्रेरित हिंदू डिजाइन सिद्धांतों के आधार पर आगरा किले के अंदर जहाँगीरी महल का निर्माण करवाया।
- **फतेहपुर सीकरी (विजय का शहर):** यह एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। इसमें निम्नलिखित शामिल है:
  - बुलंद दरवाजा (1572-73) ई. में गुजरात पर विजय के बाद निर्मित, जामा मस्जिद, जोधा बाई का महल, बौद्ध विहार के समान डिजाइन किया गया पंच महल, दीवान-ए-खास, दीवान-ए-आम और शेख सलीम चिश्ती का मकबरा।

धार्मिक दृष्टि कोण:

- **सुधारात्मक उपाय**
  - युद्ध बंदियों का जबरन धर्मांतरण बंद कराया।
  - 1563 ई. में तीर्थयात्रा पर कर और 1564 ई. में जजिया कर समाप्त कर दिया।
  - सती प्रथा को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया; विधवा पुनर्विवाह की अनुमति दी गई।
  - हिंदुओं को नए मंदिरों की मरम्मत और निर्माण की अनुमति दी गई।
- **फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना का निर्माण करवाया**
  - धार्मिक चर्चा के लिए हिंदू धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म और पारसी धर्म सहित विभिन्न धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित किया गया।
  - इबादत खाना के विद्वानों में पुरसोत्तम दास, हीरा विजय सूरी, दस्तूर मेहरजी राणा, मोनसेरेट और रोडोल्फो एक्वाविवा शामिल थे।

Search On TG: @apna_pdf

- **दीन-ए-इलाही**
  - अकबर ने 1582 ई. में दीन-ए-इलाही या तौहिंद-ए-इलाही (ईश्वरीय एकेश्वरवाद) नामक एक नया धर्म शुरू किया।
  - इसमें एक ईश्वर में विश्वास और "सुलह-ए-कुल" पर जोर दिया गया है, जिसमें तर्कसंगत आधार पर विभिन्न धर्मों के सकारात्मक पहलुओं को शामिल किया गया, जैसा कि बदायूँनी द्वारा प्रलेखित किया गया है। प्रयासों के बावजूद, दीन-ए-इलाही को व्यापक स्वीकृति नहीं मिली और अकबर के निधन के बाद यह धीरे-धीरे समाप्त हो गया।
  - अकबर के जीवनकाल के दौरान, बीरबल, अबुल फजल और अबुल फैजी सहित केवल कुछ व्यक्तियों ने इस नए धर्म का पालन किया।

सुलह-ए-कुल (सार्वभौमिक शांति)
अबुल फजल ने सुलह-ए-कुल के आदर्श को धार्मिक सहिष्णुता और **समावेशिता** के माध्यम से **प्रबुद्ध शासन** की आधारशिला के रूप में वर्णित किया है। सुलह-ए-कुल में, सभी धर्मों और विचारधाराओं को **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता थी**, लेकिन इस शर्त पर कि वे राज्य के अधिकार को कमजोर नहीं करेंगे या आपस में नहीं लड़ेंगे।

- जैन भिक्षु हरि विजय सूरी अकबर के दरबार में कुछ वर्षों तक रहे और उन्हें जगद्गुरु की उपाधि से नवाजा गया।

साहित्य:

- अकबरनामा का संकलन अबुल फजल ने किया था। इसमें अकबर के शासनकाल के इतिहास के तीन खंड शामिल थे।
  - पहला खंड अकबर के पूर्वजों से संबंधित था।
  - दूसरे खंड में अकबर के शासनकाल की घटनाओं का वर्णन किया गया था।
  - तीसरा खंड आइन-ए-अकबरी था।
- **आइन-ए-अकबरी में निम्नलिखित का विवरण है-**
  - अकबर का प्रशासन, सेना, राजस्व और उसके साम्राज्य का भूगोल।
  - भारत में रहने वाले लोगों की परंपराओं और संस्कृति के बारे में विवरण।
  - फसलों, पैदावार, कीमतों और मजदूरी के बारे में सांख्यिकीय विवरण।

अकबर ने 1574 **ई.** में फतेहपुर सीकरी में एक **मकतब खाना ('अनुवाद गृह') स्थापित किया। इसका अध्यक्ष अबुल फजल था। इसका प्राथमिक उद्देश्य अंतर-धार्मिक सहयोग था।**

- **अनुवाद**
  - महाभारत, जिसका नाम बदलकर 'रज्मनामा' (युद्धों की पुस्तक) रखा गया, का फारसी में अनुवाद किया गया। यह कार्य बदायूँनी और फैजी की देखरेख में पूरा हुआ।
  - भास्कराचार्य की लीलावती का फैजी द्वारा फारसी में अनुवाद किया गया।
  - बीसवीं सदी की शुरुआत में हेनरी बेवरिज द्वारा अकबरनामा का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। सुलेख, हस्तलेखन की कला को प्रमुखता मिली।

किताबखाना एक पुस्तकालय था, अर्थात वह स्थान जहाँ बादशाह की पांडुलिपियों का संग्रह किया जाता था और नई पांडुलिपियाँ तैयार की जाती थीं।

  - सुलेख, हस्तलेखन की कला, को प्रमुखता मिली।
  - मुहम्मद हुसैन अल-कातिब कश्मीरी (लगभग 1575-1605 ई.) सम्राट अकबर के दरबार में सबसे प्रसिद्ध सुलेखक था। अकबर ने उसे जरीन कलम (Golden Pen) की उपाधि दी थी। उन्होंने जहाँगीर के दरबार में काम करना जारी रखा और उनका अभिलिखित कार्य 1580-1608 ई. के बीच का है। अकबर की पसंदीदा हस्तलिखित शैली नस्तालिक(एक लिपि) थी।

चित्रकला:

- प्रमुख चित्रकार: दसवंत और बसावन।
  - बसावन का मैडोना एंड चाइल्ड (1580) मुगल चित्रकला का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।
- अकबर हमजानामा (विशाल सचित्र पांडुलिपि के लिए विख्यात)
  - यह शानदार परियोजना दो फारसी उस्तादों मीर सैय्यद अली और अब्दुस्समद की देखरेख में पूरी हुई।
- **अकबर के नवरत्न:** अकबर के दरबार में **बुद्धिजीवियों का एक समूह था** जिन्हें नवरत्न कहा जाता था।

अबुल फजल	शाही दरबार का इतिहासकार जिसने **अकबरनामा लिखी**।
फैजी (राज कवि)	फारसी कवि और अबुल फजल का बड़ा भाई।
फकीर अजिओ दीन	एक सूफी फकीर और अकबर का प्रमुख सलाहकार।
तानसेन (रामतनु पांडे)	प्रसिद्ध संगीतकार, राजा रामचन्द्र के दरबारी संगीतकार, जिन्होंने ग्वालियर के सूफी फकीर मुहम्मद गौस के अधीन इस्लाम स्वीकार कर लिया। उन्हें **तानसेन की उपाधि ग्वालियर के राजा विक्रमजीत ने दी थी। [UPSC-2019]** अकबर ने उन्हें **"मियाँ"** नाम दिया।
बीरबल (कवि प्रिय)	एक दरबारी जिसे अकबर ने राजा और बीरबल की उपाधियाँ प्रदान कीं। उत्तर-पश्चिमी सीमा पर युसूफ शाहियों से लड़ते हुए मृत्यु हो गई।
राजा टोडरमल (उपाधि: दीवान-ए-अशरफ)	वित्त मंत्री, जो राजस्व व्यवस्था की देखरेख करते थे। मानक वजन, माप और राजस्व जिलों की शुरुआत की।
राजा मान सिंह	एक मनसबदार, अकबर का रिश्तेदार।
अब्दुल रहीम खान-ए-खाना	एक महान कवि; बाबरनामा का तुर्की में अनुवाद किया, बैरम खाँ के पुत्र थे।
मुल्ला दो-पियाजा	मुगल बादशाह अकबर के सलाहकार और वजीर।

जहाँगीर (1605-1627 ई.)

परिचय

- नूरुद्दीन जहाँगीर, सूफी संत शेख सलीम चिश्ती के नाम पर 'सलीम' के नाम से जाना जाता था।
- उसका जन्म राजपूत राजकुमारी मरियम-उज-जमानी से हुआ था।
- जहाँगीर का मकबरा लाहौर में है।

Search On TG: @apna_pdf

सैन्य अभियान/विजय:

- **राज्यक्षेत्रीय विस्तार:** उसके शासन काल में बहुत कम प्रगति हुई।
- उसके पुत्र खुसरो द्वारा असफल विद्रोह, गुरु अर्जन देव ने उसका साथ दिया, खुसरो को पकड़ लिया गया और गुरु अर्जुन देव को फाँसी दे दी गई। (मुगलों द्वारा फाँसी दिए जाने वाले पहले सिख गुरु)।
- **बंगाल:** जहाँगीर ने इस क्षेत्र में अफगान विद्रोही उस्मान खाँ को वश में किया।

> **गुरु तेग बहादुर:**
> 1675 **ई.** में औरंगजेब के आदेश पर मुगलों द्वारा मारे जाने वाले **दूसरे सिख गुरु।**

- **मेवाड़:** अपने बेटे खुर्रम (शाहजहाँ) के नेतृत्व में उसने राणा अमर सिंह के खिलाफ एक सैन्य अभियान के बाद मेवाड़ को अपने कब्जे में ले लिया।
- **दक्कन:** 1608 ई. में, अहमद नगर ने मलिक अंबर के नेतृत्व में स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। जहाँगीर के शासनकाल के दौरान, दक्कन में मुगल क्षेत्र अपरिवर्तित रहा।

> **जहाँगीर के शासनकाल के दौरान दो अंग्रेज यात्री भारत आए:**
> - **विलियम हॉकिन्स (1608-09) ई.):** वह कारखाना स्थापित करने के लिए जहाँगीर की सहमति प्राप्त करने में विफल रहा। उसे **400 का मनसब और 'इंगलिश खाँ'** की उपाधि दी गई, क्योंकि वह **तुर्की** भाषा में पारंगत था।
> - **सर या टॉमस रो (1615 ई.):** उसे **सूरत** में एक ब्रिटिश कारखाना स्थापित करने की अनुमति मिली।

नूरजहाँ का प्रभाव:

जहाँगीर को शासन की अपेक्षा, कला और चित्रकला में अधिक रुचि थी। उसकी फारसी पत्नी मेहरुन्निसा, जिसका नाम जहाँगीर ने नूर-जहाँ रखा, सिंहासन के पीछे की वास्तविक शक्ति बन गई।

- उसके नाम से सिक्के जारी किए गए और उसे बादशाह बेगम की उपाधि दी गयी।
- नूर-जहाँ ने दस वर्षों तक साम्राज्य पर शासन किया, लेकिन दिसंबर, 1645 ई. में जहाँगीर की मृत्यु के बाद उसकी शक्ति और प्रभाव समाप्त हो गया।

भारत में जहाँगीर का शासन

प्रशासन:

- जहाँगीर ने अपने शासनकाल में "दो-अस्पा-सिंह-अस्पा" प्रणाली को जोड़ा, जो मनसबदारी प्रणाली का एक संशोधन था, जिसमें एक मनसबदार अपने जात पद को बढ़ाए बिना ही एक बड़ी घुड़सवार सेना रख सकता था।
  - दो-अस्पा - दो घोड़ों वाला एक सैनिक।
  - सिंह-अस्पा - तीन घोड़ों वाला एक सैनिक।
- जहाँगीर पहला बादशाह था जिसने महसूस किया कि मराठा दक्कन में 'प्रभावशाली' थे और उसने उन्हें अपने पक्ष में लाने की कोशिश की। यह नीति शाहजहाँ द्वारा जारी रखी गयी।

स्थापत्यकला:

- जहाँगीर ने मोती मस्जिद का निर्माण लाहौर में करवाया था।
- जहाँगीर ने शालीमार बाग का निर्माण कश्मीर में किया गया था।
- जंजीर-ए-अदल (न्याय की जंजीर) को बादशाह से न्याय चाहने वालों के लिए एक सुविधा के रूप में आगरा के किले में लगाया गया था।

कला: जहाँगीर के अधीन मुगल चित्रकला ने **प्रकृतिवाद** और उच्चतम स्तर की **वैज्ञानिक सटीकता हासिल की।**

- आकृति शैली (Portrait Style) में उसकी विशेष रुचि थी। उसने अपने शासनकाल के दौरान चित्रों में आभामंडल (सिर के पीछे गोलाकार दिव्य प्रकाश) का उपयोग शुरू किया। **[यूपीएससी 2019]**
- मुरक्कास (Muraqqas) (एल्बमों में लगाए जाने वाले व्यक्तिगत चित्र) लोकप्रिय हो गए।
- उसके दरबार में कुछ प्रख्यात चित्रकार थे-
  - आका रिजा
  - अब्दुल हसन (नादिर-उल-जमान) - आका रिजा का पुत्र।
  - उस्ताद मंसूर (नादिर-उल-अस्र) - एक प्रमुख प्रकृति चित्रकार।
  - बिशन दास।
- जहाँगीर का प्रभाव महान डच चित्रकार रेम्ब्रांट तक पहुँचा, जिसने मुगल लघुचित्रों से प्रेरणा ली।

साहित्य:

- जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा तुज़ुक-ए-जहाँगीरी फारसी में लिखी। इससे कला में उसकी गहरी रुचि तथा पेड़-पौधौं और जीव-जंतुओं के चित्रण में वैज्ञानिक सटीकता हासिल करने के उसके प्रयासों के बारे में पता चलता है।

धार्मिक दृष्टिकोण:

- जहाँगीर ने अपनी धार्मिक नीति में अपने पिता की सुलह-ए-कुल नीति को जारी रखा।
- वह अक्सर मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर जाता था।
- वह विभिन्न प्रकार की आध्यात्मिक चर्चा का स्वागत करता था।
- उसने एक वैष्णव संन्यासी गोसाईं जदरूप से मुलाकात की, और शेख अहमद सरहिंदी के साथ संवाद किया, जो नक्शबंदी सूफी संप्रदाय के एक प्रमुख व्यक्ति थे और अकबर की नीतियों के आलोचक थे।

शाहजहाँ (1628-1658 ई.)

परिचय

शाहजहाँ ने 1627 ई. में जहाँगीर की मृत्यु के बाद अमीरों और सेना के समर्थन से आगरा में सिंहासन संभाला। उसके शासनकाल में मुगल अपनी स्थापत्य उपलब्धियों और सांस्कृतिक गौरव के शिखर पर पहुँच गए।

भारत में प्रमुख घटनाएँ/युद्ध

- उसने 1629 ई. में खानदेश क्षेत्र में शिवाजी के पिता, शाहजी को पराजित किया।
- उसने 1632 ई. में हुगली में पुर्तगालियों को हराया (अवैध व्यापार प्रथाओं के लिए)।
- **दक्कन:** अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा के खिलाफ अभियान शुरू किया।

Search On TG: @apna_pdf

- **उत्तर-पश्चिम:** उज्बेगों से बल्ख को जब्त करने का अभियान असफल रहा और कंधार सफाविदों के हाथों हार गया। अफगान अमीर खान जहाँ लोदी ने विद्रोह किया, लेकिन उसे दबा दिया गया।
- बुंदेलों को पराजित किया और ओरछा पर कब्जा कर लिया।

प्रशासन:

- मनसबदारों की संख्या में असाधारण वृद्धि हुई, उन पर राज्य के राजस्व का तीन-चौथाई से अधिक खर्च हो जाता था।
- उसने शस्त्रागार के महत्त्वपूर्ण पहलुओं की उपेक्षा की, बेहतर आग्नेयास्त्रों के विकास में बहुत कम रुचि ली और आयुध विज्ञान में कोई निवेश नहीं किया।
- समर्पण के उच्चतम रूप सिजदा (पूर्ण साष्टांग प्रणाम) के स्थान पर चाहर तस्लीम (चार बार नमस्कार का तरीका) और जमीनबोस (जमीन को चूमना) की शुरुआत की गई।

धार्मिक नीति:

- रूढ़िवादी धार्मिक नीति अपनाई, जिसमें इस्लाम के भीतर पुनरुत्थानवादी ताकतों, विशेष रूप से नक्शबंदी सूफियों का प्रभाव था।
- यह अकबर की अधिक उदार और समावेशी नीतियों से विचलन था।

स्थापत्यकला:

- मुगल साम्राज्य शाहजहाँ के अधीन अपनी स्थापत्यकला के चरमोत्कर्ष पर था।
- शाहजहाँ ने 1631 ई. में अपनी पत्नी मुमताज महल (अर्जुमंद बानो बेगम) की याद में ताज महल का निर्माण शुरू कराया। यह 1648 ई. पूर्ण रूप से बनकर तैयार हुआ।
  - उस्ताद ईसा और ईसा मुहम्मद अफांदी मुख्य वास्तुकार थे, जबकि इस्माइल खाँ ने ताज महल के गुंबद को डिजाइन किया था।
- शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान मस्जिद-निर्माण का विकास हुआ, जिसमें उल्लेखनीय निर्माण निम्नलिखित थे:
  - आगरा में मोती मस्जिद (पूरी तरह से सफेद संगमरमर से निर्मित)।
  - आगरा में शीश महल और मुसम्मन बुर्ज।
  - दिल्ली में जामा मस्जिद का निर्माण लाल पत्थर से किया गया था।
- शाहजहाँ के शासनकाल में किला-निर्माण अपने चरमोत्कर्ष पर था, जिसमें दिल्ली का लाल किला, रंग महल, दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास शामिल थे।
- शाहजहाँ को शालीमार बाग के निर्माण और शाहजहाँनाबाद शहर की स्थापना का भी श्रेय दिया जाता है।
- दिल्ली के लाल किले में दीवान-ए-खास (हॉल ऑफ प्राइवेट ऑडियंस, या मिनिस्टर्स रूम) में प्रसिद्ध मयूर सिंहासन शाहजहाँ के लिए बनाया गया था। ।

साहित्य

- इनायत खाँ ने 'शाहजहाँनामा' लिखी। (यह शाहजहाँ के शासनकाल का एक सचित्र इतिहास है)।
- उसके दरबारी इतिहासकार अब्दुल हमीद लाहौरी ने 'बादशाहनामा' लिखी। (शाहजहाँ के शासनकाल के आधिकारिक इतिहास के रूप में लिखी सचित्र कृति)।

उत्तराधिकार का युद्ध: 1657-1658 **ई.** में शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकार को लेकर संघर्ष हुआ। मुगल उत्तराधिकार के इस युद्ध में, औरंगजेब विजयी हुआ और दारा शिकोह सहित उसके तीन भाई मारे गए। **शाहजहाँ को** आगरा में आजीवन कैद रखा गया।

- दौराई का युद्ध (अजमेर) (मार्च, 1659 ई.): यह औरंगजेब और दारा शिकोह के बीच अंतिम युद्ध था, जिसमें औरंगजेब विजयी हुआ।

दारा शिकोह (1615-1659 ई.)

शाहजहाँ का सबसे बड़ा पुत्र था, जिसे "**उदार मुस्लिम**" बताया जाता है। उसने हिंदू धर्म और इस्लाम के बीच घनिष्ठ संबंध पाया।

- उसकी कृतियों में "मज्म 'उल बह् रैन' (दो महासागरों का मिलन) और "**सिर्र-ए-अकबर**" (महान रहस्य) शामिल हैं।
- उसने उपनिषदों और भगवद गीता जैसे हिंदू ग्रंथों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद भी किया।

औरंगजेब (1658 - 1707 ई.)

परिचय

- औरंगजेब (आलमगीर, "विश्व विजेता") 1658 ई. में सिंहासन पर बैठा।
- उसके पचास वर्षों के शासनकाल को दो बराबर भागों में विभाजित किया गया है:
  - पहले पच्चीस वर्ष: वह उत्तर में, मुख्य रूप से दिल्ली में रहा और दक्कन को अपने अधीनस्थ (वायसराय) को सौंपकर उत्तरी भारत के मामलों में व्यक्तिगत रूप से व्यस्त रहा।
  - 1681 ई. के आस-पास : उसके एक बेटे शहजादा अकबर के विद्रोह ने उसे दक्कन जाने के लिए प्रेरित किया। उसके बाद वह कभी दिल्ली नहीं लौटा, 1707 ई. में अहमद नगर में उसकी मृत्यु हो गई।

प्रमुख घटनाएँ/युद्ध:

- **सरायघाट का युद्ध (1671 ई.):** औरंगजेब ने अहोमों के खिलाफ सैन्य अभियान चलाया।
- **उत्तर में:**
  - जाटों के विद्रोह (मथुरा-1669 ई.) को नियंत्रित करने में सीमित सफलता मिली।
  - हरियाणा क्षेत्र के सतनामियों (1673 ई.) और सिखों (1675 ई.) के विद्रोहों को कुचल दिया गया।
  - मारवाड़ में (1678 ई.) जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद विद्रोहों को दबा दिया गया।
  - मेवाड़ के राणा का विद्रोह 1681 ई. में हस्ताक्षरित शांति संधि के साथ समाप्त हुआ।
- **दक्कन में:**
  - 1686 ई. में बीजापुर के आदिल शाही शासक सिकंदर आदिल शाह को पराजित किया और 1687 ई. में गोलकुंडा के शासक अबुल हसन कुतुबशाह को हराकर गोलकुंडा पर कब्जा कर लिया।

Search On TG: @apna_pdf

- शिवाजी ने गुरिल्ला रणनीति के माध्यम से मुगल सेनाओं का सामना किया (1680 ई. में उनकी मृत्यु तक), बाद में शिवाजी के पुत्रों ने इस रणनीति को औरंगजेब की मृत्यु तक जारी रखा।

धार्मिक दृष्टिकोण:

- गैर-मुसलमानों को हाशिए पर रखने की कठोर धार्मिक नीति के कारण विभिन्न विद्रोह हुए-
  - 1669 ई. और 1685 ई. में जाट विद्रोह,
  - 1672 ई. में सतनामी विद्रोह,
  - नौवें सिख गुरु तेग बहादुर को फाँसी दिया जाना, जिसके कारण 1675 ई. में सिख विद्रोह हुआ।
- दरबार में संगीत, शराब पीने और अफीम के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- हिंदुओं पर जजिया और तीर्थयात्रा कर पुनः लगाया।
- उसने दरबारी संगीतकारों और शाही चित्रकारों को बर्खास्त कर दिया और झरोखा दर्शन की प्रथा को बंद कर दिया।
- उसने नक्शबंदी सूफी सिलसिला के प्रभाव में सौर संवत् के स्थान पर हिजरी संवत् लागू किया।
- नैतिक संहिताओं और शरिया को कायम रखने के लिए मुहतसिब नियुक्त किए गए।
- भूमि पर मूल लगान से ऊपर लगाया जाने वाला कर "अबवाब" बंद कर दिया गया।
- इस्लामी सिद्धांतों के कठोर पालन के लिए उसे अक्सर जिंदा पीर (जीवंत संत) था।

अमीर (Nobles):

- आनुवंशिकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई थी और खानजादा (मनसबदारों के पुत्र और वंशज) अमीर वर्ग के लगभग आधे थे।
- उसके शासन काल में हिंदू अधिकारियों की संख्या सर्वाधिक थी।
  - मनसबदारों में मराठों की संख्या लगभग 17% थी और शेखजादों के नाम से जाने जाने वाले भारतीय मुसलमानों की संख्या लगभग 12% थी। इसके अलावा, खत्री और कायस्थ जैसे लिपिक समुदायों को भी मनसबदार के रूप में नियुक्त किया गया था।
- औरंगजेब ने अपने दो सर्वोच्च पद के अमीरों जय सिंह और जसवंत सिंह को मिर्जा राजा की उपाधि दी थी। इन उपाधियों को अर्जित की जा सकती थीं या उनके लिए भुगतान किया जा सकता था।

ईस्ट इंडिया कंपनी से संबंध:

मुगलों ने हिंद महासागर में समुद्री डकैती के लिए अंग्रेजी और अन्य कंपनियों को जिम्मेदार ठहराया था, जिसके कारण **गंज-ए-सवाई** घटना (1695 **ई.**) हुई। इस घटना में व्यापार और मक्का की वार्षिक तीर्थयात्राओं के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मुगल जहाज पर समुद्री डाकुओं द्वारा हमला किया गया था।

स्थापत्यकला:

- औरंगाबाद में अपनी बेगम रबिया-उद-दौरानी का एक मकबरा बनवाया। इसे "बीबी का मकबरा/दूसरा ताजमहल" के नाम से भी जाना जाता है।
- उसने लाल किले के अंदर मोती मस्जिद और बादशाही मस्जिद (लाहौर) का भी निर्माण कराया।

कला और साहित्य:

- औरंगजेब एक निपुण वीणा वादक था।
- औरंगजेब ने ईश्वर दास नागर को संरक्षण दिया, जिन्होंने फतुहात-ए-आलमगिरी लिखी, जिसमें औरंगजेब के शासनकाल का विवरण है।
- मुगल सेवा में एक बुंदेला अधिकारी भीमसेन बुरहानपुरी द्वारा लिखित नुस्खा-ए-दिलखुश, औरंगजेब के शासनकाल के दौरान लिखी गयी थी।

उत्तर मुगलकाल

बहादुर शाह प्रथम (1707-1712 ई.)

बहादुर शाह प्रथम को मुअज्जम के नाम से भी जाना जाता है**,** वह 60 के दशक में सिंहासन पर बैठा। 1712 ई. के आस-पास एक विद्रोही सिख नेता बंदा बहादुर के खिलाफ अभियान के दौरान उसकी मृत्यु हो गई।

प्रशासन:

- उसने अमीरों के प्रति एक उदार नीति अपनाई, उन्हें उनके पसंदीदा क्षेत्र दिए, जिससे वित्तीय तनाव पैदा हुआ, जबकि वास्तविक शक्ति कथित तौर पर वजीर जुल्फिकार खाँ के पास थी।
- उसकी प्रशासनिक अक्षमता के कारण मुगल इतिहासकारों ने उसे "शाह-ए-बेखबर" की उपाधि दी।

धार्मिक नीति: हिंदुओं के प्रति सहिष्णुता का प्रदर्शन किया, हालाँकि, उसने जजिया कर को समाप्त नहीं किया।

घटनाएँ/विजय:

- मराठों के साथ संधि करने में झिझक और उन्हें पूर्ण रियायतें देने में विफल रहने के कारण लगातार टकराव होते रहे।
- गुरु गोबिंद सिंह के साथ शांति की पहल की, लेकिन गुरु की मृत्यु के बाद हुए सिख विद्रोहों को दबाने के लिए उसने सिखों के खिलाफ सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया।
- मारवाड़ और मेवाड़ की स्वतंत्रता को मान्यता दी, लेकिन उन्हें कट्टर सहयोगी नहीं बना सका।

जहाँदार शाह (1712-1713 ई.)

बहादुर शाह की मृत्यु के बाद मुगल राजनीति बदल गई, **अमीर नृप-निर्माता(राजा बनाने वाला) बन गए** और बादशाह उनकी कठपुतली बन गए। जहाँदार शाह **प्रथम कठपुतली शासक था**, जिसके शासनकाल में वास्तविक शक्ति **जुल्फिकार खाँ** (वजीर) के पास थी।

प्रशासनिक नीतियाँ:

- उसने मराठों, राजपूतों और अन्य हिंदू सरदारों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए।
  - मारवाड़ के अजीत सिंह को "महाराजा" की उपाधि दी गई।
  - आमेर के जय सिंह को मिर्जा संवाई राजा जय सिंह की उपाधि दी गई।
  - बंदा बहादुर और सिखों के खिलाफ दमनकारी रुख बनाए रखा।

Search On TG: @apna_pdf

- उसने जजिया कर समाप्त करने का आदेश दिया।
- जागीरों के आवंटन को विनियमित करके और यह सुनिश्चित करके साम्राज्य की वित्तीय समस्याओं को हल करने का प्रयास किया गया कि अमीर अपने आधिकारिक सैन्य कोटा को बनाए रखें, लेकिन इजारा प्रथा, या राजस्व कृषि शुरू करने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा।

> इजारा प्रथा एक राजस्व कृषि प्रणाली थी जिसमें भू-राजस्व एकत्र करने का कार्य एकमुश्त भुगतान के बदले में सबसे अधिक बोली लगाने वाले को सौंपा जाता था।

उसका शासनकाल **1713 ई.** में उसके भतीजे **फर्रुखसियर** द्वारा आगरा में हराने के बाद समाप्त हो गया।

फर्रुखसियर (1713-1719 ई.)

फर्रुखसियर **शासन करने की अक्षमता** और अयोग्य सलाहकारों पर निर्भरता के लिए जाना जाता था। उसने **सैय्यद बंधुओं अब्दुल्ला खाँ (वजीर)** और **हुसैन अली खाँ बरहा (मीर बख्शी)** की मदद से सिंहासन प्राप्त किया था।

- उनके द्वारा जजिया को समाप्त कर दिया और तीर्थयात्रा कर को समाप्त कर दिया गया।
- 1717 ई. में, फर्रुखसियर ने ईस्ट इंडिया कंपनी को महत्त्वपूर्ण व्यापारिक विशेषाधिकार प्रदान किए और बंगाल के रास्ते होने वाले व्यापार के लिए सीमा शुल्क में छूट दी।

मृत्यु: सैय्यद बंधुओं को व्यक्तिगत अधिकार सौंपने को तैयार नहीं होने के कारण **1719 ई.** में फर्रुखसियर की हत्या कर दी गई।

मुहम्मद शाह (रंगीला) (1719-1748 ई.)

- मुहम्मद शाह **निजाम-उल-मुल्क, चिन किलिच खाँ** और **मुहम्मद अमीर खाँ** की मदद से 1720 **ई.** में **सैय्यद बंधुओं को अपदस्थ कर दिया।**
- **प्रशासन:** उसके शासनकाल में, कई राज्यों ने स्वतंत्रता की घोषणा की:
  - निजाम-उल-मुल्क - दक्कन
  - सआदत खाँ - अवध
  - मुर्शिद कुली खाँ बिहार- बंगाल और उड़ीसा
- मुगल साम्राज्य की कमजोरी तब उजागर हुई जब 1739 ई. में नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण किया।

> **नादिर शाह का भारत पर आक्रमण**
> - **ईरानी** बादशाह नादिर शाह को **ईरान से अफगानों** को खदेड़ने के लिए जाना जाता था। उसने **1739 ई. में करनाल के युद्ध** में निर्णायक जीत के साथ भारत में प्रवेश किया, जिसके परिणामस्वरूप **मुहम्मद शाह को आत्मसमर्पण करना पड़ा। उसने दिल्ली को लूटा और कोहिनूर हीरे** और **मयूर सिंहासन** जैसे खजाने अपने साथ लूटकर ले गया।
> - इससे मुगल साम्राज्य की कमजोरी उजागर हो गई, उसकी प्रतिष्ठा कम हो गयी और **क्षेत्रीय शक्तियों को प्रोत्साहन मिला।**

> **अहमद शाह अब्दाली (नादिर शाह का उत्तराधिकारी)**
> - उसने भारत पर कई बार आक्रमण किया।
> - अब्दाली ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया था और **आलमगीर द्वितीय को** मुगल बादशाह के रूप में स्वीकार कर लिया था। उसने एक अफगान कार्यवाहक को जिम्मेदारी सौंपकर रोहिल्ला **प्रमुख नजीबुद्दौला को** अपना 'सर्वोच्च प्रतिनिधि' नियुक्त किया।
> - **1758** ई. में, मराठा प्रमुख **रघुनाथ राव ने** नजीबुद्दौला को निष्कासित कर दिया और पंजाब पर विजय प्राप्त की। **अब्दाली** बदला लेने के लिए **1759** ई. में वापस लौटा और **1761** ई. **में पानीपत के तृतीय युद्ध** में **मराठों को निर्णायक रूप से पराजित किया** और 1767 ई. में अंतिम आक्रमण किया।

आलमगीर द्वितीय (1754-1759 ई.)

प्लासी का प्रसिद्ध युद्ध 1757 ई. में आलमगीर द्वितीय के शासनकाल के दौरान हुआ था। इस युद्ध के बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए बंगाल पर कब्जा करना आसान हो गया।

शाह आलम द्वितीय (1759-1806 ई.)

शाह आलम द्वितीय ने मीर कासिम और शुजाउद्दौला के साथ मिलकर 1764 ई. में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ युद्ध छेड़ा, लेकिन बक्सर के युद्ध में हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद, वह 1772 ई. तक एक ब्रिटिश पेंशनभोगी (पहला पेंशनभोगी) के रूप में इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में रहा, उसके बाद वह मराठा संरक्षण में दिल्ली लौट आया।

अकबर द्वितीय (1806-1837 ई.)

- अकबर द्वितीय शाह आलम द्वितीय का पुत्र था, उसने 1803 ई. के बाद अंग्रेजों द्वारा दिल्ली पर कब्जा किए जाने के बाद ब्रिटिश संरक्षण के तहत शासन किया। उसे राम मोहन रॉय को "राजा" की उपाधि देने के लिए जाना जाता है।
- उसकी पहचान एक प्रतिष्ठित कवि के रूप में थी, उसने हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने के लिए फूल वालों की सैर की शुरुआत की।
- उसके शासनकाल के दौरान, ईस्ट इंडिया कंपनी ने स्वयं को मुगल बादशाह की अधीनता से मुक्त कर लिया और मुगल बादशाह के नाम पर सिक्के जारी करना बंद कर दिया।

बहादुर शाह द्वितीय (1837-1857 ई.)

- बहादुर शाह द्वितीय अंतिम मुगल सम्राट था, जो "जफर" उपनाम से उर्दू कविता लिखता था।
- बहादुर शाह जफर ने सन् 1857 ई. के विद्रोह में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और विद्रोहियों द्वारा उसे भारत का बादशाह घोषित किया गया।
- विद्रोह के बाद, उसे रंगून (आधुनिक म्यांमार) में निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा और 1862 ई. में उसकी वहीं मृत्यु हो गई।

मुगलों के पतन के कारण

Search on TG: @apna_pdf

- **कमजोर नेतृत्व और उत्तराधिकार संघर्ष:** उत्तराधिकार के स्पष्ट नियमों की कमी के कारण उत्तराधिकार के युद्ध हुए, जिससे विशेषकर औरंगजेब के बाद साम्राज्य कमजोर हो गया।
- **औरंगजेब की नीतियाँ:** धार्मिक रूढ़िवादिता ने गैर-मुस्लिम प्रजा के साथ संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया।
- **आर्थिक तनाव और प्रशासनिक अक्षमता:** शाहजहाँ की अत्यधिक खर्चीली निर्माण परियोजनाओं और औरंगजेब के लंबे समय तक दक्षिणी अभियानों ने खजाने को काफी खाली कर दिया। उसका साम्राज्य इतना विशाल हो गया कि उसका प्रबंधन करना कठिन हो गया और बाद के मुगलों की प्रशासनिक अक्षमता के कारण दूर-दराज के प्रांतों ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया।
- **विदेशी आक्रमण और आंतरिक संघर्ष:** नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों ने साम्राज्य को अस्थिर कर दिया, जिससे वित्तीय तनाव और बढ़ गया। भ्रष्टाचार और आंतरिक कलह ने प्रशासनिक ढाँचे को कमजोर कर दिया।
- **स्वतंत्र राज्यों और क्षेत्रीय शक्तियों का उदय:** 18वीं शताब्दी में हैदराबाद, बंगाल और अवध जैसे लगभग स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ, जिसने साम्राज्य के विघटन में योगदान दिया। मराठा मुगल सत्ता को चुनौती देने वाले एक बड़े साम्राज्य की महत्त्वाकांक्षाओं को पोषित करते हुए पश्चिमी भारत में एकजुट हो गए।
- **भूमि के उपयोग के प्रश्न पर संघर्ष:** सीधे राजकोष भुगतान पर जागीर (अस्थायी भूमि आवंटन) और पैबाकी (आरक्षित भूमि से राजस्व) के उपयोग के कारण अमीरों और जमींदारों के बीच संघर्ष हुआ।
- **यूरोपीय शक्तियों का आगमन:** ब्रिटिश और अन्य यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के उदय से नई राजनीतिक संस्थाओं का आगमन हुआ, जिससे अनेक चुनौतियाँ पैदा हुईं और पतनोन्मुख मुगल साम्राज्य के लिए इन चुनौतियों से निपटना लगभग असंभव था।

❖ ❖ ❖

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH
PRELIMS POWERPREP 2025
Prelims Crash Course + Rigorous Practice
LIVE Lectures | Daily Practice | LIVE Video Solutions | Mentorship Webinar | G.S. & CSAT Tests (Sectional + Full Length)
Hinglish | Online ₹ 15,999/- ₹ 7,999/-
FOR EXTRA DISCOUNT
USE COUPON CODE PWOIAS500
9920613613 | pwonlyias.com
Search On TG: @apna_pdf

5 मराठा साम्राज्य

परिचय

मराठों ने 1670 के दशक में शिवाजी के नेतृत्व में **मुगल शक्ति को कमजोर करने** और 18वीं शताब्दी के मध्य तक संपूर्ण मध्य भारत में इसका स्थान लेने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने 1674 ई. में तंजौर पर भी नियंत्रण स्थापित कर लिया और 1832 ई. में सर्फोजी द्वितीय के निधन तक नियंत्रण बनाए रखा।

मराठों के बारे में:

- विभिन्न **कृषक जातियों का मिश्रण**, जिन्होंने अपनी **सैन्य सेवा पद्धतियों** से स्वयं को प्रतिष्ठित किया और इसके बदले में भूमि अनुदान अर्जित किया।
- उन्होंने **बहमनी साम्राज्य** और परवर्ती राज्यों की सेनाओं में भी कार्य किया। **इब्राहिम आदिल शाह** जैसे **बीजापुर के शासकों ने** उन्हें अपनी दक्कनी और अफाकी इकाइयों के प्रतिसंतुलन (Counterbalance) के रूप में भी इस्तेमाल किया।

मराठों के उत्थान के कारण

- **क्षेत्र और भू-भाग:** वे **कोंकण** के संकीर्ण, रणनीतिक रूप से रक्षात्मक क्षेत्र में निवास करते थे, जो अपने ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों और एकांत घाटियों के लिए जाना जाता था।
- **विशेषता और कौशल:** सैन्य वीरता की विरासत और **गुरिल्ला युद्ध पद्धति में प्रवीणता के साथ, तेजी से आश्चर्यजनक हमलों को अंजाम देना** और आवश्यकतानुसार स्वायत्त रणनीतियों को अपनाना।
- **तुकाराम, रामदास** और **एकनाथ** के नेतृत्व में **भक्ति आंदोलन ने** अपने मराठी भजनों के साथ व्यापक सामाजिक मेलजोल बढ़ाया और उन्हें एकजुट किया।
- **अन्य कारण: बीजापुर और गोलकुंडा** के पतन के साथ-साथ संपूर्ण दक्कन के युद्धों ने **शिवाजी को बिखरे हुए मराठों को एकजुट करने** के लिए प्रेरित किया।

शिवाजी (1627-1680 ई.)

परिचय

शिवाजी का जन्म जुन्नार के पास शिवनेरी दुर्ग में **शाहजी भोंसले** और **जीजाबाई के घर** हुआ था। शिवाजी, **तुकाराम** और **रामदास (उनके गुरु)** जैसे संतों से प्रभावित थे।

सैन्य विजय

- अल्पायु में ही, उन्होंने **1646 ई.** में बीजापुर सुल्तान से **तोरणा किला छीन लिया**। इसके अलावा, उन्होंने **रायगढ़ किले पर** कब्जा कर लिया और उसका पुनर्निर्माण करवाया। उन्होंने **बारामती, इंदपुरा, पुरंदर** और **कोंडाना** के किलों पर भी अधिकार कर लिया।
- **1656 ई. में** वे अधिक लोकप्रिय हो गए क्योंकि उन्होंने **जावली** (सतारा जिला) को उसके मराठा प्रमुख से छीन लिया, **ऊँचे इलाकों (मावल क्षेत्र)** पर नियंत्रण कर लिया और **प्रतापगढ़ दुर्ग** का निर्माण करवाया, जिससे आगे के विस्तार का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- **नौ-सैनिक महत्त्व को** पहचानते हुए, उन्होंने **जंजीरा के सिद्दियों का** मुकाबला करने के लिए एक बेड़े का निर्माण करवाया। जंजीरा के सिद्दी कई बंदरगाहों का प्रबंधन करते थे और उनके पास एक बड़ी नौसेना थी। शिवाजी अपने प्रभावहीन तोपखाने के कारण वह उन पर विजय प्राप्त नहीं कर सके।

बीजापुर के विरुद्ध संघर्ष:

- शाहजहाँ की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के युद्ध में शामिल होने के लिए **औरंगजेब के दक्कन से वापस चले जाने और बीजापुर में आदिल शाह द्वितीय के उदय** ने संघर्ष की परिस्थितियाँ पैदा कर दीं थीं।
- **शिवाजी ने बीजापुर** पर आक्रमण कर **उत्तरी कोंकण** पर कब्जा कर लिया। इस घटना ने अली आदिल शाह द्वितीय **को 1659 ई. में सेनापति अफजल खाँ को** भेजने के लिए उकसाया, जिसकी सेना ने पवित्र **पंढरपुर सहित कई हिंदू स्थलों को अपवित्र कर दिया।**
- शिवाजी ने अफजल खाँ को मारकर इसका बदला लिया, इसके बाद **पन्हाला किले** और दक्षिणी कोंकण व कोल्हापुर के क्षेत्रों पर भी कब्जा कर लिया।

शिवाजी और मुगल:

- **1658 ई:** औरंगजेब बादशाह बना और उसने दक्कन में **शाइस्ता खाँ (दक्कन का मुगल सूबेदार) को शिवाजी का दमन करने का काम सौंपा, जिसके परिणामस्वरूप पूना और चाकन पर कब्जा हो गया।**
- **1663 ई: जब शिवाजी ने पूना में घुसपैठ की** और शाइस्ता खाँ के शिविर पर हमला कर दिया, तो औरंगजेब ने शाइस्ता को दक्कन से वापस बुला लिया।
- **1664 ई:** शिवाजी ने एक महत्त्वपूर्ण मुगल बंदरगाह **सूरत को लूट लिया, इसके बाद औरंगजेब को** उनका मुकाबला करने और बीजापुर पर कब्जा करने के लिए **राजा जय सिंह** को भेजना पड़ा। एक व्यापक घेराबंदी के कारण शिवाजी को संधि करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे **1665 ई.** में **पुरंदर की संधि** का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- **1666 ई:** जय सिंह ने शिवाजी को आगरा में मुगल दरबार में जाने के लिए राजी किया जहाँ उन्हें अनादर और अपमान का सामना करना पड़ा। उन्हें नजरबंद कर दिया गया, जिससे वह बच निकलने में सफल रहे।
- **1670 ई: औरंगजेब ने बरार** में शिवाजी की जागीर के एक हिस्से पर पुनः कब्जा कर लिया। शिवाजी ने जवाबी कार्रवाई करते हुए मुगल सेवा से अपने सैनिकों को वापस बुला लिया, **पुरंदर की संधि में आत्मसमर्पण किए गए**

Search on TG: @apna_pdf

किलों पर पुनः कब्जा कर लिया और **सूरत पर** फिर से हमला कर दिया। **1672 ई.** तक, मराठों ने **सूरत पर वार्षिक कर के रूप में चौथ** (राजस्व का एक-चौथाई) लगा दिया।

- **1672 ई: साल्हेर की लड़ाई में** मराठों ने मुगलों के खिलाफ निर्णायक जीत हासिल की। साल्हेर किला वर्तमान नासिक के पास स्थित है।

पुरंदर की संधि के परिणाम:

- शिवाजी को 23 किले मुगलों को सौंपने पड़े।
- इसके बाद उन्हें **मुगल मनसबदार** के रूप में काम करना था और **बीजापुर के खिलाफ मुगलों का साथ देना था।**
- मुगलों ने शिवाजी को बीजापुर साम्राज्य के कुछ हिस्सों को अपने पास रखने के अधिकार को मान्यता दी।
- चूँकि शिवाजी को मुगलों की **व्यक्तिगत सेवा** से छूट दी गई थी, इसलिए उनके नाबालिग बेटे **शंभाजी को 5,000 जात** का **मनसब** प्रदान किया गया था।

राज्याभिषेक और दक्कन अभियान

1674 ई. में शिवाजी को **"छत्रपति"** (सर्वोच्च राजा) की उपाधि देते हुए, रायगढ़ में राज्याभिषेक किया गया। उनके राज्याभिषेक के दिन से एक नए संवत् **राज्याभिषेक शक** की शुरुआत हुई।

- उन्होंने स्वयं को "गायों और ब्राह्मणों का रक्षक" **(गो-ब्राह्मण प्रतिपालक)** और "धर्म का रक्षक" **(धर्म परायण)** बताया।
- उन्होंने **1677 ई.** में **गोलकुंडा** (दक्कनी राज्यों में सबसे समृद्ध) के साथ **मुगल विरोधी** व **बीजापुर विरोधी गठबंधन बनाया** तथा बरार, खानदेश व बगलान में **मुगल क्षेत्र** और कनारा में **बीजापुर क्षेत्र को तबाह कर दिया।** उन्होंने **पन्हाला किला** और सतारा को सुरक्षित कर लिया।
- उन्होंने **सेनजी** और **वेल्लोर के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की** और अपने सौतेले भाई **वेंकोजी (या एकोजी) को तंजौर** पर शासन करने की अनुमति दी, सेनजी अपने उत्तराधिकारियों के लिए एक सहायक रक्षा पंक्ति के रूप में सेवा कर रहे थे।
- उन्होंने **फारसी के स्थान पर मराठी** को दरबार की भाषा बना दिया और एक संस्कृत शब्दकोश **'राज-व्यवहार कोश'** के संकलन का आदेश दिया।

शिवाजी के अंतिम दिन

1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु हो गई। उन्होंने स्वयं से अधिक शक्तिशाली, बीजापुर और मुगल सेनाओं के खिलाफ, सफलतापूर्वक एक साम्राज्य स्थापित किया और उसकी रक्षा की।

शिवाजी के बाद मराठा

- **शंभाजी** शिवाजी के उत्तराधिकारी बने। लगभग उसी समय **विद्रोही शहजादा अकबर** ने औरंगजेब की हिंदू विरोधी नीतियों के खिलाफ असहमति जताते हुए मराठा दरबार में शरण ली और **1681 ई.** में खुद को बादशाह घोषित कर दिया। इसके अलावा, **खानदेश** में मुगल क्षेत्रों पर शंभाजी के हमलों ने औरंगजेब को दक्कन के लिए एक बड़े अभियान के लिए प्रेरित किया।
- औरंगजेब ने मेवाड़ के राजपूतों के साथ एक समझौता किया और **बीजापुर (1686 ई.)** और **गोलकुंडा (1687 ई.)** पर कब्जा करते हुए, दक्कन पर आक्रमण कर दिया।
- 1689 ई. में मुगलों ने शंभाजी को पकड़ लिया और उनकी हत्या कर दी।
- **शंभाजी** की हत्या के बाद, मराठों ने अपने नए शासक **राजाराम के नेतृत्व में** औरंगजेब के खिलाफ विरोध का प्रदर्शन किया।
  - घेराबंदी के बावजूद, राजाराम **जिनजी/सेनजी** की ओर भाग गए और मुगल सेना के खिलाफ **गुरिल्ला युद्ध** शुरू किया और मराठों के प्रभाव का विस्तार किया। हालाँकि, मुगलों ने शंभाजी के बेटे **साहू** को पकड़ लिया।
- मराठा आंदोलन अब और अधिक **विकेंद्रीकृत हो गया**, अलग-अलग सेनापतियों ने अपनी-अपनी सेनाएँ खड़ी कीं और अपनी इच्छानुसार मुगल सेना पर हमला किया। उन्होंने **गुजरात** और **दक्कन** क्षेत्रों में **चौथ** वसूलना भी शुरू कर दिया।
- मराठों पर औरंगजेब के हमलों से संघर्ष और बढ़ गया। **1700 ई.** में **राजाराम की मृत्यु** के बाद, उनकी पत्नी **ताराबाई ने** अपने बेटे **शिवाजी द्वितीय** को राजा बनाया और खुद को राजप्रतिनिधि घोषित कर दिया।
- इस क्षेत्र में राजनीतिक उथल-पुथल का फायदा उठाकर यूरोपीय व्यापारिक कंपनियाँ, भारत में अपनी जड़ें मजबूत कर रही थीं।

शाहू का शासनकाल (1707-1749 ई.) और पेशवा का उदय

- **शंभाजी** के बेटे **शाहू** (जिन्हें औरंगजेब की मृत्यु के बाद रिहा कर दिया गया था) ने **मराठा सिंहासन** पर अपना दावा पेश किया। ताराबाई ने इसका विरोध किया, जिसके परिणामस्वरूप गृह युद्ध छिड़ गया। **बालाजी विश्वनाथ** के समर्थन से शाहू विजयी हुए और **1708 ई.** में उन्होंने सिंहासन ग्रहण किया।
- कृतज्ञता में, शाहू ने **1713 ई.** में **बालाजी को** पेशवा नियुक्त किया, जो अंततः **वास्तविक शासक बन गया**, जिसने **पूना से शासन किया,** जबकि शाहू सतारा में रहते थे।

प्रतिद्वंद्विता और उत्तराधिकार

- **ताराबाई ने कोल्हापुर** में एक **समानांतर सरकार की स्थापना की।** हालाँकि, **1714 ई. में** उन्हें और उनके बेटे को **राजाबाई** (राजाराम की दूसरी पत्नी) और उनके बेटे **(शंभाजी द्वितीय)** ने कैद कर लिया। इसके बाद **शंभाजी द्वितीय कोल्हापुर के सिंहासन** पर बैठे और शाहू के आधिपत्य को स्वीकार कर लिया।
- **राजाराम द्वितीय/रामराजा (1749-1777 ई.):** वह **शाहू** के **दत्तक पुत्र थे।** ताराबाई ने उन्हें राजाराम के पौत्र के रूप में राज्य की बागडोर लेने के लिए प्रस्तुत किया। हालाँकि, पेशवा बाजीराव ने उन्हें नाममात्र के छत्रपति के रूप में बरकरार रखा। **पेशवा** की शक्ति **छत्रपति** की शक्ति पर लगभग पूरी तरह **हावी हो गई थी।**
- **रामराजा** के दत्तक **पुत्र शाहू द्वितीय ने 1808 ई.** में अपनी मृत्यु तक, एक **अस्तित्वविहीन शासक के रूप में शासन किया।** उनके उत्तराधिकारी **प्रताप सिंह को** ब्रिटिश सरकार के खिलाफ साजिश रचने के आरोप में **1839 ई.** में **अंग्रेजों** द्वारा **अपदस्थ कर दिया गया।**
- प्रताप सिंह की 1847 ई. में एक कैदी के रूप में मृत्यु हो गई। अंग्रेजों ने उनके छोटे भाई **शाहजी अप्पा साहब (शाहजी द्वितीय)** को 1839 ई. राजा बना दिया। **शाहजी द्वितीय की** 1848 ई. में मृत्यु हो गई और उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था।

Search On TG: @apna_pdf

मराठा प्रशासन

केंद्रीय शासन

शिवाजी की एक सलाहकार परिषद थी जिसे **'अष्ट प्रधान मंडल' कहा जाता था,** इसमें आठ मंत्री थे।

मुख्य/पंत प्रधान (पेशवा)	वह प्रधानमंत्री था तथा राज्य के सामान्य कल्याण और हितों की देखभाल करता था साथ ही राजा की अनुपस्थिति में उसके कर्तव्यों का निर्वहन करता था।
अमात्य/मजूमदार	वित्त मंत्री
वाकिया-नवीस (मंत्री)	राजा की गतिविधियों और दरबार की कार्यवाही का रिकॉर्ड रखता था।
सुमंत (दबीर या विदेश सचिव)	युद्ध, शांति और कूटनीति के बारे में सलाह देता था।
सचिव (सूरनवीस/ चिटनिस)	राजा के साथ पत्र-व्यवहार का प्रबंध करता था और परगना के खातों की जाँच करता था।
पंडितराव (दानाध्यक्ष)	धर्म, समारोह और नैतिकता संबंधी मामले देखता था।
न्यायाधीश	मुख्य न्यायाधीश, नागरिक और सैन्य न्याय के लिए उत्तरदायी था।
सर/सरी-ए-नौबत (सेनापति)	प्रधान सेनापति।

उनकी कार्यप्रणाली से संबंधित अन्य बिंदु:

- **न्यायाधीश** और **पंडितराव** को छोड़कर सभी मंत्रियों ने सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया और सेनाओं की बागडोर संभाली।
- हर एक शाही फरमान को राजा व पेशवा की मंजूरी और मुहर के साथ-साथ चार अन्य प्रमुख मंत्रियों के समर्थन की आवश्यकता होती थी। वहाँ अठारह प्रशासनिक विभाग थे, प्रत्येक की देखरेख अलग-अलग मंत्री करते थे।
- शिवाजी ने राजशाही भूमि का विस्तार करके प्रभावशाली **मराठा जमींदार परिवारों** (देशमुख) को नियंत्रित किया।
- **आज्ञापत्र - यह मराठा नीति के सिद्धांतों पर रामचंद्र पंत अमात्य** द्वारा **मोड़ी/मोडी लिपि** में लिखा गया एक शाही आदेश था। इसे शिवाजी के आदर्शों, सिद्धांतों और राज्य प्रशासन की नीतियों का औपचारिक दस्तावेजीकरण माना जाता था।

'मोड़ी' मराठी लिखने के लिए उपयोग की जाने वाली लिपि थी।

प्रांतीय शासन

- शिवाजी ने साम्राज्य **(स्वराज) को पहले प्रांतों में, उसके बाद परगनों और तरफों** में विभाजित किया। सबसे निचली इकाई गाँव थी जिसका मुखिया प्रधान या पटेल होता था।
  - **प्रांतों को** सूबेदार, कारकुन (या मुख्य देशाधिकारी) के अधीन **प्रांतों** के रूप में जाना जाता था।
  - **तरफों** का प्रमुख एक हवलदार होता था।
  - मौज़ा सबसे छोटी इकाई थी।
- कई प्रांतों के सूबेदारों के काम पर नियंत्रण और निगरानी के लिए **सरसूबेदार होता था।**
- प्रत्येक सूबेदार के पास आठ अधीनस्थ अधिकारी होते थे: दीवान, मजूमदार, फडणीस, सबणीस, कारखाणीस, चिटणीस, जमादार और पोटणीस।
- पुलिस अधिकारी को **ग्रामीण** क्षेत्र में **फौजदार** तथा **शहरी** क्षेत्र में **कोतवाल कहा जाता था।**
- जागीरें देने की परंपरा के स्थान पर सभी अधिकारियों को **नकद वेतन दिया जाने लगा।** जिन अधिकारियों को किसी स्थान का राजस्व सौंपा गया था, उनका नियंत्रण केवल आय पर था, लोगों पर नहीं। कोई भी पद **वंशानुगत नहीं था।**

राजस्व प्रशासन

- राजस्व व्यवस्था **मलिक अंबर की काठी प्रणाली** पर स्थापित की गई थी जिसमें भूमि की माप छड़ या **काठी** द्वारा की जाती थी।
- शिवाजी की राजस्व प्रणाली **किसानों के प्रति उदार थी**, जिसमें भूमि का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन किया जाता था और शुरू में राज्य की कर माँग, सकल उपज का **30%** थी, जिसे बाद में बढ़ाकर **40%** कर दिया गया।
  - अकाल के दौरान, शासन के द्वारा किसानों को कृषि आवश्यकताओं के लिए पुनर्भुगतान योग्य सहायता और अग्रिम ऋण प्रदान किए गए।
- **चौथ और सरदेशमुखी**: शिवाजी ने अपने साम्राज्य के **निकटवर्ती प्रदेशों, विजित प्रदेशों और मुगल/बीजापुर** के क्षेत्रों से **चौथ** (विजित जिले के राजस्व का **एक-चौथाई) 25% और सरदेशमुखी** (सरदेशमुख के रूप में उनकी स्थिति के आधार पर **अतिरिक्त 10%) एकत्र किया।**

सैन्य संगठन

मराठा **गुरिल्ला युद्ध पद्धति (छापामार युद्ध पद्धति)** के साथ-साथ **एक नए हथियार 'बाघ नख** (बाघ का पंजा)' का इस्तेमाल करने में भी निपुण थे।

पैदल सेना:

- पैदल **सेना** अत्यधिक गतिशील और छोटी थी, जिसमें **मावली** (पैदल सैनिक) की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी।
- आपातकाल के समय, किसान भी अंशकालिक सैनिकों के रूप में कार्य करते थे।
- **9 सैनिकों** वाली सबसे छोटी इकाई का नेतृत्व एक **नाइक** (कॉर्पोरल) करता था। **25 घुड़सवारों** वाली प्रत्येक इकाई को एक **हवलदार** (सार्जेंट के पद के बराबर) के अधीन रखा गया था। एक **जुमालदार** के अधीन पाँच हवलदार और एक **हजारी** के अधीन दस जुमालदार होते थे।
- घुड़सवार **सेना को** दो **वर्गों में विभाजित किया गया था**:
  - **बारगीर** (ऐसे सैनिक जिनके घोड़े राज्य द्वारा दिए जाते थे), और
  - **शिलेदार** (भाड़े के घुड़सवार जिन्हें स्वयं घोड़ों की व्यवस्था करनी होती थी)।

न्याय व्यवस्था:

- न्याय व्यवस्था प्रारंभिक चरण में थी और गाँवों में **कोई औपचारिक अदालतें** तथा पंचायतें नहीं थीं।
- कानूनी कार्यवाही अग्नि परीक्षाओं और स्मृतियों से निर्देशित होती थी।
- **न्यायाधीश** दीवानी और फौजदारी दोनों मामलों में अपीलें सुनता था।
- **हाजिर मजलिम** अपील की अंतिम अदालत के रूप में कार्य करता था।

Search On TG: @arna_pdf

पेशवाओं का शासन (1713-1818 ई.)

- पेशवा (फारसी मूल) का अर्थ "सर्वप्रमुख" या "प्रथम मंत्री" होता है। मुस्लिम शासकों द्वारा दक्कन में पेशवा प्रथा की शुरुआत की गई थी।
- **बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.)**
  - उन्होंने मराठा सम्राट **शाहू को** गृह युद्ध के बाद राज्य को स्थिर करने में मदद की; **कान्होजी आंग्रे को यूरोपीय लोगों के खिलाफ शाहू का** समर्थन करने के लिए राजी किया; जागीर अनुदानों को बहाल किया और पेशवा के पद को **वंशानुगत बना दिया।** उनका पुत्र **बाजीराव प्रथम** उनका उत्तराधिकारी बना।
  - **बाजीराव प्रथम (1720-1740 ई.)**
  - वह सभी **नौ पेशवाओं में सबसे प्रसिद्ध था** और उसे **"थोरले"** के नाम से भी जाना जाता था, जिसका अर्थ है 'बड़े' बाजी राव। वह शिवाजी के बाद **छापामार युद्ध पद्धति का सबसे बड़ा समर्थक था।**
- उन्होंने **1728 ई.** में प्रशासनिक **राजधानी को सतारा** से **पुणे स्थानांतरित कर दिया।**
- उन्होंने मराठा सरदारों के बीच **परिसंघ** प्रणाली की **शुरुआत की।**

परिसंघ प्रणाली: इस प्रणाली के तहत, प्रत्येक **मराठा प्रमुख** को एक क्षेत्र सौंपा गया था जिसे **स्वायत्त रूप से प्रशासित किया जा सकता था।**

परिसंघ	संबंधित स्थान
गायकवाड़	बड़ौदा
भोंसले	नागपुर
होलकर	इंदौर
सिंधिया	ग्वालियर
पेशवा	पूना

अभियान/विजय:

- **कटक** (कृष्णा) से **अटक (Attock)** तक मराठा शासन का विस्तार किया।
- मुगलों के खिलाफ हिंदू सरदारों का समर्थन सुरक्षित करने के लिए **हिंदू-पद पादशाही** (हिंदू साम्राज्य) के विचार को लोकप्रिय बनाया।
- **हैदराबाद के निजाम, मालवा के राजपूत** गवर्नर और **गुजरात के गवर्नर को** हराया।
- उन्होंने 1722 ई. में **पुर्तगालियों के साल्सेट और बसीन द्वीप पर कब्जा कर लिया।** उन्होंने दक्कन में मुक्त व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए **अंग्रेजों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध** बनाए।

बालाजी बाजी राव (1740-1761 ई.)

परिचय

बालाजी बाजी राव पेशवा के रूप में अपने पिता बाजीराव प्रथम के उत्तराधिकारी बने। उन्हें **नाना साहब के नाम से भी जाना जाता था।**

उनके शासनकाल के दौरान, मराठा राजा **शाहू की 1749 ई.** में मृत्यु हो गई और उनके नामांकित उत्तराधिकारी **रामराजा को** पेशवा ने सतारा में कैद कर दिया। इस प्रकार, मराठा संघ की सर्वोच्च शक्ति पेशवा के हाथों में चली गई **(1750 ई. के सांगोला समझौते द्वारा)।**

- उन्होंने बंगाल के नवाब **अलीवर्दी खाँ को हराया** और **1752 ई.** में **मुगल बादशाह** के साथ **समझौता किया।**
  - उन्होंने मुगल बादशाह को **उत्तर-पश्चिम प्रांतों** की **चौथ** के साथ-साथ **आगरा** तथा **अजमेर** के **कुल राजस्व के** बदले **आंतरिक** और **बाहरी शत्रुओं से सुरक्षा का आश्वासन दिया।**
  - इस समझौते का सम्मान करते हुए, मराठों ने **पानीपत की तीसरी लड़ाई (1761 ई.)** लड़ी जब अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया था।

उदगीर का युद्ध (1760 ई.)

- **1748 ई.** में **निजाम-उल-मुल्क आसफजाह की मृत्यु** के बाद उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया।
- पेशवा ने निजाम के सबसे बड़े पुत्र का समर्थन किया और **सदाशिव राव के नेतृत्व में एक सेना भेजी, जिसने 1760 ई. में उदगीर का युद्ध** जीतकर बीजापुर, औरंगाबाद, दौलताबाद, अहमदनगर और बुरहानपुर पर कब्जा कर लिया।

पानीपत का तृतीय युद्ध (1761 ई.)

पृष्ठभूमि:

- **अहमदशाह अब्दाली ने** मुगलों के खिलाफ सैन्य अभियानों के माध्यम से अपनी स्थिति मजबूत कर ली और 1757 ई. तक मुल्तान, पंजाब और दिल्ली पर कब्जा कर लिया।
- **मल्हार राव होल्कर** और **रघुनाथ राव के** नेतृत्व में एक अभियान ने **दिल्ली में अब्दाली** के **प्रतिनिधि** को हटा दिया और **1758 ई.** में **सरहिंद और लाहौर पर कब्जा कर लिया।**

युद्ध का क्रम:

- अब्दाली चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए अक्टूबर, 1759 ई. में भारत लौट आया और **पंजाब पर पुनः कब्जा कर लिया।**
- पेशवा ने **दत्ताजी सिंधिया** को पंजाब भेजा लेकिन वह युद्ध **(1760 ई.) में हार गए।** मल्हार राव **होल्कर** भी **सिकंदरा** में पराजित हुए।
- तब **पेशवा ने सदाशिव राव** के नेतृत्व में एक विशाल सेना की भर्ती की। उनके साथ **होल्कर** , सिंधिया और गायकवाड़ भी मिल गए।
- **अब्दाली ने रोहिलखंड** के **नजीबुद्दौला** और **अवध** के **शुजाउद्दौला के** साथ मिलकर जवाबी कार्रवाई की।
- अतः इस प्रकार देखा जा सकता है कि मराठा उत्तरी शक्तियों में से **सहयोगी ढूँढ़ने में विफल रहे,** क्योंकि उन्होंने पहले ही **अवध के नवाब, सिख, जाट** सरदारों और **राजपूतों** को अलग-थलग कर दिया था।

पानीपत के युद्ध के प्रभाव:

- मराठा बुरी तरह पराजित हुए, जिसमें **विश्वास राव, सदाशिव राव सहित कई लोग हताहत हुए** और अंततः 1761 ई. में पेशवा की मृत्यु हो गई।
- इस युद्ध के बाद, **होल्कर** और **सिंधिया** के सैनिक पीछे हट गए।
- मराठों ने शुरुआती असफलताओं के बावजूद मुगल बादशाह शाह आलम का समर्थन करते हुए एक दशक के भीतर उत्तरी सत्ता हासिल कर ली।

Search On TG: @apna_pdf

बालाजी बाजीराव के बाद पेशवा (1761-1772 ई.)

- **माधव राव** 1761 ई. में रघुनाथ राव **के राजप्रतिनिधित्व काल में** बालाजी बाजी राव के उत्तराधिकारी और पुत्र थे। उन्होंने **निजाम (1763 ई.) और हैदर अली (1765-1767 ई. और 1772 ई.)** को पराजित किया।
  - उन्होंने रोहिल्ला (पठान), राजपूत राज्यों और जाट सरदारों जैसी विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों को अपने अधीन करते हुए उत्तरी भारत में नियंत्रण पुनः स्थापित किया और 1771 ई. में बादशाह **शाह आलम द्वितीय को इलाहाबाद** से **दिल्ली** में **(ब्रिटिश-संरक्षण के तहत)** पदस्थापित किया।
  - **1772 ई.** में उनके अप्रत्याशित निधन से उनके प्रभावशाली शासनकाल का अंत हो गया।
- कई उत्तराधिकारों के बाद, **रघुनाथ राव** के पुत्र **बाजी राव द्वितीय,** माधव राव द्वितीय की मृत्यु के बाद **अंतिम पेशवा** बने।

आंग्ल-मराठा युद्ध

प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-1782 ई.)

- **नारायण राव** की मृत्यु के बाद पेशवा के उत्तराधिकार पर विवाद; रघुनाथ राव या **राघोबा** पेशवा बनना चाहते थे, जिसका **पुणे के नाना फडणवीस ने विरोध किया।**
  - सत्ता पर कब्जा करने के अपने प्रयास में विफल होने पर, राघोबा ने **अंग्रेजों से** समर्थन की अपील की। बंबई में कंपनी प्रशासन ने साल्सेट और बसीन द्वीप प्राप्त करने के बदले में रघुनाथ राव का समर्थन किया
- **महादजी सिंधिया** (मराठा राजनेता) और **नागपुर के भोंसले** के ब्रिटिश समर्थक बनने के कारण मराठों ने **ठाणे** और **साल्सेट** को ब्रिटिशों को सौंप दिया। 1782 ई. की **सालबाई की संधि** ने रघुनाथ राव को पेंशन दे दी, जिससे कंपनी और मराठों के बीच लगभग दो दशकों तक शांति बनी रही।

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-1806 ई.)

- **नाना फड़णवीस की मृत्यु** के बाद, सत्ता संघर्ष के बीच **पेशवा बाजीराव द्वितीय को गद्दी से उतार दिया गया।** उन्होंने अंग्रेजों के साथ गठबंधन किया और गवर्नर-जनरल **वेलेजली ने सहायक संधि (Subsidiary Alliance)** लागू की।
- इसके परिणामस्वरूप **1802 ई.** में **बसीन की संधि हुई,** जिसे मराठा राज्यों द्वारा अपमानजनक माना गया, जिससे **द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध शुरू हो गया।**
- भयंकर प्रतिरोध के बावजूद मराठा हार गए, वे **दोआब, अहमदनगर, भरूच** और सभी पहाड़ी क्षेत्र हार गए। उन्होंने सहायक संधि की ब्रिटिश शर्तों को स्वीकार कर लिया।

तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-1819 ई.)

- पेशवा की सहायता से **त्र्यंबकजी** के कैद से भागने और मराठा संघ के भीतर की साजिशों ने, अंग्रेजों और पेशवा के बीच तनाव बढ़ा दिया।
- **1817 ई.** में, अंग्रेजों ने पेशवा को एक नई संधि के लिए मजबूर कर दिया, जिससे उन्हें अपना **पद छोड़ना पड़ा व कोंकण** के **क्षेत्र को अंग्रेजों** को सौंपना पड़ा। उन्हें गायकवाड़ की स्वतंत्रता को मान्यता देनी पड़ी, जिससे उनकी दुश्मनी बढ़ गई।
- **पिंडारियों** और अंग्रेजों के बीच लड़ाई के दौरान, पेशवा ने जवाबी कार्रवाई करते हुए **पूना में ब्रिटिश रेजीडेंसी पर हमला कर दिया।** इसके बाद **आष्टा, खड़की** और **कोरेगाँव की** लड़ाइयों में हार के बाद बाजीराव द्वितीय को अंततः **1818 ई. में एलफिंस्टन** के सामने आत्मसमर्पण करना पड़ा।

तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का परिणाम

- अंग्रेजों **ने पेशवाई को समाप्त कर दिया** और **बाजीराव प्रथम द्वारा स्थापित मराठा संघ** (भोंसले, होल्कर और सिंधिया को सम्मिलित रूप से) को भंग **करते हुए पेशवा के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया।** हालाँकि, जागीरदारों की जागीरें बहाल कर दी गईं।
- **बाजीराव द्वितीय 1851 ई.** में अपनी मृत्यु तक बंदी बने रहे और वार्षिक पेंशन प्राप्त करते रहे।
- **शिवाजी** के वंशज **प्रताप सिंह को** सतारा के आस-पास एक खंडित राज्य के शासक के रूप में स्थापित किया गया और पूना के पूर्व रेजीडेंट **माउंटस्टुअर्ट एलफिंस्टन ने बॉम्बे के गवर्नर की भूमिका निभाई।**

आंग्ल-मराठा युद्ध

मापदण्ड	प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-1782)	द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-1806)	तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-1819)
कारण	रघुनाथ राव (राघोबा) और नाना फड़नवीस के मध्य पेशवा के उत्तराधिकार को लेकर विवाद।	बेसिन की संधि (1802) अंग्रेजों द्वारा पेशवा बाजी राव द्वितीय पर आरोपित की गई थी, जिसे मराठा राज्यों द्वारा अपमानजनक माना गया।	मराठा प्रमुखों और ब्रिटिश हस्तक्षेप के बीच षड्यंत्र; त्रिम्बकजी के पलायन के कारण तनाव और पेशवा के साथ विवाद।
प्रमुख कारक	राघोबा ने साल्सेट और बेसिन के बदले अंग्रजों से समर्थन मांगा। महादजी सिंधिया और भोंसले की अंग्रेजों के प्रति निष्ठा परिवर्तित ।	मराठों ने इसका विरोध किया, परंतु दिल्ली, अस्से और लासवारी जैसी लड़ाइयों में उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। बेसिन की संधि ने सहायक गठबंधन को औपचारिक रूप दिया।	पेशवा ने पूना में ब्रिटिश रेजीडेंसी पर हमला किया। अष्टा, किरकी और कोरेगाँव की लड़ाइयों में मराठों की पराजय का सामना करना पडा।

Search On TG: @apna_pdf

प्रमुख शासक	रघुनाथ राव (राघोबा) नाना फड़नवीस महादजी सिंधिया ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी (बॉम्बे प्रशासन)।	पेशवा बाजी राव द्वितीय गवर्नर जनरल वेलेस्ली सिंधिया, होल्कर, भोंसले और गायकवाड़ संघ।	पेशवा बाजीराव द्वितीय ब्रिटिश (एल्फिंस्टन) मराठा संघ के प्रमुख (सिंधिया, भोंसले और होल्कर।
परिणाम	सालबाई की संधि (1782): अंग्रेजों ने ठाणे और साल्सेट को अपने पास रखा। राघोबा को पेंशन दी गई। 20 वर्षों तक शांति बनी रही।	अहमदनगर, भड़ौच, दोआब और पहाड़ी क्षेत्र मराठों के हाथ से निकल गए। सहायक गठबंधन की शर्तें स्वीकार कर ली गई। अंग्रेजों का मराठा राज्यों पर प्रभुत्व स्थापित हो गया।	मराठा संघ का अंत अंग्रेजों ने पेशवाई को समाप्त कर दिया और पेशवा क्षेत्रों पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। प्रताप सिंह (शिवाजी के वंशज) को सतारा राज्य का शासक बनाया गया। बाजी राव द्वितीय को पेंशन दी गई और 1851 में उनकी मृत्यु तक उन्हें बंदी बनाकर रखा गया। अंग्रेजों ने जागीरदारों की जागीरें बहाल कर दी। माउंटस्टुअर्ट एलफिस्टन को बॉम्बे का गवर्नर नियुक्त किया गया।
संधि	सालबाई की संधि (1782)	बेसिन की संधि (1802)	कोई विशिष्ट संधि नहीं हुई; मराठा क्षेत्रों पर औपचारिक रूप से ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित किया गया।

पेशवाओं के अधीन मराठा प्रशासन (1714-1818 ई.)

पेशवा की बढ़ती प्रतिष्ठा

- पेशवा, शिवाजी के अष्ट प्रधान (मंत्रिपरिषद) में से एक थे। यह पद शुरू में वंशानुगत नहीं था, लेकिन जैसे-जैसे राजा की शक्ति घटती गई, उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती गई।
- बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.) ने पेशवा के पद को सर्वोच्च और वंशानुगत बना दिया। शंभाजी के बाद उन्होंने प्रशासन पर नियंत्रण कर उसे सुव्यवस्थित किया।

केंद्रीय सचिवालय

- मराठा प्रशासन का केंद्र **पूना स्थित पेशवा सचिवालय था,** जिसमें निम्नलिखित शामिल थे:
- **राजस्व, व्यय और गाँव** एवं **जिले के** अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत लेखाओं का प्रबंधन करना।
- अन्य क्षेत्रों से प्राप्त सभी राजस्व, अनुदान और भुगतान का दैनिक रिकॉर्ड रखना।
- **लोक सेवकों** के वेतन और नागरिक, सैन्य और धार्मिक शीर्षों के तहत बजट का प्रबंधन करना।

प्रांत

- बड़े प्रांतों में प्रांतीय गवर्नर के रूप में **सर-सूबेदार होते थे।** प्रांतों के प्रभागों को **सूबा** और **प्रांत कहा जाता था।**
- **मामलतदार और कामविसदार जिलों** में पेशवा के प्रतिनिधि थे और जिला प्रशासन की हर शाखा के लिए जिम्मेदार थे।
- **देशमुख** और **देशपांडे** जिले के **प्रभारी लेखा अधिकारी** होते थे**,** वे मामलतदारों और कामविसदारों की गतिविधियों पर नजर रखते थे। यह नियंत्रण और संतुलन की एक प्रणाली थी।
- परगना स्तर पर, देशपांडे लेखा और रिकॉर्ड रखते थे, जबकि देशमुख के पास कानूनी और पुलिस अधिकार थे।
- मराठा शासन ने सार्वजनिक धन के दुरुपयोग को रोकने के लिए **मामलतदारों** और अन्य अधिकारियों से भारी राशि **(रसद) एकत्र की।** यह किसी **जिले में उनकी पहली नियुक्ति पर ली जाती थी।**

राजस्व स्रोत

- **भू-राजस्व प्राथमिक आय** थी, पहले कृषि उपज का बंटवारा (**शिवाजी के समय**) किया जाता था, लेकिन बाद में **खेती पर कर** लगाया जाने लगा।
- **भू-राजस्व का निर्धारण फसलों** के प्रकार, **सिंचाई** की सुविधाओं और भूमि की **उत्पादकता पर आधारित था।**

Search On TG: @apna_pdf

ग्राम प्रशासन

- **गाँव,** प्रशासन की मूल इकाई थे और ये स्वावलंबी थे। **गाँव का** मुखिया **पटेल** होता था।
- पटेल (**सरकार से वेतन नहीं मिलता था** और **वंशानुगत मुख्य अधिकारी होता था)** केंद्र को **राजस्व भेजने** के लिए जिम्मेदार था, जिसकी सहायता के लिए लेखाकार और रिकॉर्ड-कीपर, **कुलकर्णी थे।**
- वंशानुगत सेवक सामुदायिक कार्य करते थे।
- गाँव के कारीगरों को बेगार या अनिवार्य श्रम करना पड़ता था।

शहरी प्रशासन

- कस्बों और शहरों में **कोतवाल** मुख्य अधिकारी होता था। वह मजिस्ट्रेट के रूप में भी कार्य करता था।
- उसके कार्यों में शांति और व्यवस्था बनाए रखना, कीमतों पर नियंत्रण करना, नागरिक विवादों का निपटारा करना और सरकार को मासिक हिसाब भेजना शामिल था।

पुलिस व्यवस्था

- प्रत्येक गाँव में चौकीदार नियुक्त किए गए। वे सामान्यतः महार जाति से थे।
- अशांत क्षेत्र के निवासियों को अतिरिक्त गृह कर देना पड़ता था क्योंकि शासन को अपराधों को नियंत्रित करने के लिए अनियमित पैदल सेना (Irregular Infantry) से सैनिक भेजने पड़ते थे।

न्याय व्यवस्था

- न्याय व्यवस्था अपने प्रारंभिक चरण में थी, संहिताबद्ध कानूनों और प्रक्रियाओं का अभाव था। न्याय प्रणाली में **मध्यस्थता को** प्राथमिकता दी गई।
- अनसुलझे मामलों को **गाँव में पटेल** द्वारा नियुक्त पंचायत और **कस्बों में प्रमुख व्यापारियों** द्वारा नियुक्त पंचायत में निर्णय के लिए भेज दिया जाता था। **मामलतदार से अपील** की जाती थी।
- **आपराधिक मामलों** में एक **पदानुक्रम मौजूद था**, जिसमें शीर्ष स्तर पर **राजा छत्रपति थे, उसके बाद पेशवा**, **सर-सूबेदार**, **मामलतदार** और पटेल थे, जिसमें जुर्म कबूल करने के लिए कोड़े मारने और यातना का सामान्य उपयोग होता था।

सैन्य संरचना

- **सेना: इनकी सैन्य संरचना मुगलों की प्रणाली से** काफी मिलती-जुलती थी। उन्होंने **शिवाजी की** स्थानीय मराठा भर्ती के विपरीत, पूरे भारत से सैनिकों की भर्ती की। सेना में विभिन्न समूहों का मिश्रण था, जिसमें अरब और सिख, प्रतिद्वंद्वी सरदारों के भाड़े के सैनिक शामिल थे, जिससे **आंतरिक विवाद पैदा हुए** और **मराठा एकता प्रभावित हुई।**
- **घुड़सवार सेना:** यह मराठा सेना की मुख्य शक्ति थी। प्रत्येक जमींदार को हर वर्ष निर्धारित संख्या में घुड़सवार लाने के लिए बाध्य किया जाता था। इन घुड़सवारों को उनके घोड़ों की गुणवत्ता के आधार पर **तीन श्रेणियों** में वर्गीकृत किया गया था।
- **पैदल सेना और तोपखाना :** पैदल सेना में अरब, रोहिल्ला, सिख और सिंधी शामिल थे और उन्हें मराठा सैनिकों की तुलना में अधिक वेतन दिया जाता था। **तोपखाने में पुर्तगाली, भारतीय ईसाई** और बाद में **अंग्रेज** शामिल थे।
- **नौसेना:** उन्होंने मराठा बंदरगाहों की रक्षा की, समुद्री डकैती का मुकाबला किया और सीमा शुल्क एकत्र किया। **बालाजी विश्वनाथ ने कोंकण, खंडेरी और विजयदुर्ग** में नौसैनिक अड्डे स्थापित किए ।

पेशवा की बढ़ती प्रतिष्ठा

- पेशवा, शिवाजी के अष्ट प्रधान (मंत्रिपरिषद) में से एक थे। यह पद शुरू में वंशानुगत नहीं था, लेकिन जैसे-जैसे राजा की शक्ति घटती गई, उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती गई।
- बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.) ने पेशवा के पद को सर्वोच्च और वंशानुगत बना दिया। शंभाजी के बाद उन्होंने प्रशासन पर नियंत्रण कर उसे सुव्यवस्थित किया।

केंद्रीय सचिवालय

- मराठा प्रशासन का केंद्र **पूना स्थित पेशवा सचिवालय था,** जिसमें निम्नलिखित शामिल थे:
- **राजस्व, व्यय और गाँव** एवं **जिले के** अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत लेखाओं का प्रबंधन करना।
- अन्य क्षेत्रों से प्राप्त सभी राजस्व, अनुदान और भुगतान का दैनिक रिकॉर्ड रखना।
- **लोक सेवकों** के वेतन और नागरिक, सैन्य और धार्मिक शीर्षों के तहत बजट का प्रबंधन करना।

प्रांत

- बड़े प्रांतों में प्रांतीय गवर्नर के रूप में **सर-सूबेदार होते थे।** प्रांतों के प्रभागों को **सूबा** और **प्रांत कहा जाता था।**
- **मामलतदार और कामविसदार जिलों** में पेशवा के प्रतिनिधि थे और जिला प्रशासन की हर शाखा के लिए जिम्मेदार थे।
- **देशमुख** और **देशपांडे** जिले के **प्रभारी लेखा अधिकारी** होते थे**,** वे मामलतदारों और कामविसदारों की गतिविधियों पर नजर रखते थे। यह नियंत्रण और संतुलन की एक प्रणाली थी।
- परगना स्तर पर, देशपांडे लेखा और रिकॉर्ड रखते थे, जबकि देशमुख के पास कानूनी और पुलिस अधिकार थे।
- मराठा शासन ने सार्वजनिक धन के दुरुपयोग को रोकने के लिए **मामलतदारों** और अन्य अधिकारियों से भारी राशि **(रसद) एकत्र की।** यह किसी **जिले में उनकी पहली नियुक्ति पर ली जाती थी।**

Search On TG: @apna_pdf

राजस्व स्रोत

- **भू-राजस्व प्राथमिक आय** थी, पहले कृषि उपज का बंटवारा (**शिवाजी के समय**) किया जाता था, लेकिन बाद में **खेती पर कर** लगाया जाने लगा।
- **भू-राजस्व का निर्धारण फसलों** के प्रकार, **सिंचाई** की सुविधाओं और भूमि की **उत्पादकता पर आधारित था।**

ग्राम प्रशासन

- **गाँव,** प्रशासन की मूल इकाई थे और ये स्वावलंबी थे। **गाँव का** मुखिया **पटेल** होता था।
- पटेल (**सरकार से वेतन नहीं मिलता था** और **वंशानुगत मुख्य अधिकारी होता था)** केंद्र को **राजस्व भेजने** के लिए जिम्मेदार था, जिसकी सहायता के लिए लेखाकार और रिकॉर्ड-कीपर, **कुलकर्णी थे।**
- वंशानुगत सेवक सामुदायिक कार्य करते थे।
- गाँव के कारीगरों को बेगार या अनिवार्य श्रम करना पड़ता था।

शहरी प्रशासन

- कस्बों और शहरों में **कोतवाल** मुख्य अधिकारी होता था। वह मजिस्ट्रेट के रूप में भी कार्य करता था।
- उसके कार्यों में शांति और व्यवस्था बनाए रखना, कीमतों पर नियंत्रण करना, नागरिक विवादों का निपटारा करना और सरकार को मासिक हिसाब भेजना शामिल था।

पुलिस व्यवस्था

- प्रत्येक गाँव में चौकीदार नियुक्त किए गए। वे सामान्यतः महार जाति से थे।
- अशांत क्षेत्र के निवासियों को अतिरिक्त गृह कर देना पड़ता था क्योंकि शासन को अपराधों को नियंत्रित करने के लिए अनियमित पैदल सेना (Irregular Infantry) से सैनिक भेजने पड़ते थे।

न्याय व्यवस्था

- न्याय व्यवस्था अपने प्रारंभिक चरण में थी, संहिताबद्ध कानूनों और प्रक्रियाओं का अभाव था। न्याय प्रणाली में **मध्यस्थता को** प्राथमिकता दी गई।
- अनसुलझे मामलों को **गाँव में पटेल** द्वारा नियुक्त पंचायत और **कस्बों में प्रमुख व्यापारियों** द्वारा नियुक्त पंचायत में निर्णय के लिए भेज दिया जाता था। **मामलतदार से अपील** की जाती थी।
- **आपराधिक मामलों** में एक **पदानुक्रम मौजूद था**, जिसमें शीर्ष स्तर पर **राजा छत्रपति थे, उसके बाद पेशवा, सर-सूबेदार, मामलतदार** और पटेल थे, जिसमें जुर्म कबूल करने के लिए कोड़े मारने और यातना का सामान्य उपयोग होता था।

सैन्य संरचना

- **सेना: इनकी सैन्य संरचना मुगलों की प्रणाली से** काफी मिलती-जुलती थी। उन्होंने **शिवाजी की** स्थानीय मराठा भर्ती के विपरीत, पूरे भारत से सैनिकों की भर्ती की। सेना में विभिन्न समूहों का मिश्रण था, जिसमें अरब और सिख, प्रतिद्वंद्वी सरदारों के भाड़े के सैनिक शामिल थे, जिससे **आंतरिक विवाद पैदा हुए** और **मराठा एकता प्रभावित हुई।**
- **घुड़सवार सेना:** यह मराठा सेना की मुख्य शक्ति थी। प्रत्येक जमींदार को हर वर्ष निर्धारित संख्या में घुड़सवार लाने के लिए बाध्य किया जाता था। इन घुड़सवारों को उनके घोड़ों की गुणवत्ता के आधार पर **तीन श्रेणियों** में वर्गीकृत किया गया था।
- **पैदल सेना और तोपखाना :** पैदल सेना में अरब, रोहिल्ला, सिख और सिंधी शामिल थे और उन्हें मराठा सैनिकों की तुलना में अधिक वेतन दिया जाता था। **तोपखाने में पुर्तगाली, भारतीय ईसाई** और बाद में **अंग्रेज** शामिल थे।
- **नौसेना:** उन्होंने मराठा बंदरगाहों की रक्षा की, समुद्री डकैती का मुकाबला किया और सीमा शुल्क एकत्र किया। **बालाजी विश्वनाथ ने कोंकण, खंडेरी और विजयदुर्ग** में नौसैनिक अड्डे स्थापित किए।

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

Join Us
OnlyIAS Nothing Else
OnlyIAS UPSC
OnlyIAS Extended
PW OnlyIAS
9920613613 | pwonlyias.com

6 भक्ति और सूफी परंपराएँ

भक्ति आंदोलन

भक्ति शब्द संस्कृत के मूल शब्द "**भज्**" से लिया गया है, जिसका अर्थ है **"सेवा करना"** और इसे "भक्ति" या ईश्वर के प्रति प्रेमासक्ति (Passionate Love for the Divine) के रूप में परिभाषित किया गया है। यह भक्त और इष्ट देव के बीच संबंध पर केंद्रित है। भक्ति आंदोलन ने 8वीं से 18वीं शताब्दी ईस्वी तक भारतीय उपमहाद्वीप में नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन किए।

भक्ति आंदोलन के अध्ययन करने के स्रोत:

- क्षेत्रीय भाषाओं में सृजित साहित्य, भक्ति गीत और काव्य ने प्राथमिक स्रोत के रूप में काम किया।
    - **जयदेव के "गीत गोविंद" में कृष्ण और राधा** के बीच प्रेम का चित्रण किया गया है।
    - अलवारों के तमिल भजन आदि।
- **जीवन-वृतांत:** भक्ति संतों के अनुयायियों या उनके संप्रदाय के सदस्यों द्वारा लिखे गए अपने गुरुओं के जीवन वृत्तांत में उनके जीवन और उपदेशों के बारे में जानकारी मिलती है।
    - "जनम-साखी" गुरु नानक के जीवन पर आधारित है।
- मौखिक ज्ञान, मौखिक आख्यान और गाथाएँ।
    - बुर्रा कथा - आंध्र प्रदेश का एक तेलुगु गाथागीत है।

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण:

- हिंदुओं में प्रचलित अंधविश्वास, धर्म को जटिल बना देता है।
- समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता और असमानता ने लोगों के विभिन्न वर्गों के बीच असंतोष पैदा किया। इसके अलावा, इस्लाम ने ईश्वर की एकात्मकता और मनुष्य के बीच भाईचारे का प्रचार किया, जिसने उत्पीड़ित जनमानस को आकर्षित किया।
- भारत के विभिन्न हिस्सों में धार्मिक नेताओं ने कट्टरता, धर्मांधता और धार्मिक असहिष्णुता जैसी बुराइयों को दूर करने के लिए भक्ति नामक पूर्ण समर्पण भाव का प्रचार किया।

भक्ति आंदोलन की मुख्य विशेषताएँ:

- एकेश्वरवाद (ईश्वर एक है) का प्रचार किया।
- मोक्ष (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति), केवल ईश्वर के प्रति प्रगाढ़ भक्ति और विश्वास से ही प्राप्त किया जा सकता है।
- मूर्ति पूजा की आलोचना की तथा कर्मकांड, तीर्थयात्राओं और उपवासों की निंदा की।
- गुरु एक मार्गदर्शक और उपदेशक के रूप में कार्य कर सकता है।
- सार्वभौमिक भाईचारे के सिद्धांतों का समर्थन किया और जाति व्यवस्था की निंदा की।
- इसने संदेश दिया कि अंधविश्वासी प्रथाओं को त्यागना होगा।
- किसी भी भाषा को पवित्र नहीं माना और आम जनमानस की भाषा में ही काव्य की रचना की।

भक्ति परंपरा को दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

- **सगुण भक्ति (साकार या सगुण):** इसके अंतर्गत देवताओं और उनके मानव अवतारों की पूजा करने पर जोर दिया जाता है। जैसे : चैतन्य महाप्रभु द्वारा भगवान कृष्ण की पूजा।
- **निर्गुण भक्ति (निराकार या निर्गुण):** इसमें भगवान के अमूर्त रूप (निराकार) की पूजा की जाती है। जैसे: सिख धर्म में ईश्वर निराकार है।

प्रारंभिक समर्थक

- छठी शताब्दी के आस-पास प्रारंभिक भक्ति आंदोलनों का नेतृत्व दो समूहों द्वारा किया गया था:
    - **अलवार (विष्णु के भक्त):** नम्मालवार, तिरुमंगैयालवार, आण्डाल और पेरियालवार प्रसिद्ध अलवार संत थे।
    - **नयनार (शिव के भक्त):** अप्पार, सुंदरार, तिरुज्ञान संबंदार, और मणिकावचाकार प्रसिद्ध नयनार संत थे।
- उन्होंने दक्षिण भारत के विभिन्न भागों में आम जनता के बीच स्थानीय भाषा में प्रचार के माध्यम से प्रेम और भक्ति का अपना संदेश पहुँचाया। इससे वैदिक धर्म के कुछ अनुयायियों को प्राचीन वैदिक धर्म का पुनरुद्धार करने में मदद मिली।
- उन्होंने पवित्र स्थलों की पहचान करते हुए तमिल भजन गाए, जो बाद में प्रमुख मंदिरों और तीर्थ केंद्रों में विकसित हुए। उनके भजनों को मंदिर के अनुष्ठानों में एकीकृत किया गया और उनकी मूर्तियों की पूजा एक मंदिर परंपरा बन गई।
    - **उदाहरण:** श्री रामनाथस्वामी मंदिर (रामेश्वरम; भगवान शिव को समर्पित)

जाति के प्रति दृष्टिकोण:

- अलवारों और नयनारों ने शिल्पकारों, किसानों और हाशिए पर पड़ी "अस्पृश्य" जातियों के विविध सामाजिक समूहों के समर्थन से जाति व्यवस्था और ब्राह्मणवादी प्रभुत्व को चुनौती दी।

साहित्य

अलवार और **नयनारों ने** अपनी परंपराओं के महत्त्व को **वेदों के बराबर बताया**।

- अलवार संत
- **नालयिरादिव्यप्रबंधम** – यह 12 अलवार संतों द्वारा रचित "चार हजार छंदों" का एक संग्रह है जिसका संकलन 10वीं शताब्दी में नाथमुनि द्वारा किया गया था और इसे प्रायः तमिल वेद के रूप में जाना जाता है।

Search On TG: @apna_pdf

- आण्डाल के भक्ति गीतों का संग्रह तिरुप्पावै है। आण्डाल की तमिल कृतियों में तिरुप्पावै और नचियार तिरुमोझी शामिल हैं।
- **नयनार संत:** शैव साहित्य को पन्निरु तिरुमुरै (12 भाग) में संकलित किया गया था।
- तेवरम/थेवरम तमिल कवियों अप्पार, संबंदार और सुंदरार के भक्ति काव्य का संकलन है जो शैव तिरुमुरै के प्रारंभिक सात भागों का निर्माण करता है। आठवें भाग तिरुमुरै में मणिकवाचकार के भजन शामिल हैं।
- मणिकवाचकार के गीतों को तिरुवाचकम के नाम से जाना जाता है।
- सेखिझार द्वारा लिखित पेरियापुराणम में नयनारों की जीवनियों का संकलन है। यह शैव सिद्धांत का बारहवाँ तिरुमुरै है।

महिला भक्त

महिलाएँ समाज के पारंपरिक पदानुक्रम में सबसे निचले पायदान पर थीं। केवल **ईश्वर के प्रति अपनी पूर्ण भक्ति के प्रदर्शन** और अपने समकालीनों के साथ, **अपनी आध्यात्मिक समानता के लिए अटूट आग्रह के कारण** इन महिलाओं को अपने वर्ग में अनिच्छा से स्वीकार किया गया। उनमें से कई ने **तपस्या को** मुक्ति की दिशा में महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में **अस्वीकार कर दिया**। कुछ प्रसिद्ध महिला भक्त निम्नलिखित हैं:

- अक्कमहादेवी, जिन्हें अक्का या महादेवी के नाम से भी जाना जाता है, 12वीं शताब्दी में कर्नाटक के दक्षिणी क्षेत्र की शिव भक्त थीं।
- कराईक्कल अम्मैय्यार शिव भक्त थीं, उन्होंने अपने आध्यात्मिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक तपस्या की।
- आण्डाल एक अलवार संत थीं, उन्होंने विष्णु के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करते हुए छंदों की रचना की।
- इन महिलाओं ने त्याग का मार्ग चुना, लेकिन औपचारिक धार्मिक परंपराओं में शामिल नहीं हुईं। उनके अस्तित्व और लेखन ने समाज में पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती दी।

चोल शासकों का भक्ति परंपरा से संबंध

- शाही संरक्षण प्राप्त करने के लिए भक्ति-भजनों में प्रायः बौद्ध धर्म और जैन धर्म का विरोध किया गया।
- **चोल शासकों** ने ब्राह्मणवादी और भक्ति परंपराओं को संरक्षण प्रदान किया, विष्णु और शिव मंदिरों के लिए भूमि दी और उनका निर्माण करवाया। **चोल शासकों** ने संतों का समर्थन हासिल करने और शक्ति प्रदर्शन के लिए उनके विचारों को दोहराया। **उदाहरण: चिदंबरम, तंजावुर और गंगैकोंडचोलपुरम** में शिव मंदिर।
- चोल शासकों ने मंदिरों में **तमिल शैव भजन (नयनार)** के गायन को बढ़ावा दिया।
- 945 ई. के एक शिलालेख से संकेत मिलता है कि चोल शासक परांतक प्रथम ने एक शिव मंदिर में अप्पार, संबंदार और सुंदरार की धातु की मूर्तियाँ रखवाईं; जिनकी उनके त्योहारों के दौरान शोभायात्रा निकाली जाती थी।

छोटी और महान परंपराओं का मिश्रण

- ब्राह्मणों ने विभिन्न सामाजिक वर्गों की मान्यताओं और प्रथाओं को शामिल करना और अपनाना शुरू कर दिया, जिससे छोटी और बड़ी परंपराओं का मिश्रण हुआ। (महान परंपराएँ पुजारियों और शासकों जैसे प्रमुख सामाजिक वर्गों की प्रथाएँ हैं, जबकि छोटी परंपराएँ स्थानीय प्रथाएँ हैं)
- इस एकीकरण का एक उदाहरण पुरी, उड़ीसा में देखा जाता है, जहाँ प्रमुख देवता को जगन्नाथ के रूप में जाना जाने लगा और 12वीं शताब्दी में विष्णु के रूप में मान्यता दी गई, जो स्थानीय और पौराणिक परंपराओं के एकीकरण पर प्रकाश डालती है।।

वीरशैव/लिंगायत परंपरा

संस्थापक: बसवन्ना, कलचुरी शासक बिज्जला द्वितीय के मंत्री (12वीं शताब्दी के मध्य में)।

प्रथाएँ:

- शिव की पूजा लिंग के रूप में की जाती है और पुरुष आमतौर पर चाँदी के छोटी पेटी/केस में एक छोटा लिंग धारण करते हैं, जिसे बाएँ कंधे पर लटकाया जाता है।
- जंगम (घूमने वाले भिक्षु) को श्रद्धेय माना जाता है।
- अपने मृतकों को इस विश्वास के साथ दफ़नाते हैं कि मृत्यु के बाद उनका शिव के साथ मिलन हो जाएगा और पुनर्जन्म नहीं होगा। उनमें धर्मशास्त्रों में दाह संस्कार जैसे अंतिम संस्कार की प्रथा वर्णित नहीं है।
- इस परंपरा ने जाति व्यवस्था के पारंपरिक रीति-रिवाजों का विरोध किया और पुनर्जन्म के सिद्धांत पर सवाल उठाया। **[यूपीएससी 2016]**
- विधवा पुनर्विवाह और युवावस्था के बाद विवाह जैसी प्रथाओं का समर्थन किया जिसे धर्मशास्त्रों में अस्वीकृत कर दिया गया था।

मुख्य विशेषताएँ:

- उन्होंने मूर्तिपूजा और अनेक देवताओं की पूजा को अस्वीकार करते हुए, भगवान शिव की अनन्य पूजा को बढ़ावा दिया।
- उन्होंने मंदिरों में जाने, विशेषकर शिवलिंग वाले मंदिरों में जाने और बलि-अनुष्ठानों में भाग लेने को हतोत्साहित किया। उनके अनुसार, पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा सच्ची आध्यात्मिक शुद्धता सुनिश्चित नहीं करती। इनके द्वारा मंदिरों को दिए जाने वाले दान को, असमानता को बढ़ावा देने के रूप में देखा गया।
- ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म की मान्यताओं और प्रथाओं के अभिन्न अंग "पंच सूतक" (जन्म, मृत्यु, मासिक धर्म, लार और जाति संपर्क) का पालन करने से परहेज किया।
- **षष्ठला, अष्टावरण और पंचाचार-**
  - **षष्ठला ने** भगवान शिव से एकाकार होने के छह चरण बताए।
  - **अष्टावर ण ने** व्यक्तियों को आध्यात्मिक बाधाओं से बचाया।
  - **पंचाचार में** वीरशैव लोगों के विश्वास की रक्षा के लिए आवश्यक पाँच धार्मिक आसन शामिल थे।
- **कायक-** इसके अंतर्गत उन्होंने सभी कार्यों में समानता पर बल दिया तथा समर्पण को महत्त्व दिया। उनका मानना था कि अपने कार्य के प्रति समर्पण से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- लिंगायत परंपरा को कन्नड़ में 'वचनों' (भक्ति छंदों) के माध्यम से जाना जाता है, जो पुरुष और महिला दोनों अनुयायियों द्वारा रचित हैं।

Search On TG: @apna_pdf

तंत्रवाद

- शैव और बौद्ध धर्म दोनों ही इन विचारों से प्रभावित थे। अगली सहस्राब्दी में इन मान्यताओं को हिंदू के रूप में वर्गीकृत किया गया। **तंत्रवाद के दो बुनियादी सिद्धांत होते हैं:**
  - यह वेदों की सत्ता को स्वीकार नहीं करता।
  - प्रजनन संस्कार, तंत्रवाद का एक प्रमुख हिस्सा है।
- **तंत्रवाद का प्रारंभिक अप्रत्यक्ष पाठ्य संदर्भ:**
  - बाणभट्ट कृत कादंबरी और हर्षचरित।
  - महेंद्रवर्मन द्वारा रचित मत्तविलास प्रहसन।
  - दण्डिन द्वारा रचित दशकुमारचरित।
- **पुरालेखीय साक्ष्य:** विश्ववर्मन का शिलालेख (गंगाधर, राजस्थान) (423 ई.)
- **तांत्रिक साधनाएँ:**
  - स्त्री तत्त्व (प्रकृति) का महत्त्व पुरुष तत्त्व (पुरुष) से अधिक है।
  - उन्होंने अनुष्ठानों के दौरान जाति, पितृसत्ता और वर्ग भेदों की उपेक्षा की।
  - तंत्रवाद मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करता, क्योंकि शरीर को ब्रह्मांड का एक सूक्ष्म रूप माना जाता है।

उत्तर भारत में धार्मिक उफान (Religious Ferment in North India)

- उत्तर भारत में शासकों द्वारा समर्थित मंदिरों में विष्णु और शिव की पूजा की जाती थी, लेकिन 14वीं शताब्दी तक अलवार और नयनार जैसे संत दिखाई नहीं दिए।
- नाथपंथी, सिद्धाचार और योगी धार्मिक समूह थे जो स्थानीय भाषा में तर्कों का उपयोग करके, रूढ़िवादी अनुष्ठानों और सामाजिक व्यवस्था की आलोचना करते थे। उन्होंने मोक्ष के मार्ग के रूप में योगासन, प्राणायाम और ध्यान जैसे अभ्यासों के माध्यम से मन और शरीर के गहन प्रशिक्षण का समर्थन किया।
- तुर्कों के आगमन और 13वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत की स्थापना ने राजपूत राज्यों और उनसे जुड़े ब्राह्मणों को कमजोर कर दिया और इस क्षेत्र के सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों में बदलाव ला दिया।

भक्ति आंदोलन

आदि शंकराचार्य (788-820 ई.)

- आदि शंकराचार्य का जन्म केरल के कलाडी में हुआ था। उनके आगमन से संस्कृत में दार्शनिक भक्ति संवाद की शुरुआत हुई।
- उन्होंने अद्वैत वेदांत (अद्वैतवाद) के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। शंकर का अद्वैत या गैर-द्वैतवाद दर्शन, वेदांत और उपनिषद पर आधारित था।
- **शंकर संप्रदाय की दो मुख्य विशेषताएँ,** मठों की स्थापना और संस्कृत ग्रंथों का संरक्षण था। बौद्ध धर्म को जड़ से उखाड़ने और स्मार्त (पंच देव के उपासक-परंपरावादी) मठों की स्थापना करने के उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप विभिन्न स्थानों जैसे शृंगेरी, द्वारका, बद्रीनाथ और पुरी में मठों की स्थापना हुई, जिनका नेतृत्व ब्राह्मण मठाधीशों ने किया।
- शंकर ने शैव और वैष्णव पूजा को वैदिक धर्म के दो समान रूप से महत्त्वपूर्ण पहलुओं के रूप में देखा।
- केदारनाथ में शंकराचार्य की 12 फुट की प्रतिमा स्थापित की गई।

रामानुज (1017-1137 ई.)

- रामानुज दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध धर्म सुधारक थे, उन्होंने उत्तर भारत के कुछ पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा की।
- उन्होंने आदि शंकराचार्य की अद्वैतवादी विचारधारा को चुनौती दी और विशिष्टाद्वैत (गुणात्मक अद्वैतवाद) (Qualified Monoism) का प्रतिपादन किया।
- रामानुज ने वर्णाश्रम व्यवस्था के बाहर के सामाजिक समूहों में भक्ति के सिद्धांत का प्रचार करने में रुचि ली। उन्होंने मंदिर अधिकारियों को वर्ष में कम से कम एक बार मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति देने के लिए राजी किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि विष्णु की तीव्र भक्ति मोक्ष प्राप्त करने का सबसे अच्छा साधन है। **[यूपीएससी 2022]**
- उनके उपदेश उपनिषदों और भगवद गीता पर आधारित थे और एक आम भाषा में दिए जाते थे।
- वह श्रीरंगम संप्रदाय के उपदेशों से प्रभावित थे। रामानुज इसमें शामिल हो गए और बाद में उन्हें श्रीरंगम में एक मठ का मठाधीश घोषित किया गया।
- उनके शिष्य रामानंद ने बाद में उत्तर भारत में उनके संदेशों का प्रचार-प्रसार किया।
- उनकी मृत्यु के एक सदी बाद एक विभाजन हुआ जो वेदांत देसीकर और मनावला मामुनि के तहत दो अलग-अलग संप्रदायों में विकसित हुआ।
- हाल ही में, रामानुजाचार्य की 1,000वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में हैदराबाद में स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी (Statue of Equality) का निर्माण किया गया था।

नामदेव (1270-1350 ई.)

वरकरी सम्प्रदाय

भगवान विट्ठल के प्रति भक्ति से वारकरी संप्रदाय की उत्पत्ति हुई, जिसने पंढरपुर (महाराष्ट्र) की वार्षिक तीर्थयात्रा पर जोर दिया। महाराष्ट्र के वैष्णव संत कवि जैसे कि ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और तुकाराम भगवान विट्ठल के भक्त थे।

- नामदेव का जन्म एक दर्जी परिवार में हुआ था। उन्होंने महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन को लोकप्रिय बनाया और वारकरी संप्रदाय से निकटता से जुड़े रहे।
- ज्ञानदेव के प्रभाव से वे भक्ति के मार्ग पर आ गए।
- उन्होंने मराठी और हिंदी में अनेक अभंग (ईश्वर की प्रशंसा में रचित और गाए जाने वाले गीत) लिखे। बाद में उनके कुछ छंद गुरु ग्रंथ साहिब में भी जोड़े गए।
- सच्चे हृदय से ईश्वर से प्रेम करके पवित्र जीवन जीना और दृढ़ भक्ति के साथ अपना सब कुछ उन्हें समर्पित कर देना ही उनके संदेश का सार है।

ज्ञानेश्वर (1275-1296 ई.)

- ज्ञानेश्वर महाराष्ट्र के संत थे, जो विष्णु को विठोबा या कृष्ण के रूप में पूजते थे।
- उन्होंने भगवद गीता का संस्कृत से मराठी में अनुवाद किया, जिसे ज्ञानेश्वरी कहा जाता है।

रामानंद (1400-1470 ई.)

- रामानंद, रामानुज के अनुयायी थे और हिंदी में वैष्णव धर्म का प्रचार करते थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपने भक्ति के सिद्धांत का प्रचार स्थानीय भाषा हिंदी में किया।

Search on TG: @apna_pdf

- वे राम के अनन्य उपासक थे, उन्होंने बनारस में शिक्षा प्राप्त की। रामानंद ने राम और सीता के प्रति प्रेम और भक्ति के दर्शन पर आधारित अपने संप्रदाय की स्थापना करके, वैष्णववाद में आमूल-चूल परिवर्तन किया। उन्होंने विष्णु के स्थान पर राम की पूजा की।
- उन्होंने ईश्वर के समक्ष समानता का समर्थन किया और जाति व्यवस्था, विशेषकर ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को अस्वीकार किया।
- उन्होंने सभी जातियों और पृष्ठभूमि के अनुयायियों का स्वागत किया और उनके बारह प्रमुख शिष्य थे, जिनमें संत कबीर, रविदास एवं पद्मावती नाम की एक महिला शामिल थी।
- रामानंद के अनुसार, "किसी भी व्यक्ति को किसी व्यक्ति का संप्रदाय या जाति नहीं पूछनी चाहिए।"

कबीर (1398-1448 ई.)

- कबीर संभवतः एक बुनकर थे, जिनका जन्म वाराणसी में हुआ था।
- उन्होंने स्वामी रामानन्द से वेदांत दर्शन की शिक्षा ली।
- तजकिरा-ए-औलिया-ए-हिंद (मुस्लिम संतों की जीवनी) के अनुसार, वे मुस्लिम सूफी संत शेख तकी के शिष्य थे। [यूपीएससी 2019]
- उनकी कविताओं में अनेक विचारों को अभिव्यक्ति मिली है, जिसमें सूफी और हिंदू विचारों जैसे 'जिक्र' और 'नाम-सिमरन' का मिश्रण है। उन्होंने बताया कि अल्लाह और ईश्वर, राम और रहीम एक ही हैं। उनका मूर्ति पूजा और बहुदेववाद में कोई विश्वास नहीं था। उन्होंने जाति व्यवस्था की निंदा की साथ ही उन्होंने मुस्लिम ढोंग की भी निंदा की।
- **कबीर के पद तीन अलग-अलग परंपराओं में मौजूद हैं:**
  - कबीर के बीजक को कबीरपंथ (कबीर मार्ग या संप्रदाय) द्वारा संरक्षित किया गया है। [यूपीएससी 2014]
  - राजस्थान में दादूपंथ कृत कबीर ग्रंथावली।
  - आदि ग्रंथ साहिब।
- उनकी कविताएँ परम यथार्थ को व्यक्त करने की जटिलता का संकेत देने के लिए प्रायः रोजमर्रा के अर्थों को उलट-पुलट कर देती हैं (उलटबांसी)।

बाबा गुरु नानक (1469-1538 ई.)

- ननकाना साहिब (रावी नदी के पास) में जन्म।
- उन्होंने प्रमुखता से निर्गुण भक्ति का समर्थन किया, एक निराकार, लिंगहीन परम सत्ता में विश्वास किया जिसे "रब" कहा जाता है।
- उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों के अनुष्ठानों, बलिदानों और धर्मग्रंथों को अस्वीकार कर दिया और "सबद" भजनों के माध्यम से ईश्वर का नाम जप करके उससे जुड़ने पर जोर दिया।
- उन्होंने अपने अनुयायियों का एक समुदाय स्थापित किया और सामूहिक पूजा या सामूहिक पाठ पर केंद्रित "संगत" के लिए दिशा-निर्देश निर्धारित किए। उन्होंने सिकंदर लोदी (1489-1517 ई.) के काल में और जब बाबर मुगल वंश को मजबूत कर रहा था, सिख धर्म की स्थापना की। [यूपीएससी 2013]
- गुरु नानक के उपदेश आदि ग्रंथ में संकलित हैं।

अन्य सिख गुरु:

- दूसरे सिख गुरु, **गुरु अंगद ने 'गुरुमुखी' लिपि** की शुरुआत की।
- पाँचवें गुरु, **गुरु अर्जन ने उनके भजनों को आदि ग्रंथ साहिब में संकलित किया**, जिसमें उनके उत्तराधिकारियों और **बाबा फरीद**, **रविदास** और **कबीर** जैसे कवियों के छंद भी शामिल हैं।
- **दसवें (अंतिम) गुरु, गुरु गोबिंद सिंह ने**, नौवें गुरु, **गुरु तेग बहादुर की रचनाओं को शामिल करके इसका विस्तार किया, जिन्हें गुरु ग्रंथ साहिब (गुरुमुखी लिपि में लिखा गया)** के रूप में जाना जाता है। गुरु गोबिंद सिंह के बाद ग्रंथ साहिब को गुरु मान लिया गया।
- **गुरु ग्रंथ साहिब में रामानंद, नामदेव, कबीर** और **शेख फरीद** जैसे कई भक्ति कवियों और सूफी संतों की रचनाएँ भी शामिल हैं।
- गुरु गोबिंद सिंह ने सिख धर्म के **पाँच प्रतीकों (5 ककार) को परिभाषित किया। ये पाँच प्रतीक थे – केश, कृपाण, कंघा, कड़ा, कच्छा।**

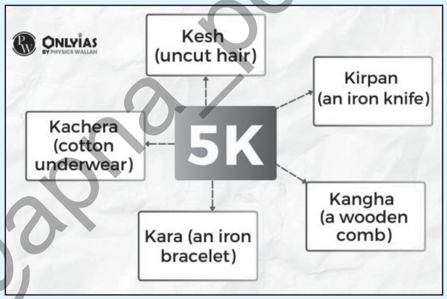

वल्लभाचार्य (1479-1531 ई.)

- पुष्टिमार्ग (अनुग्रह मार्ग) के संस्थापक वल्लभाचार्य ने वात्सल्य भक्ति के माध्यम से बाल कृष्ण की भक्ति पर जोर दिया।
- उन्होंने पूरे भारत की यात्रा की और अपनी तीर्थयात्राओं के दौरान चौरासी पुष्टिमार्ग केंद्रों की स्थापना की।
- उन्होंने शुद्धाद्वैत (शुद्ध अद्वैतवाद) का सिद्धांत प्रतिपादित किया।
- वैष्णव भक्तों के लिए गृहस्थ जीवन का समर्थन किया।

चैतन्य (1485-1533 ई.)

- चैतन्य को 'चैतन्य महाप्रभु' कहा जाता था, उनके भजन बंगाल में लोकप्रिय हैं। वे कृष्ण को समर्पित एक बंगाली संत थे।
- उन्होंने एक पुनरुत्थानवादी आंदोलन शुरू किया, क्योंकि वह अन्य सभी देवताओं पर कृष्ण की श्रेष्ठता स्थापित करना चाहते थे। उनका आंदोलन बंगाल और उड़ीसा में लोकप्रिय हुआ।
- उनके अनुयायी उन्हें विष्णु का अवतार मानते थे। उन्होंने प्रेम और सहिष्णुता का समर्थन किया और जातिगत असमानताओं का विरोध किया।
- उन्होंने बंगाल में 'संकीर्तन' (सार्वजनिक ईश्वर-स्तुति गान) को लोकप्रिय बनाया।

शंकरदेव (1499-1569 ई.)

- शंकरदेव ने भगवद गीता और भागवत पुराण से प्रेरणा लेते हुए, अपने भगवती धर्म उपदेशों के माध्यम से असम में (विशेष रूप से कामरूप क्षेत्र में) वैष्णववाद का प्रचार किया।
- उन्होंने विष्णु के प्रति समर्पण पर जोर दिया और 'नाम कीर्तन' - भक्त मंडलियों (सतसंग) में ईश्वर के नाम जप का समर्थन किया।

Search On TG: @apna_pdf

- उन्होंने आध्यात्मिक विकास के लिए 'सत्र' (मठ) और 'नाम घर' (प्रार्थना कक्ष) का समर्थन किया।
- "कीर्तन-घोष" (ब्रजावली भाषा में लिखित) शंकरदेव की एक उल्लेखनीय काव्य रचना है।

तुलसीदास (1532-1623 ई.)

- तुलसीदास ने अवधी में राम कथा के प्रस्तुतीकरण के माध्यम से राम पंथ को लोकप्रिय बनाया।
- उनकी उल्लेखनीय रचनाओं में जानकी मंगल, पार्वती मंगल, रामचरितमानस, विनय पत्रिका, दोहावली, गीतावली शामिल हैं।
- वे अकबर और जहाँगीर के समकालीन थे।

तुकाराम (1608-1649 ई.)

- तुकाराम ने मराठी में अभंग (भक्ति काव्य के रूप) लिखे, जो पंढरपुर के भगवान विठोबा की प्रशंसा में लिखे भक्ति गीत थे।
- वे छत्रपति शिवाजी, जहाँगीर, शाहजहाँ और एकनाथ एवं रामदास जैसे संतों के समकालीन थे।
- वे निराकार ईश्वर में विश्वास करते थे और वैदिक बलिदानों, तीर्थयात्राओं और मूर्ति पूजा को अस्वीकार करते थे।
- उन्होंने समानता और भाईचारे को बढ़ावा दिया और हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने का प्रयास किया। इस विषय पर उनके कुछ छंद भी हैं।

गुरु रामदास (1608-1681 ई.)

- गुरु रामदास छत्रपति शिवाजी के प्रसिद्ध गुरु और आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे।
- उन्होंने ईश्वर के समक्ष सभी मनुष्यों की समानता पर बल दिया।
- वे न केवल एक धार्मिक उपदेशक थे, बल्कि एक दूरदर्शी राष्ट्र-निर्माता भी थे।

जनाबाई (1258-1350 ई.)

- जनाबाई का जन्म महाराष्ट्र में एक 'निम्न' जाति के परिवार में हुआ था, उन्होंने नामदेव की शिष्या के रूप में सेवा की।
- उन्होंने अपनी निम्न-जाति के दर्जे और घरेलू जीवन की सीमाओं की चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए, 300 से अधिक कविताएँ लिखीं।

मीराबाई (1498-1546 ई.)

- मीराबाई का जन्म मेड़ता (राजस्थान) में हुआ था। वह राणा जोधाजी की परपोती थीं। उनका विवाह मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोज राज से हुआ। वह महल से भाग गईं और वैवाहिक जीवन को त्याग कर घुमक्कड़ संत के रूप में रहने लगीं। उन्होंने तीव्र वेदना की अभिव्यक्ति वाले गीतों की रचना की और स्वयं को कृष्ण के प्रति समर्पित कर दिया।
- वह भक्ति परंपरा में सगुण भक्ति का समर्थन करने वाली एक प्रमुख महिला कवयित्री थीं। उन्होंने राग-गोविंद की रचना की।
- मीराबाई के गुरु, रैदास चमड़े का काम करने वाले थे, इससे पता चलता है कि उन्होंने जातिगत मानदंडों को अस्वीकार कर दिया था।
- हालाँकि, उन्होंने कोई संप्रदाय नहीं बनाया, लेकिन उनके गीत गुजरात और राजस्थान में वंचित समुदायों के बीच लोकप्रिय हैं।

सूरदास

- सूरदास आगरा के अंधे कवि (Blind Bard of Agra) के नाम से मशहूर थे। यह माना जाता है कि सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे।
- सूरदास ने साकार ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति के धर्म का प्रचार किया। उन्होंने भगवान कृष्ण के बारे में प्रेरक हिंदी काव्य की रचना की।
- कृष्ण की बाल लीला, सूरदास के काव्य का पहला प्रमुख विषय है।
- उनकी लोकप्रिय कृतियाँ सूर सागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी हैं। उनकी प्रमुख कृति सूर सागर में, भगवान कृष्ण के जन्म से लेकर मथुरा प्रस्थान तक की कहानी का वर्णन है।

बहिनाबाई या बहिना (1628-1700 ई.)

- बहिनाबाई महाराष्ट्र की संत कवि थीं, उन्होंने मराठी भाषा में अनेक अभंग लिखे जिनमें महिलाओं के दैनिक श्रम का चित्रण किया गया है।
- उनकी कविताएँ आत्मकथात्मक हैं, जिनमें उनके जीवन के विभिन्न चरणों और कृष्ण के एक रूप भगवान विठोबा के प्रति उनके प्रगाढ़ प्रेम के कारण वैवाहिक संघर्षों का वर्णन है।
- उन्होंने अपने दिव्य प्रेम के प्रति समर्पित रहते हुए, अपने वैवाहिक कर्तव्यों का सम्मान किया, जैसा कि अपने पतियों के प्रति महिलाओं की जिम्मेदारियाँ से संबंधित उनके छंदों में परिलक्षित होता है।
- ब्राह्मण पृष्ठभूमि से होने के बावजूद, वह निम्न जाति के संत कवि तुकाराम का सम्मान करती थीं और पारंपरिक शुद्धता के मानदंडों पर भक्ति को प्राथमिकता देती थीं।

सूफी आंदोलन

परिचय

सूफीवाद, जिसे इस्लामी ग्रंथों में **"तसव्वुफ" के नाम से जाना जाता है**, इस्लाम की एक रहस्यवादी विचारधारा है। सूफी शब्द की उत्पत्ति के संबंध में विवाद है। कुछ लोगों का मानना है कि इसकी उत्पत्ति **"सूफ" (ऊनी कंबल)** से हुई है, जिसका तात्पर्य सूफियों द्वारा पहने जाने वाले ऊनी कपड़ों से है, जबकि कुछ लोगों का मानना है कि इसकी उत्पत्ति "**सफा**" (पवित्रता), या "**सुफ्फा**" से हुई है, जिसका तात्पर्य पैगंबर की मस्जिद के पास एक मंच से है जहाँ समर्पित अनुयायी धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए एकत्र होते थे। इसका सार **ईश्वर के साथ गहरा, व्यक्तिगत जुड़ाव तलाशना है**।

भारत में सूफीवाद की उत्पत्ति:

- जैसे-जैसे मुस्लिम साम्राज्य का विस्तार हुआ, सूफी आंदोलन ने बड़े उत्साह के साथ इस्लाम का प्रचार किया तथा यह पूरे मुस्लिम जगत में फैल गया।
- भारत में इसकी शुरुआत व्यापार के आगमन के साथ हुई, जब विदेशी व्यापारी पश्चिमी तट पर बसने लगे। बाद में, लगातार मुस्लिम आक्रमणों के कारण सूफियों को भारत में प्रमुखता मिली।
- दातागंज के शेख अली हुजवारी भारत के पहले प्रतिष्ठित सूफी थे। उन्होंने अपनी पुस्तक कश्फुल-उल-महजुब के माध्यम से भारत में भविष्य के सूफियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने सूफीवाद के मूल सिद्धांतों, जैसे ईश्वर की पूजा, ईश्वर से प्रेम, ईश्वर का ज्ञान, शुद्धि और प्रलय पर जोर दिया।

सूफी आंदोलन की जानकारी के महत्त्वपूर्ण श्रोत:

साहित्य:

- **मालफुजात:** अमीर हसन सिज्जी देहलवी द्वारा संकलित शेख निजामुद्दीन औलिया के संवादों का संग्रह।
- **मकतूबत:** सूफी गुरुओं द्वारा अपने शिष्यों को संबोधित पत्र।
  - **मकतूबत-ए-इमाम रब्बानी** प्रसिद्ध नक्शबंदी **शेख अहमद सरहिंदी के पत्र हैं**, जिनकी विचारधारा प्रायः अकबर के उदार और गैर-सांप्रदायिक विचारों से भिन्न थी।

Search On TG: @apna_pdf

- **तजकिरा (जीवनियाँ):** मीर खुर्द किरमानी का सियार-उल-औलिया भारत में लिखा गया पहला सूफी तजकिरा था। यह मुख्य रूप से चिश्ती संतों से संबंधित था। सबसे प्रसिद्ध तजकिरा अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी (मृत्यु 1642 ई.) का अखबार-उल-अखयार है। तजकिरा के लेखक अक्सर अपने स्वयं के सिलसिले की श्रेष्ठता स्थापित करने और अपनी आध्यात्मिक वंशावली का महिमामंडन करने का प्रयास करते थे।
- **कविता और संगीत:** विशेष रूप से सूफी सभाओं (समा) में संगीत का उपयोग आध्यात्मिक प्रेरणा और अभिव्यक्ति का स्रोत रहा है। उदाहरण के लिए, ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने समा (महबूब-ए-इलाही) नामक संगीत गायन को लोकप्रिय बनाया।

सूफीवाद के मुख्य सिद्धांत: [यूपीएससी 2012]

- ईश्वरीय वास्तविकता (हकीकत) के साथ सीधा संवाद केवल ऐसे शेख, पीर या मुर्शीद की सख्त निगरानी में सूफी पथ (तारिका) को पार करके स्थापित किया जा सकता है, जिसने खुद इसे सफलतापूर्वक पार किया हो।
- शिष्य (मुरीद) ने आत्म-त्याग, एकाग्रता प्राप्त करने के लिए ईश्वर के नाम का स्मरण (जिक्र) और चिंतन जैसे आध्यात्मिक क्रियाओं का अभ्यास करके इन 'चरणों' के माध्यम से प्रगति की।
- सूफियों ने एक भावपूर्ण संगीत गायन (समा) का आयोजन किया। समा के अभ्यास का उद्देश्य परमानंद की रहस्यमय स्थिति को प्रेरित करना था।
- धर्मशाला (खानकाह) सूफी संप्रदाय की गतिविधियों का केंद्र था, जिसकी व्यवस्था बंदोबस्त और दान द्वारा की जाती थी। यह वह स्थान था जहाँ पीर अपने शिष्यों को आध्यात्मिक प्रशिक्षण देता था। खानकाह की लोकप्रियता और शिष्यों को आकर्षित करने की क्षमता 'पीर' की प्रतिष्ठा पर निर्भर करती थी।
- सूफी अनुष्ठानिक प्रथाओं के मुकाबले व्यक्तिगत आध्यात्मिकता पर अधिक जोर देते हैं।
- उन्होंने ध्यान, जप और कुरान की व्यक्तिगत व्याख्याओं के माध्यम से ईश्वर के साथ गहरा संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। वे तवक्कुल में भी विश्वास करते थे, जिसका अर्थ है ईश्वर की योजना पर पूरी तरह भरोसा करना। वस्तुतः यह नियंत्रण का पालन करने के विचार का प्रतीक है।

सूफीवाद के प्रमुख सिलसिले:

सुफीवाद के अनेक छोटे-बड़े सिलसिले थे। उनमें से कुछ की स्थापना भारत में ही हुई थी। प्रमुख सिलसिला इस प्रकार हैं

- चिश्तिया सिलसिला
- कादरिया सिलसिला
- सुहरावर्दिया सिलसिला
- नक्शबन्दिया सिलसिला

छोटे सिलसिला एक या दूसरे प्रमुख सिलसिला की शाखा के रूप में उभरे।

चिश्तिया सिलसिला

- चिश्तिया सिलसिले की स्थापना भारत में **ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती** ने की थी, जो अपने सहकर्मी (मार्गदर्शक) ख्वाजा उस्मान के आदेश पर मध्य एशिया से भारत आए थे। वह 1192 ई. में **मुहम्मद गोरी** की सेना के साथ आए और **अजमेर** में बस गए। उन्होंने कहा कि भक्ति संगीत ईश्वर के निकट आने का एक तरीका है।
- यह स्थानीय रीति-रिवाजों को सफलतापूर्वक अपनाने और भारतीय भक्ति परंपराओं को शामिल करने के कारण सबसे प्रभावशाली सूफी समूह था।
- शेख के सामने झुकना, आगंतुकों को पानी देना, दीक्षार्थियों का सिर मुंडवाना और योगाभ्यास जैसी प्रथाएँ, स्थानीय परंपराओं को आत्मसात करने के प्रयासों को दर्शाती हैं।

चिश्ती खानकाह में जीवन:

- खानकाह सामाजिक जीवन का केंद्र था। इसमें रहने और प्रार्थना करने के लिए विशेष आरक्षित कक्ष और एक हॉल था, जिसमें शेख का परिवार, परिचारक और शिष्य रहते थे। संभावित मंगोल खतरे के दौरान स्थानीय लोगों ने खानकाह में शरण माँगी थी।
- आगंतुकों में अमीर हसन सिज्जी और अमीर खुसरो जैसे कवि और दरबारी इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी शामिल थे।

चिश्ती भक्ति

- आध्यात्मिक कृपा (बरकत) पाने के लिए सूफी संतों की कब्रों की तीर्थयात्रा (जियारत) एक आम प्रथा है। इसमें दिव्य परमानंद के लिए कव्वालों द्वारा संगीत, नृत्य और रहस्यमय भजन शामिल हैं, जो स्वदेशी भक्ति परंपराओं का मिश्रण करते हैं।
- ख्वाजा मुईनुद्दीन की दरगाह "गरीब नवाज" सबसे अधिक पूजनीय है।
  - दिल्ली-गुजरात व्यापार मार्ग पर स्थित होने के कारण यह यात्रियों के बीच लोकप्रिय हो गई।
- सूफी 'जिक्र' (दिव्य नाम) और 'समा' या रहस्यमय संगीत प्रदर्शन के माध्यम से ईश्वर का आह्वान करते हैं, जो चिश्तियों के लिए एक प्रमुख पहलू है, जो स्वदेशी भक्ति परंपराओं को जोड़ता है।

भाषाएँ और संप्रेषण:

- दिल्ली में चिश्ती सूफियों ने संप्रेषण के लिए आम भाषा हिंदवी का इस्तेमाल किया।
- सूफी कवि अक्सर लंबी कविताओं का इस्तेमाल करते थे, जिसमें मानवीय प्रेम को दिव्य प्रेम का प्रतीक बताया जाता था।
  - उदाहरण के लिए- **मलिक मुहम्मद जायसी के "पद्मावत" में पद्मिनी और रतनसेन** की कहानी के माध्यम से आत्मा के परमात्मा से मिलन को दर्शाया गया है।
- बीजापुर और कर्नाटक में सूफी काव्य की रचना विशेष रूप से दक्खिनी में हुई, जो चिश्ती सूफियों से जुड़ी उर्दू भाषा का एक रूप है। इस क्षेत्र के सूफियों ने कन्नड़ वचनों की भक्ति परंपरा से प्रेरणा ली।

सूफी संत एवं उनका मुगल साम्राज्य से संबंध:

- चिश्ती परंपरा ने सादगी बरकरार रखी लेकिन, राजनीतिक अलगाव नहीं रखा और शासकों से अनुदान और कर-मुक्त भूमि स्वीकार की।
  - उदाहरण के लिए, **ख्वाजा मुईनुद्दीन** की दरगाह को 15वीं शताब्दी के अंत में मालवा के सुल्तान **गयासुद्दीन खिलजी** से धन प्राप्त हुआ था।
- उनकी धर्मपरायणता, विद्वता और कथित चमत्कारी क्षमताओं ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया, जिससे राजाओं को वांछित समर्थन प्राप्त हुआ।
  - उदाहरण के लिए, सम्राट अकबर अक्सर ख्वाजा मुईनुद्दीन (अजमेर) की दरगाह पर जाते थे और उदारतापूर्वक दान देते थे। उन्होंने दरगाह परिसर में एक मस्जिद का निर्माण करवाया। शाहजहाँ भी अपनी बेटी जहाँआरा के साथ दरगाह पर जाते थे।

Search on TG: @apna_pdf

जहाँआरा ने मुनिस-उल-अरवाह (आत्माओं का विश्वासपात्र) लिखी जो शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की जीवनी है।

- दिल्ली सल्तनत के शासकों ने उलेमाओं के शरिया कानून के दबाव को संतुलित करने के लिए सूफियों की शरण माँगी, जिनका दैवीय सत्ता के साथ सीधा संबंध था।
  - उदाहरण के लिए, सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ख्वाजा मुईनुद्दीन की दरगाह पर आने वाले पहले सुल्तान थे।
- सुल्तानों और सूफियों के बीच टकराव के कुछ उदाहरण भी सामने आए, जो अक्सर विशिष्ट अनुष्ठानों, जैसे सिजदा (घुटने पर बैठकर सुल्तान के सामने सिर झुकाना) और पैबोस (सुल्तान के पैर चूमना) से उत्पन्न होते थे।
  - उदाहरण के लिए, मुहम्मद तुगलक द्वारा अपनाई गई नीतियों पर चिश्ती सूफियों की असहमति।
- सुल्तानों और सूफियों के बीच संघर्ष के उदाहरण देखे गए, जो अक्सर विशिष्ट अनुष्ठानों, जैसे सिजदा (प्रणाम) और पैबोस (पैर चूमना) से उत्पन्न होते थे।
  - **उदाहरण:** मुहम्मद तुगलक द्वारा अपनाई गई नीतियों पर चिश्ती सूफियों की असहमति।
- सूफी शेखों को कभी-कभी उपाधियों से सम्मानित किया जाता था। उदाहरण के लिए, निजामुद्दीन औलिया के शिष्य उन्हें सुल्तान-उल-मशाइख कहकर संबोधित करते थे।
- दिल्ली के सुल्तानों के अधीन सुहरावर्दी और मुगलों के अधीन नक्शबंदी जैसे सूफियों का विशेष महत्त्व था। फिर भी, अध्यात्मवाद और राज्य से दान के प्रति उनके दृष्टिकोण के मामले में उनकी संगति के तरीके चिश्तियों से भिन्न थे।
  - उदाहरण के लिए, बहाउद्दीन जकारिया ने अधिक सांसारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए इल्तुतमिश से शेख-उल-इस्लाम की उपाधि और धन प्राप्त किया।
- कुछ सूफियों ने दरबारी पद भी स्वीकार कर लिए।

चिश्ती सिलसिले के प्रमुख सूफी संत

सूफी संत	महत्त्वपूर्ण बातें	दरगाह का स्थान	समय
शेख मुईनुद्दीन सिज्जी/मुईनुद्दीन चिश्ती	गौरी की विजय के समय भारत आए।	अजमेर (राजस्थान)	(1143-1235 ई.)
ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी	कुतुबमीनार उन्हीं को समर्पित है।	दिल्ली	(1173 – 1235 ई.)
शेख फरीदुद्दीन गंज-ए शकर/बाबा फरीद	गुरु ग्रंथ साहिब में उनके द्वारा लिखे गए भजन शामिल हैं।	अजोधन (पाकिस्तान)	(1178-1271 ई.)
शेख निजामुद्दीन औलिया	दिल्ली के लगातार सात सुल्तानों के शासनकाल के साक्षी रहे।	दिल्ली	(1238-1325 ई.)
शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए देहलवी	इन्हें रोशन चिराग-ए-दिल्ली या 'दिल्ली का रोशन चिराग' के नाम से भी जाना जाता है।	दिल्ली	(1274-1337 ई.)

शेख निजामुद्दीन औलिया

वे बाबा फरीद के शिष्य थे। उन्होंने आम जनता के साथ-साथ अभिजात वर्ग का मार्गदर्शन किया। राजा उन्हें बहुत सम्मान देते थे और विशेषकर आक्रमण के समय अक्सर उनसे उपदेश लेते थे। उनके खानकाह में हमेशा भीड़ लगी रहती थी। उन्होंने अपने पास आने वाले सभी लोगों को भोजन और आश्रय दिया और कभी भी जाति, पंथ या रंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया।

- शेख निजामुद्दीन औलिया के शिष्य अमीर खुसरो ने ख्याल (Qual) छंद पेश किया, जिसे कव्वाली प्रदर्शन के आरंभ या अंत में गाया जाता था।
- कव्वाली फारसी, हिंदवी और उर्दू भाषाओं का मिश्रण है और उपमहाद्वीप के पवित्र स्थान में इसकी व्यापक परंपरा रही है।
- उनके उपदेश अमीर हसन सिज्जी की पुस्तक 'फवायद-उल-फुआद' में संकलित हैं।
- उन्हें 'महबूब-ए-इलाही' के नाम से भी जाना जाता था।

कादरिया सिलसिला

- **संस्थापक:** अब्दुल कादिर जिलानी जो फारस -अरब से भारत में आए थे। शाह नमतुल्लाह इससे जुड़े एक अन्य संत थे।
- मुहिबुल्लाह शाह, मियाँ मीर और दारा शिकोह (शाहजहाँ के सबसे बड़े पुत्र) इस सिलसिला के प्रतिनिधि सूफी थे।
- कादरी, चिश्तियों से बहुत अलग नहीं थे सिवाय इसके कि वे अपने बड़ों के प्रति निष्ठा रखते थे।
- भारत में कादरिया सिलसिला 14वीं शताब्दी के आखिरी दशकों में काफी देर से शुरू हुआ। इब्न अल-अरबी के शामिल होने के कारण यह सिलसिला भारत सहित मुस्लिम जगत में और अधिक लोकप्रिय हो गया।
- इसलिए, इसके अधिकांश अनुयायी अस्तित्व की एकता (Unity of Existence) के अत्यंत विवादास्पद सिद्धांत, वहादत-उल-वुजूद के कट्टर समर्थक थे।
- अन्य तीन प्रमुख सिलसिलों की तुलना में कादरिया सिलसिला भारत में कम महत्त्वपूर्ण रहा।
- उर्दू कवि हसरत मोहानी और मुहम्मद इकबाल इसी सिलसिले से जुड़े थे।

सुहरावर्दी सिलसिला

- **संस्थापक:** शेख शहाबुद्दीन सुहरावर्दी मकतूल। उन्होंने सूफीवाद में प्रकाश (नूर) का सिद्धांत पेश किया।
- शेख निजामुद्दीन औलिया के समकालीन बहाउद्दीन जकारिया भारत में सुहरावर्दी सिलसिला के सबसे महत्त्वपूर्ण सूफी थे। उन्होंने इसे, विशेषकर उत्तरी भारत में, लोकप्रिय बनाया।

Search On TG: @apna_pdf

- चिश्ती संतों के विपरीत, सुहरावर्दी मानवता को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने के लिए धन संचय को अपरिहार्य मानते थे।
- चिश्तिया सिलिसिला की तुलना में बाद में पेश किया गया यह सिलसिला, अल्प समय के लिए ही लोकप्रिय रहा।

नक्शबंदी सिलसिला

- **संस्थापक:** ख्वाजा बहा-उल-दीन नक्शबंद।
- इसे ख्वाजा नसीर-उल-दीन उबैदुल्ला अहरार द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। वे तुर्की साम्राज्य के समरकंद शहर में रहते थे। उन्होंने तैमूर वंश के राजकुमारों को ताशकंद जैसे राज्यों पर आक्रमण करने और उन्हें अपने राज्य में मिलाने के लिए प्रोत्साहित किया।
- बाबर के आक्रमण के साथ भारत में नक्शबंदिया सिलसिला की शुरुआत हुई।
- नक्शबंदिया सिलसिला चिश्तिया, कादरिया और सुहरावर्दी सिलसिला की तुलना में कम सहिष्णु था।
- अन्य तीन सिलसिलों के विपरीत, नक्शबंदियों ने अपनी उत्पत्ति पहले खलीफा अबू बक्र से मानी।
- उनके शुद्धतावादी दृष्टिकोण ने उन्हें कठोर और कट्टरपंथी बना दिया। उन्होंने मुगल बादशाहों को हिंदू प्रजा पर जजिया (एक प्रकार का कर) लगाने की सिफारिश की। हालाँकि, मुगल बादशाहों ने कभी भी उनकी सलाह पर काम नहीं किया।
- एक प्रसिद्ध नक्शबंदी संत शेख अहमद सरहिंदी ने "सुलह-ए-कुल" (सभी धर्मों और अपने धर्म के साथ समझौता), "दीन-ए-इलाही" - अल्लाह के धर्म की नीति के लिए अकबर की तीखी आलोचना की, जिसे अकबर ने अपने मिशन को पूरा करने के लिए स्थापित किया था।
- आरंभिक नक्शबंदियों का झुकाव इब्न अल-अरबी के सिद्धांत वहादत-उल-वदजूद (अस्तित्व की एकता) की ओर था।
- बाद में शेख अहमद सरहिंदी ने एक और सिद्धांत प्रतिपादित किया जिसे प्रतीति की एकता (Unity of Appearance) वहादुल-उल-शाहूद के नाम से जाना जाता है। उत्तरवर्ती नक्शबंदियों ने इसका भी अनुशरण किया।।
- इस सिलसिले ने ख्वाजा खुर्द, अहमद सरहिंदी, ख्वाजा मासूम, शाह वली-उल्लाह और उनके बेटे शाह अब्दुल अजीज जैसे कई उल्लेखनीय संत दिए।
- शाह वली-उल्लाह इस सिलसिला के एक और उत्कृष्ट सूफी थे। उन्होंने यह भी कहा कि वहादुत-उल-वुजूद तथा वहादुत-उल-शाहूद रहस्यवादी यात्रा में केवल दो चरण हैं।

भक्ति और सूफी संवाद:

- उन दोनों के बीच खूब संवाद हुए। विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच लोकप्रिय नाथपंथी योगी रहस्यवाद पर चर्चा के लिए चिश्ती खानकाहों का दौरा करते थे। योग ग्रंथों के अनुवादों ने सूफियों को ध्यान पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।
- चिश्ती सूफियों ने मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देते हुए, योगियों के नैतिक मूल्यों को अपनाया। इस संवाद से सांस्कृतिक संश्लेषण हुआ, जिसमें विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषाओं में रहस्यवादी काव्य और समकालिक धार्मिक साहित्य की रचना शामिल थी। उदाहरण के लिए, चिश्तियों द्वारा हिंदवी का प्रयोग।

महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम

भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ प्रमुख धार्मिक उपदेशक	
500-800 ई.	तमिलनाडु में अप्पार, संबंदार, सुंदरमूर्ति
800-900 ई.	तमिलनाडु में नम्मलवार, मणिक्कवाचकार, आंडाल, टोंडाराडिप्पोडी
1000-1100 ई.	पंजाब में अल हुजविरी, दाता गंज बख्श; तमिलनाडु में रामानुजाचार्य
1100-1200 ई.	कर्नाटक में बसवन्ना
1200-1300 ई.	महाराष्ट्र में ज्ञानदेव, मुक्ताबाई; राजस्थान में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती; पंजाब में बहाउद्दीन जकारिया और फरीदुद्दीन गंज-ए शकर; दिल्ली में कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
1300-1400 ई.	कश्मीर में लाल देद: सिंध में लाल शाहबाज कलंदर; दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया: उत्तर प्रदेश में रामानंद; महाराष्ट्र में चोखामेला और बिहार में शराफुद्दीन याह्या मनेरी
1400-1500 ई.	उत्तर प्रदेश में कबीर, रैदास, सूरदास; पंजाब में बाबा गुरु नानक; गुजरात में वल्लभाचार्य; ग्वालियर में अब्दुल्ला शत्तारी; गुजरात में मुहम्मद शाह आलम; गुलबर्गा में मीर सैय्यद मुहम्मद गेसू दराज, असम में शंकरदेव; महाराष्ट्र में तुकाराम
1500-1600 ई.	बंगाल में श्री चैतन्य; राजस्थान में मीराबाई; उत्तर प्रदेश में शेख अब्दुल कुद्दूस गंगोही, मलिक मुहम्मद जायसी, तुलसीदास
1600-1700 ई.	हरियाणा में शेख अहमद सरहिंदी; पंजाब में मियाँ मीर

❖ ❖ ❖

Search on TG: @apna_pdf

7 विदेशी यात्रियों की नजर से

अल-बरूनी (किताब-उल-हिंद)

परिचय

- **अल-बरूनी का** जन्म 973 ई. में **खवारिज्म (उज्बेकिस्तान) में हुआ था।**
- वह **सीरियाई, अरबी, फारसी, हिब्रू** और **संस्कृत भाषा में दक्ष था।**
- **1017 ई.** में, ख्वारिज्म पर **सुल्तान महमूद के आक्रमण के दौरान अल-बरूनी गजनी चला गया** और वहीं बस गया।

ख्वारिज्म का क्षेत्र आधुनिक **तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान** और **कजाकिस्तान में स्थित है।**

- **पंजाब को गजनवी साम्राज्य में शामिल कर लेने से** उसे उत्तर भारत में बड़े पैमाने पर यात्रा करने और संस्कृत भाषा सीखने एवं भारतीय संस्कृति का अध्ययन करने में मदद मिली।

अनुवाद:

- अल-बरूनी ने **खगोल विज्ञान, गणित** और **चिकित्सा संबंधी संस्कृत** ग्रंथों का **अरबी** में अनुवाद किया। **उन्होंने पतंजलि के व्याकरण का अरबी** में अनुवाद किया।
- उसने संस्कृत को उसकी विशाल शब्दावली और जटिल विभक्तियों के कारण, एक **चुनौतीपूर्ण भाषा** के रूप में पाया।
- उसने यूनानी गणितज्ञ **यूक्लिड की कृतियों का संस्कृत** में अनुवाद किया।

किताब-उल-हिंद (तहकीक-ए-हिंद/ भारत का इतिहास)

यह **अरबी में लिखा गया एक विस्तृत ग्रंथ** है, जिसमें धर्म, दर्शन, खगोल विज्ञान, कीमिया (रसायन विद्या), रीति-रिवाज, सामाजिक जीवन, कानून और माप विज्ञान (माप विज्ञान और इसके अनुप्रयोग) जैसे विविध विषयों को शामिल किया गया है।

अल-बरूनी का जाति व्यवस्था पर विवरण

- अल-बरूनी का जाति व्यवस्था पर विवरण वेदों, पुराणों, भगवद गीता, पतंजलि की कृतियों और मनुस्मृति पर आधारित था।
    - उस समय सामाजिक विभाजन **केवल भारत में ही नहीं था।** प्राचीन फारस में पहले से ही चार सामाजिक वर्ग थे।
    - ब्राह्मणवादी कठोर जाति व्यवस्था की उपस्थिति को स्वीकार किया।
    - **प्रदूषण की अवधारणा** को यह तर्क देते हुए अस्वीकार कर दिया कि यह **प्रकृति के नियमों का खंडन करती है।**
- हालाँकि, **अंत्यज वर्ग** (निम्न जाति में पैदा हुए) ने अर्थव्यवस्था के लिए सस्ता श्रम प्रदान किया। उन्हें अक्सर सामाजिक उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता था, फिर भी उन्हें आर्थिक नेटवर्क में शामिल किया जाता था।

"हिंदू" शब्द की उत्पत्ति

हिंदू शब्द की उत्पत्ति मूलतः फारसी भाषा से हुई है जिसका प्रयोग **सिंधु नदी के पूर्व के क्षेत्र को** दर्शाने के लिए किया जाता था। अरब लोग ने इस क्षेत्र को **"अल-हिंद"** और इसके लोगों को **"हिंदी"** कहते थे। बाद में, **तुर्कों ने सिंधु नदी के पूर्व में बसे लोगों के लिए "हिंदू"** शब्द का प्रयोग किया, जबकि उनके क्षेत्र के लिए **"हिंदुस्तान"** का प्रयोग किया, और उनकी भाषा के लिए **"हिंदवी"** शब्द का प्रयोग किया। हालाँकि, यह उस समय धार्मिक पहचान को इंगित नहीं करता था तथा धार्मिक पहचान बहुत बाद में इस शब्द के साथ जुड़ी।

इब्न बतूता (रिहला)

परिचय

- इब्न बतूता का जन्म **तैंजियर (मोरक्को) में हुआ था।**
- वह अपनी 'यात्राओं की पुस्तक' **रिहला के लिए प्रसिद्ध है जो 14वीं शताब्दी में** उपमहाद्वीप के **सामाजिक** और **सांस्कृतिक** जीवन की जानकारी प्रदान करती है।
- इब्न बतूता यात्राओं के माध्यम से प्राप्त अनुभवजन्य ज्ञान को महत्त्व देता था।
- उसने **सीरिया, इराक, फारस, यमन, ओमान** और **पूर्वी अफ्रीकी व्यापारिक बंदरगाहों की यात्रा की।**

दिल्ली में सेवा और दक्षिण एशिया एवं उससे आगे की यात्रा

- इब्न बतूता मध्य एशिया से होते हुए **1333 ई. में सिंध** पहुँचा। वह कला और साहित्य के संरक्षक के रूप में **मुहम्मद बिन तुगलक की प्रतिष्ठा** से आकर्षित होकर दिल्ली के लिए रवाना हुआ।
- उसकी विद्वता से प्रभावित होकर **मुहम्मद बिन तुगलक ने उसे दिल्ली का काजी (न्यायाधीश)** नियुक्त किया और बाद में 1342 ई. में उसे मंगोल शासक के पास **सुल्तान के दूत के रूप में चीन भेजा।**
- इब्न बतूता ने मध्य भारत से **होते हुए मालाबार तट,** मालदीव (**काजी के रूप में 18 महीने तक रहा**), श्रीलंका, बंगाल, असम और सुमात्रा की यात्रा की और अंत में **चीनी बंदरगाह शहर जायतुन (क्वानझोउ) तक पहुँचा। 1347 ई.** में मोरक्को लौटने का निर्णय लेने से पहले उसने चीन में **बीजिंग** तक की यात्रा की, जिसके लिए उनकी तुलना अक्सर **मार्को पोलो (वेनिस के यात्री) से की जाती है,** जिसने **13वीं शताब्दी के अंत** में **चीन और भारत की यात्रा की थी।**

Search On TG: @apna_pdf

नारियल और पान: इब्न बतूता का विवरण

नारियल और पान उसके लिए दो अपरिचित पौधे थे। उसने पान को **अंगूर की बेलों के समान** पेड़ के रूप में वर्णित किया है, जिसे मुख्य रूप से इसकी पत्तियों के लिए उगाया जाता था।

भारतीय शहरों पर दृष्टिकोण

दिल्ली: उसने **दिल्ली** का विस्तृत वर्णन करते हुए इसे **अट्ठाईस दरवाजों** वाला शहर बताया है, जिसमें **बदायूँ दरवाजा** (सबसे बड़ा), **मांडवी दरवाजा** (अंदर अनाज बाजार) और **गुल दरवाजा** (एक बाग के पास) थे।

दौलताबाद (महाराष्ट्र)

- **इब्न बतूता ने दौलताबाद** का विस्तृत वर्णन किया है जो आकार में दिल्ली के समान था।
- बाजार न केवल **आर्थिक केंद्र के रूप में,** बल्कि **सामाजिक** और **सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में भी काम करते थे।** अधिकांश बाजारों में **मस्जिद और मंदिर दोनों थे**, और कुछ बाजारों में नर्तकों, संगीतकारों एवं गायकों के **सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए स्थान उपलब्ध थे।**

शहरों की समृद्धि

- **भारतीय कृषि अत्यधिक उत्पादक** थी (किसान सालाना **दो फसलें उगाते थे)।**
- उपमहाद्वीप, **अंतर-एशियाई व्यापार नेटवर्क** में **अच्छी तरह से एकीकृत था**, जिसमें भारतीय वस्त्रों की माँग बहुत अधिक थी।
- राज्य ने लगभग सभी व्यापार मार्गों पर **सराय** और **अतिथिगृहों का निर्माण करवाया था।**
- डाक **प्रणाली** बहुत **कुशल थी** (व्यापारी **सूचना भेज सकते थे**, लंबी दूरी तक **ऋण भेज सकते थे** और **तत्काल आवश्यक सामान भेज सकते थे**)।
- हालाँकि, **गुलामी प्रचलित थी। गुलाम खुलेआम** बाजारों में बेचे जाते थे और **नियमित रूप से उपहार के रूप में दिए जाते थे।**

फ्रांस्वा बर्नियर (मुगल साम्राज्य में यात्राएँ)

परिचय

- फ्रांस्वा बर्नियर का जन्म फ्रांस में हुआ था, वह एक **डॉक्टर, राजनीतिक दार्शनिक** और **इतिहासकार था।**
- वह **दानिशमंद खाँ** (औरंगजेब के दरबार में एक प्रमुख अधिकारी) के संरक्षण में अवसरों की तलाश में **मुगल साम्राज्य** पहुँचा था।
- उसने भारत में **12 वर्ष (1656-1668 ई.)** तक जीवन व्यतीत किया। उसने मुगल **राजकुमार दारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में सेवा की। उसने** अक्सर मुगल सेना के साथ यात्राएँ कीं।
- उसने अपनी पुस्तक **"ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर"** में विस्तृत टिप्पणियाँ और समालोचनात्मक जानकारी प्रदान की।
- उसकी प्रमुख कृति फ्रांस के राजा **लुई चौदहवें को समर्पित थी।**

पूर्व और पश्चिम की तुलना: (बर्नियर की टिप्पणियाँ)

- उसने अपनी यात्रा के अनुभवों का दस्तावेजीकरण किया और भारत की तुलना यूरोप से की, जिसमें उसने भारत को **पीछे पाया।** उसने इसे अक्सर **हीन/पतित पूर्व (Degenerate East) कहा।**
- उसने **महिलाओं के साथ** होने वाले व्यवहार- **सती** प्रथा, कृषि और गैर-कृषि श्रम जैसी व्यावसायिक गतिविधियों में भागीदारी पर प्रकाश डाला। कुल मिलाकर, महिलाएँ अपने घरों के निजी स्थानों तक ही सीमित नहीं थीं।
- मुगल भारत में **भूमि के निजी स्वामित्व की अनुपस्थिति,** मूल रूप से यूरोप से भिन्न थी।
- **प्रभाव**: उसने **मोंटेस्क्यू को प्रभावित किया**, जिसने **प्राच्य निरंकुशता का विचार (Idea of Oriental Despotism) विकसित किया।**

जटिल सामाजिक वास्तविकता

- **कारीगरों द्वारा अपने उत्पादों को बेहतर बनाने के लिए, उनको प्रोत्साहन की कमी थी,** क्योंकि राज्य द्वारा विनियोजित मुनाफा प्रगति में बाधक था।
- विनिर्माण में गिरावट देखने को मिली।
- **एक समृद्ध व्यापारी समुदाय था** जो लंबी दूरी का व्यापार करता था।
- भारत में **कीमती धातुओं** का, निर्यात के बदले बड़ी मात्रा में आयात हुआ।
- **शहरी जनसंख्या:** 17वीं शताब्दी के दौरान, लगभग 15% आबादी शहरों में रहती थी, जो इसी अवधि के दौरान पश्चिमी यूरोप की तुलना में अधिक थी।
- बर्नियर ने मुगल शहरों को **"छावनी शहरों (Camp Towns)" के रूप में वर्णित किया** जो **शाही संरक्षण पर निर्भर थे,** अर्थात जब शाही दरबार शाही संरक्षण से बाहर चला गया तो उनका तेजी से पतन हुआ, जो यह दर्शाता है कि उनके **पास व्यवहार्य सामाजिक और आर्थिक आधार का अभाव था।**
- विभिन्न प्रकार के नगर अस्तित्व में थे, जिनमें **विनिर्माण नगर, व्यापारिक नगर, बंदरगाह नगर, पवित्र केंद्र** और **तीर्थ नगर शामिल थे।**
- **ज्याँ-बैप्टिस्ट टैवर्नियर** (फ्रांस) एक प्रसिद्ध **रत्न व्यापारी और यात्री था।** टैवर्नियर ने 1666 ई. में **टैवर्नियर ब्लू डायमंड** खोजा अथवा खरीदा था, जिसने उसे सबसे प्रसिद्ध बना दिया। उसने **भारतीय हीरों और हीरे की खदानों** के बारे में विस्तृत वर्णन किया। विवरणों से ज्ञात होता है कि उसने लगभग कम छह बार भारत की यात्रा की। **[यूपीएससी 2018]**

अवधि (शताब्दी)	कालावधि	संबंधित शासक	यात्री (देश)
दसवीं	914-928 ई.	राष्ट्रकूट, गुर्जर-प्रतिहार	अल-मसूदी (ईराक)
	973-1048 ई.	महमूद गजनवी	अल-बरूनी (उज्बेकिस्तान)
	940-1019 ई.		फिरदौसी (ईरान) - "पूर्व का होमर"
तेरहवीं	1227 ई.	गुलाम वंश (सल्तनत)	मिन्हाज-उस-सिराज (ईरान)
	1292-93 ई.	पांड्य	मार्को पोलो (इटली)

Search On TG: @apna_pdf

चौदहवीं	1304-77 ई.	मुहम्मद बिन तुगलक	इब्न बतूता (मोरक्को)
पंद्रहवीं	1420 ई.	देवराय द्वितीय (विजयनगर)	निकोलो डी कोंटी (इटली)
	1440 का दशक		अब्दुर रज्जाक समरकंदी (उज्बेकिस्तान)
	1469 ई.	बहमनी	अफानसी निकितिन (रूस)
सोलहवीं	1518 ई.	विजयनगर	डुआर्टे बारबोसा, मृत्यु 1521 ई. (पुर्तगाल)
	1520 ई.	कृष्णदेव राय	डोमिंगो पेस (पुर्तगाल)
	1536-1600 ई.	अकबर	एंटोनियो मोनसेरेट (स्पेन)
सत्रहवीं	1600-67 ई.	शाहजहाँ	कैप्टन विलियम हॉकिंस, पीटर मुंडी (इंग्लैंड)
	1605-89 ई.	शाहजहाँ और औरंगजेब	ज्याँ-बैप्टिस्ट टैवर्नियर (फ्रांस)
	1620-88 ई.	औरंगजेब	फ्रांस्वा बर्नियर (फ्रांस)

❖ ❖ ❖

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH
UPSC FOUNDATION COURSES
Live/Recorded G.S. Classes
CSAT Classes
Daily MCQs + Mains Question
Regular Doubt Sessions
SANKALP 2026
Hinglish / हिन्दी
PRAHAR 2025
Hinglish / हिन्दी
TITAN 2026 / 2025
English
Starts From
₹ 7,999/-
COUPON CODE
PWOIAS500
FOR EXTRA DISCOUNT
9920613613 | pw.live

Search On TG: @apna_pdf

8 परिशिष्ट

मध्यकालीन इतिहास में राजवंशों का कालक्रम

भारत का उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भाग

राजवंश/वंश	मुख्य शासक	समय अवधि	प्रमुख योगदान/महत्व
प्रतिहार	नागभट्ट प्रथम, मिहिर भोज, महेंद्रपाल	8वीं-11वीं शताब्दी ई.पू.	अरब आक्रमणों के विरुद्ध उत्तर भारत की रक्षा की, कला और साहित्य को संरक्षण प्रदान किया और उत्तर भारत में क्षेत्रीय शक्ति को मजबूत किया।
बुन्देलखण्ड के चंदेल	यशोवर्मन, धंग, विद्याधर	9वीं-13वीं शताब्दी ई.पू.	खजुराहो के मंदिरों का निर्माण कराया, मध्य भारत में क्षेत्रीय प्रभुत्व स्थापित किया।
परमार	वाक्पति मुंज, भोज	9वीं-14वीं शताब्दी ई.पू.	मालवा में भोजेश्वर मंदिर जैसे प्रमुख वास्तुशिल्पीय कार्यों का निर्माण किया गया।
ढिल्लिका के तोमर (दिल्ली)	अनंगपाल प्रथम, अनंगपाल द्वितीय	9वीं-12वीं शताब्दी ई.पू.	ढिल्लिका (दिल्ली) शहर की स्थापना की, तथा बाद में दिल्ली सल्तनत की आधारशिला रखी।
शाकंभरी के चाहमान (चौहान)	विग्रहराज चतुर्थ, पृथ्वीराज चौहान	10वीं-12वीं शताब्दी ई.पू.	उत्तर भारत में आक्रमणों का विरोध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। पृथ्वीराज चौहान ने तराइन की लडाई में मुहम्मद गौरी के विरुद्ध युद्ध लड़ा।
त्रिपुरी के कलचुरी	कोकल्ल प्रथम, गांगेयदेव	10वीं-12वीं शताब्दी ई.पू.	मध्य भारत पर नियंत्रण स्थापित हुए कलचुरी शैली के मंदिर वास्तुकला के विकास में योगदान दिया।
गुजरात के चालुक्य (सोलंकी)।	मूलराज, भीम प्रथम, सिद्धराज जयसिम्ह	950-1300 ई.पू.	मोढेरा के सूर्य मंदिर जैसी वास्तुकला को बढ़ावा दिया, महमूद गजनवी का विरोध किया और जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया।
कर्कोट वंश	ललितादित्य मुक्तापीड	7वीं-9वीं शताब्दी ई.पू.	कश्मीर पर शासन किया तथा अपने साम्राज्य का मध्य एशिया तक विस्तार किया, मार्तण्ड सूर्य मंदिर का निर्माण कराया और संस्कृत संस्कृति एवं साहित्य को बढ़ावा दिया।
गहड़वाल वंश	गोविंदचंद्र, जयचंद्र	11वीं-12वीं शताब्दी ई.पू.	चन्दावर के युद्ध (1194) में मुहम्मद गौरी से पराजित होने से पूर्व कन्नौज की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
गुलाम वंश	कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया सुल्तान, बलबन	1206-1290 ई.पू.	दिल्ली सल्तनत की स्थापना की, इंडो-इस्लामिक वास्तुकला (जैसे, कुतुब मीनार) की शुरुआत की, प्रशासनिक सुधार लागू किए और सेना को सुद्रढ़ किया।
खिलजी वंश	जलालुद्दीन खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी	1290-1320 ई.पू.	दिल्ली सल्तनत की सीमाओं का विस्तार किया, मंगोल आक्रमणों का विरोध किया, बाजार नियंत्रण नीतियों को स्थापित किया और वास्तुशिल्प से संबंधित नवाचारों को बढ़ावा दिया।
तुगलक वंश	गयासुद्दीन तुगलक, मुहम्मद बिन तुगलक, फिरोज शाह तुगलक	1320-1414 ई.पू.	विवादास्पद सुधार लागू किए गए (जैसे, मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा राजधानी का स्थानांतरण), नहरों जैसे बुनियादी ढाँचे का विकास किया गया तथा प्रशासनिक सुधारों पर बल दिया गया। नासिरुद्दीन महमूद शाह तुगलक तुगलक वंश का अंतिम सुल्तान था। उसके शासनकाल के दौरान ही तैमूर ने 1398 ई. में भारत पर आक्रमण किया था।

Search On TG: @apna_pdf

सैय्यद वंश	खिज्र खान, मुबारक शाह	1414-1451 ई.पू.	यह अपेक्षाकृत कमजोर राजवंश था, तैमूर साम्राज्य के जागीरदार के रूप में कार्य करता था, उसे लगातार विद्रोहों का सामना करना पड़ा, तथा केंद्रीय सत्ता को बनाये रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा।
लोदी वंश	बहलोल लोदी, सिकंदर लोदी, इब्राहिम लोदी	1451-1526 ई.पू.	यह दिल्ली सल्तनत का अंतिम राजवंश था जिसने प्रशासनिक और सैन्य एकीकरण का प्रयास किया, लेकिन पानीपत के युद्ध (1526) में बाबर से पराजय का सामना करना पड़ा, परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई।
मुगल साम्राज्य	बाबर, अकबर, शाहजहाँ, औरंगजेब	1526-1707 ई.पू.	एक केंद्रीकृत साम्राज्य का विस्तार किया, सांस्कृतिक संश्लेषण को बढ़ावा दिया गया तथा ताजमहल और लाल किले जैसी स्थापत्य कला की विरासत स्थापित हुई।

भारत का पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भाग

राजवंश/वंश	प्रमुख शासक	समय अवधि	प्रमुख योगदान/महत्त्व
शैलोद्भव राजवंश	सैन्यभित माधववर्मन (श्रीनिवास)	6वीं-8वीं शताब्दी ई.	ओडिशा के कुछ हिस्सों पर शासन किया, शैव धर्म को बढ़ावा दिया और भुवनेश्वर मंदिरों सहित प्रारंभिक ओडिशा मंदिर वास्तुकला में योगदान दिया।
कामरूप साम्राज्य (वर्मन राजवंश)	भास्करवर्मन	4वीं-12वीं शताब्दी ई.पू.	असम में केन्द्रित, हूण आक्रमणों का प्रतिरोध किया तथा हर्षवर्धन और चीनी यात्रियों के साथ संबंध स्थापित किये।
पाल राजवंश	गोपाल, धर्मपाल, देवपाल	8वीं-12वीं शताब्दी ई.पू.	विक्रमशिला विश्वविद्यालय (धर्मपाल) की स्थापना की। नालंदा विश्वविद्यालय का पुनरुद्धार, बंगाल और बिहार में बौद्ध धर्म का अत्यधिक प्रभाव।
सेना (पूर्वी बंगाल)	विजयसेन, बल्लालसेन, लक्ष्मणसेन	11वीं-13वीं शताब्दी ई.पू.	बंगाल में पालों को प्रतिस्थापित किया हिंदू धर्म को बढ़ावा दिया, बंगाली संस्कृति और साहित्य में योगदान दिया और ढाकेश्वरी मंदिर का निर्माण कराया। दिल्ली सल्तनत के इख्तियार उद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने 1203-1204 में सेन राजा लक्ष्मण सेन को उनकी राजधानी नवद्वीप में हराया और बंगाल के अधिकांश हिस्से को जीता।
सोमवंशी (ओडिशा)	ययाति प्रथम, उद्योतकेसरी	9वीं-12वीं शताब्दी ई.पू.	भुवनेश्वर में लिंगराज जैसे मंदिरों का निर्माण किया, शैव धर्म को बढ़ावा दिया।
वेंगी के चालुक्य (पूर्वी चालुक्य)	कुब्ज विष्णुवर्धन	7वीं-12वीं शताब्दी ई.पू.	आंध्र के इतिहास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, तेलुगु साहित्य को संरक्षण प्रदान किया और मंदिर वास्तुकला का विकास किया।
कंबोज (बंगाल)	राजेंद्र कंबोज	10वीं शताब्दी ई.पू.	बंगाल पर थोड़े समय के लिए नियंत्रण स्थापित किया क्षेत्रीय शक्तियों को मजबूत किया गया।
पूर्वी गंग	अनंतवर्मन चोडगंग	11वीं-15वीं शताब्दी ई.पू.	कोणार्क में प्रसिद्ध सूर्य मंदिर का निर्माण कराया तथा ओडिशा में जगन्नाथ पूजा को संरक्षण दिया।
अहोम राजवंश	सुकफा, रुद्र सिंहा, लाचित बोड़फुकन	13वीं-19वीं शताब्दी ई.पू.	असम को एकीकृत किया, मुगल आक्रमणों का प्रतिरोध किया और एक अद्वितीय प्रशासनिक प्रणाली और ताई-अहोम संस्कृति विकसित की।
गजपति राजवंश	कपिलेन्द्र देव, पुरूषोत्तम देव	15वीं-16वीं शताब्दी ई.पू.	ओडिशा पर शासन किया, जगन्नाथ पूजा को बढ़ावा एवं संरक्षण प्रदान किया, तथा आंध्र और बंगाल में विस्तार किया।

भारत का मध्य और दक्षिणी भाग

राजवंश/वंश	प्रमुख शासक	समय अवधि	प्रमुख योगदान/महत्त्व
गंग (पश्चिमी गंग)	दुर्विनीत, शिवमार द्वितीय	14वीं-10वीं शताब्दी ई.पू.	इन्होने कर्नाटक पर शासन किया, जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया और श्रवणबेलगोला में गोमतेश्वर प्रतिमा का निर्माण कराया।

Search On TG: @apna_pdf

राष्ट्रकूट	दन्तिदुर्ग, धुर्व तृतीय, गोविंद तृतीय, अमोघवर्ष प्रथम	8वीं-10वीं शताब्दी ई.पू.	दक्कन और उत्तर भारत के कुछ हिस्सों पर प्रभुत्व स्थापित किया, कन्नड़ साहित्य को बढ़ावा दिया, और एलोरा (कृष्ण प्रथम) में कैलाश मंदिर जैसे अद्भुत वास्तुशिल्प का निर्माण किया।
देवगिरि के यादव	भिल्लम पंचम , रामचन्द्र	12वीं-14वीं शताब्दी ई.पू.	देवगिरी में शासन स्थापित किया, अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमणों का विरोध किया, लेकिन अंततः 1307 ई. में दिल्ली सल्तनत की अधीनता स्वीकार ली।
कल्याणी के चालुक्य (परवर्ती)	विक्रमादित्य षष्ठ, सोमेश्वर प्रथम	10वीं-12वीं शताब्दी ई.पू.	इन्होने चालुक्य विरासत को बनाए रखा, मंदिर वास्तुकला में योगदान दिया और चोल आक्रमण का विरोध किया।
चोल (साम्राज्य)	विजयालय, राजराज प्रथम, राजेंद्र प्रथम	9वीं-13वीं शताब्दी ई.पू.	चोलों द्वारा समुद्री और प्रादेशिक स्तर तक अपनी पराकाष्ठा का विस्तार किया गया, बृहदेश्वर मंदिर (राजा राजा प्रथम) का निर्माण कराया, तथा दक्षिण पूर्व एशिया में नौसैनिक अभियान संचालित किये।
पांड्य	मारवर्मन सुंदर पाण्ड्य, जटावर्मन सुंदर पाण्ड्य	छठी-14वीं शताब्दी ई.पू.	इन्होने मंदिर निर्माण (जैसे, मीनाक्षी मंदिर) को बढ़ावा दिया, तमिल साहित्य और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक संबंधों के लिए जाना जाता है।
होयसल	विष्णुवर्धन, बल्लाल द्वितीय	10वीं-14वीं शताब्दी ई.पू.	होयसल शासकों द्वारा हैलेबिदु में होयसलेश्वर मंदिर जैसे अद्भुत वास्तुशिल्प का निर्माण किया गया तथा कन्नड़ साहित्य को बढ़ावा दिया।
काकतीय	रुद्रमा देवी, गणपति देव	12वीं-14वीं शताब्दी ई.पू.	आंध्र प्रदेश पर शासन किया, वारंगल के किले का निर्माण करवाया और दिल्ली सल्तनत के आक्रमणों का मुकाबला किया।
विजयनगर साम्राज्य	हरिहर प्रथम और बुक्का, देवराय द्वितीय, कृष्णदेवराय	14वीं-17वीं शताब्दी ई.पू.	विजयनगर साम्राज्य को कला, साहित्य और वास्तुकला के स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है, हम्पी के स्मारकों का निर्माण किया और बहमनी सल्तनत का विरोध किया।
बहमनी साम्राज्य	अलाउद्दीन हसन बहमन शाह, मुहम्मद गवान	14वीं-16वीं शताब्दी ई.पू.	दक्कन में इंडो-इस्लामिक संस्कृति की स्थापित किया और बाद में दक्कन सल्तनत की नींव रखी।
दक्खिन/दक्कन के सल्तनत	-	16वीं-17वीं शताब्दी ई.पू.	ये बहमनी सल्तनत के उत्तराधिकारी थे, जिन्हें इंडो-इस्लामिक कला और वास्तुकला के लिए जाने जाते हैं।
बीजापुर सल्तनत	इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय, मुहम्मद आदिल शाह	1490-1686 ई.	इन्हें गोल गुम्बज जैसी स्थापत्य कला की उपलब्धियों और दखिनी साहित्य सहित सांस्कृतिक संरक्षण के लिए जाना जाता है.
गोलकुंडा सल्तनत	कुली कुतुब-उल-मुल्क, अब्दुल्ला कुतुब शाह	1518-1687 ई.	यह गोलकुंडा के किले, दक्कन लघु चित्रकला के संरक्षण और हीरा व्यापार के लिए प्रसिद्ध है।
अहमदनगर सल्तनत	मलिक अहमद निज़ाम शाह, चाँद बीबी	1490-1636 ई.	मुगल आक्रमणों का प्रतिरोध करने और इंडो-इस्लामिक वास्तुकला को बसंरक्षण प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
बीदर सल्तनत	कासिम बरीद प्रथम, अमीर बरीद द्वितीय	1492–1619 ई.	इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के रूप में जाने जाना वाला बीदर का किला एक उल्लेखनीय संरचना है।
बरार सल्तनत	फतुल्लाह इमाद-उल-मुल्क, अला-उद-दीन इमाद शाह	1490–1574 ई.	बरार सल्तनत, अहमदनगर सल्तनत में शामिल होने से पूर्व यह कुछ समय तक फली-फूली।
मराठा	संभाजी, शिवाजी	17वीं-19वीं शताब्दी ई.	मराठा साम्राज्य ने एक मजबूत हिंदू साम्राज्य की स्थापना की, युद्ध की गुरिल्ला रणनीति को विकसित किया और मुगल शासन का विरोध किया।
	पेशवा: बालाजी विश्वनाथ, बाजीराव प्रथम, माधवराव प्रथम	18वीं शताब्दी ई.	मराठा साम्राज्य का प्रशासन किया, तथा उसका क्षेत्र विस्तार किया और पानीपत के तृतीय युद्ध (1761) में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Search On TG: @apna_pdf

महत्त्वपूर्ण विद्वान, कवि और नाटककार

कलाकार	राजवंश	संरक्षक/राजा	प्रमुख कार्य/रचना	महत्त्व
माघ	प्रतिहार	नागभट्ट प्रथम (लगभग 750-780 ई.)	शिशुपालवध	इन्होनें महाकाव्य, संस्कृत काव्य की रचना की जो अलंकृत कविता की उत्कृष्ट कृति है।
राजशेखर	गुर्जर-प्रतिहार	महेंद्रपाल प्रथम (लगभग 885-910 ई.) और महिपाल प्रथम (913-944 ई.)	काव्यमीमांसा	यह काव्यशास्त्र का एक ग्रंथ और कवियों और नाटककारों के लिए एक मार्गदर्शिक है।
अमोघवर्ष I	राष्ट्रकुट	अमोघवर्ष प्रथम (लगभग 814-878 ई.)	कविराजमार्ग और रणमालिका	इन्होने कन्नड़ काव्यशास्त्र पर सर्वप्रथम कार्य, जिसने कन्नड़ साहित्य की नींव/आधार का कार्य किया।
स्वयंभू	राष्ट्रकुट	-	-	ये महान अपभ्रंश कवि थे और उनके पुत्र संभवतः राष्ट्रकूट दरबार से संबंधित थे
कविचक्रवर्ती पोन्ना	राष्ट्रकुट	कृष्ण तृतीय (लगभग 939-967 ई.)	शांतिपुराण	ये प्रसिद्ध कन्नड़ कवि थे जो, कन्नड़ साहित्य के तीन "रत्नों" में से एक है।
संध्याकर नंदी	पाल	रामपाल (1077–1130 ई.)	रामचरितम्	यह इतिहास और किंवदंती को एकसाथ कर लिखी गई एक संस्कृत ऐतिहासिक कविता हैजिसमे, पाल राजवंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
राजा भोज	प्रतिहार	राजा भोज (1010-1055 ई.)	सरस्वती-कण्ठाभरण, राजमार्तण्ड	ये एक विद्वान शासक थे जो संस्कृत साहित्य और दर्शन में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं।
सोमदेव	कश्मीर	राजा अनंत (1028-1063 ई.)	कथासरित्सागर	यह भारतीय लोककथाओं, पौराणिक कथाओं और किंवदंतियों का संकलन करने वाला संस्कृत महाकाव्य है।
कल्हण	कश्मीर	राजा जयसिम्हा (1128-1155 ई.)	राजतरंगिणी	इसमें कश्मीर का प्रथम ऐतिहासिक इतिहास/विवरण प्राप्त होता है, जिसमें इतिहास और किंवदंतियों का मिश्रण है।
आदिकवि पम्पा	पश्चिमी चालुक्य	अरिकेसरी द्वितीय (10वीं शताब्दी ई.पू.)	आदि पुराण, विक्रमार्जुन विजया	कन्नड़ साहित्य के अग्रदूत, जिन्हें कन्नड़ का "आदिकवि" (प्रथम कवि) माना जाता है।
कविचक्रवर्ती रन्ना	पश्चिमी चालुक्य	तैलप द्वितीय (10वीं शताब्दी ई.पू.)	गदायुद्ध	प्रसिद्ध कन्नड़ कवि जो अपनी विशद कथा शैली और जैन प्रभावों के लिए जाने जाते हैं।
बिल्हण	पश्चिमी चालुक्य	विक्रमादित्य षष्ठ (1076-1126 ई.)	विक्रमांकदेवचरित	इन रचना में इनके संरक्षकों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है और यह समकालीन इतिहास का दस्तावेजीकरण करने वाली जीवनीपरक काव्य है।
विज्ञानेश्वर	पश्चिमी चालुक्य	विक्रमादित्य षष्ठ (1076-1126 ई.)	मिताक्षरा	यह याज्ञवल्क्य स्मृति पर लिखी गई टीका है जो; हिंदू न्यायशास्त्र का आधारभूत ग्रन्थ है।
नन्नय्य	वेंगी के चालुक्य	राजराजा नरेंद्र (1022-1061 ई.)	-	इन्होनें महाभारत का तेलुगू में अनुवाद प्रारंभ किया, जिससे शास्त्रीय तेलुगू साहित्य का उदय हुआ।
जयदेव	पूर्वी गंग	नरसिम्हदेव प्रथम (1238-1264 ई.)	गीत गोविंद	इनमे संस्कृत में भक्ति काव्य की महिमा/गुणगान किया गया है, वैष्णववाद और भक्ति परंपरा का केन्द्र।
तिक्कन्न	काकतीय	रुद्रमा देवी (1262-1289 ई.)	निर्वचनोत्तर रामायण	इन्होनें महाभारत का तेलुगु में अनुवाद किया, जिससे तेलुगु साहित्य समृद्ध हुआ।
पुरंदरदास	-	-	देवरनाम (भक्ति गीत)	कर्नाटक संगीत के जनक, कन्नड़ और संस्कृत में हजारों भक्ति गीतों की रचना की।

Search on TG: @apna_pdf

कनक दास	विजयनगर	-	नल चरित्र, नारा सिंहस्तव, हरिभक्तिसार और रामधन्य चरित्र	ये भक्ति कवि-संत थे तथा इन्होनें भगवान कृष्ण के प्रति समानता और भक्ति को बढ़ावा देने वाली कन्नड़ में रचनाएँ की।
कृष्णदेव राय	विजयनगर	कृष्णदेव राय (जन्म 1509-1529 ई.)	अमुक्तमाल्यद	इन्होनें प्रशासन और भक्ति पर तेलुगु महाकाव्य की रचना की, जिसमें अंडाल और भगवान रंगनाथ की कहानी को दर्शाया गया है।
मल्लाना	विजयनगर	सलुव नरसिम्हा (जन्म 1485-1491 ई.)	भावचिंता- रत्न, वीर शैवामृत	इन्होने वीरशैववाद पर दार्शनिक कार्य किया, जो विजयनगर साम्राज्य के सामाजिक-धार्मिक ताने-बाने को दर्शाता है।
अल्लसानि पेदन्न	विजयनगर	कृष्णदेव राय (जन्म 1509-1529 ई.)	मनुचरितम्, हरिकथासारम्	ये "आंध्र कविता पितामह" (तेलुगु कविता के जनक) माने जाते हैं; इनकी रचनाएँ नैतिकता और भक्ति पर केंद्रित हैं।
तेनाली रामकृष्ण	विजयनगर	कृष्णदेव राय (जन्म 1509-1529 ई.)	पांडुरंगा महत्यम्, उद्धटार्द्य चरितम्, घटिकाचल महत्यम्	भक्ति के साथ हास्य का मिश्रण किया; अपनी विद्वता और तेलुगु साहित्य में योगदान के लिए जाने जाते हैं।
कविराज माधव कवि	विजयनगर	कृष्णदेव राय (जन्म 1509-1529 ई.)	मदालसा चरित, सत्यवेदु परिणय	ये एक प्रसिद्ध कवि थे, उनकी रचनाएँ शास्त्रीय संस्कृत साहित्यिक परंपराओं को प्रतिबिंबित करती हैं।
क्षेत्रय्या	-	-	पदम (भक्ति गीत)	ये एक भक्ति कवि थे जो भगवान कृष्ण पर केन्द्रित तेलुगु में भक्ति रचनाओं के लिए जाने जाते हैं।
अमीर ख़ुसरो	दिल्ली सल्तनत (खिलजी, तुगलक)	अलाउद्दीन खिलजी, गयासुद्दीन तुगलक	तुगलकनामा, किरान-उस-सादेन	इन्हें "भारत का तोता," कहाँ गया ये एक सूफी कवि थे जिन्होंने फ़ारसी, हिंदवी और अरबी में अपनी रचनाएँ लिखी तथा; गजल और कव्वाली की शुरुआत की।
जियाउद्दीन बरनी	दिल्ली सल्तनत (तुगलक)	-	तारीख-ए-फ़िरोज़ शाही, फ़तवा-ए-जहाँदारी	इतिहासकार और राजनीतिक विचारक, जिन्होंने दिल्ली सल्तनत के इतिहास का वृत्तांत लिखा।
राजा मान सिंह तोमर	दिल्ली सल्तनत (मालवा)	राजा मान सिंह तोमर (1486-1516 ई.)	मानकुतूहल	इन्होनें ध्रुपद संगीत को संरक्षण प्रदान किया इसका दरबार संगीत और कला का केंद्र बन गया।
अबुल फजल	मुगल साम्राज्य (अकबर)	अकबर (1551-1602 ई.)	अकबरनामा, आइन-ए-अकबरी	अकबर के दरबारी इतिहासकार, मुगल प्रशासन और अकबर की नीतियों का वृत्तांत प्रस्तुत किया।
फैजी	मुगल साम्राज्य (अकबर)	अकबर (1547-1595 ई.)	नल-दमयंती, संस्कृत कृतियों का अनुवाद	अकबर के दरबारी कवि, फारसी में अपनी रचनाएँ लिखी; संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद किया।
तानसेन	मुगल साम्राज्य (अकबर)	अकबर (16वीं शताब्दी ई.पू.)	हिंदुस्तानी शास्त्रीय रचनाएँ	अकबर के दरबार में प्रसिद्ध संगीतकार; गायन की ध्रुपद शैली के निर्माण का श्रेय इन्हें ही जाता है।
बदायूनी	मुगल साम्राज्य (अकबर)	अकबर (1540-1615 ई.)	मुन्तख़ाब-उत-तवारीख	अकबर की नीतियों की आलोचना करने वाले इतिहासकार, अबुल फ़ज़ल के कार्यो को वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य प्रदान किया।
अब्दुर रहीम खान-ए-खाना	मुगल साम्राज्य (अकबर)	अकबर (1556-1627 ई.)	रहीम सतसई (हिंदी दोहे)	उन्होंने भक्ति और सूफी परंपराओं का मिश्रण करते हुए हिंदी और फारसी में दोहों की रचना की।
मिर्ज़ा गालिब	मुगल साम्राज्य (परवर्ती काल)	-	दीवान-ए-ग़ालिब	प्रसिद्ध उर्दू और फारसी कवि;

❖ ❖ ❖

Search On TG: @apna_pdf

PW ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

RPP 2025
Rigorous Prelims Test-Series Program

English / हिन्दी | Online / Offline

- Daily Practice & LIVE Video Solutions
- G.S. & CSAT Tests (Sectional + Full Length)
- Mentorship Webinar

Offline ~~₹ 12,999/-~~ ₹ 4,999/- | Online ~~₹ 8,999/-~~ ₹ 3,999/-

FOR EXTRA DISCOUNT » USE COUPON CODE PWOIAS500

9920613613 | pwonlyias.com

Offline Centres: KAROL BAGH | मुखर्जी नगर | PRAYAGRAJ | LUCKNOW | PATNA

Search On TG: @apna_pdf

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH

अन्य पुस्तकें एवं कार्यक्रम

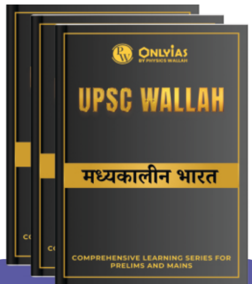

BOOKS

व्यापक कवरेज

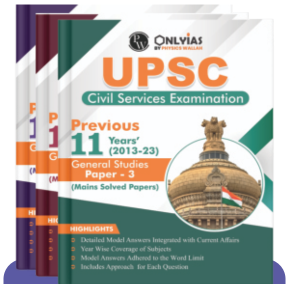

BOOKS

पिछले 11 वर्षों के हल प्रश्न-पत्र (PYQs) (प्रारंभिक+ मुख्य परीक्षा)

FREE MATERIAL

उड़ान (प्रिलिम्स स्टैटिक रिवीज़न)

FREE MATERIAL

उड़ान प्लस 500 (प्रिलिम्स समसामयिकी रिवीज़न)

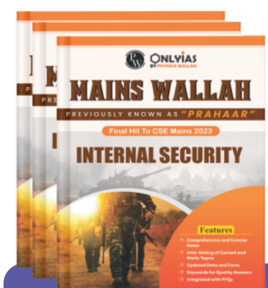

FREE MATERIAL

मेन्स रिवीज़न

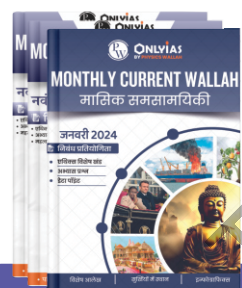

CURRENT AFFAIRS

मासिक समसामयिकी

CURRENT AFFAIRS

मासिक संपादकीय संकलन

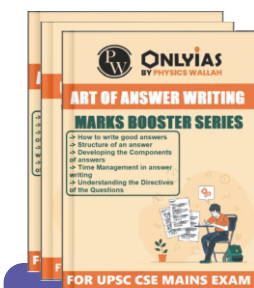

FREE MATERIAL

क्विक रिवीज़न बुकलेट

TEST SERIES

IDMP ईयर लॉन्ग टेस्ट

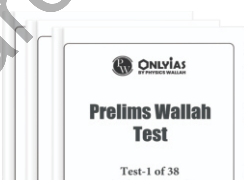

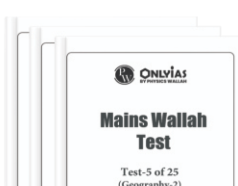

These ebooks are free of cost, Join our telegram channel: @apna_pdf

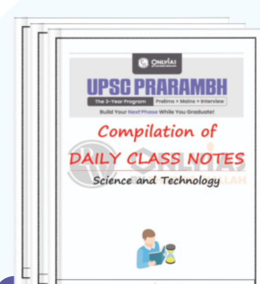

CLASSROOM CONTENT

डेली क्लास नोट्स और अभ्यास प्रश्न

All Content Available in Hindi and English

Karol Bagh, Mukherjee Nagar, Lucknow, Patna

Search on TG: @apna_pdf